महाकवि अकबर

मैं भी हूँ इक सख़ुनवर, आ सुन कलामे-अकबर।
इन मोतियों से आकर, दामन को अपने भर ले॥

संग्रहकर्त्ता

"महाकवि नज़ीर" आदि ग्रन्थों के रचयिता

रघुराजकिशोर "वतन" बी० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

द्वितीय बार] १९३२ [मूल्य १)

भूमिका

न्यायाधीश, नीतिज्ञ, दार्शनिक, विद्वान् और कवि "लस्सान-उल अस्त्र" ख़ानबहादुर सैयद अकबर हुसेन "अकबर" साहित्य-संसार के उन थोड़े से महापुरुषों में हुए हैं जिन्होंने समाज-सेवा के अनुराग में अपना सारा जी[illegible]मातृ-भाषा की सेवा में अर्पण कर दिया।

आपका प्रत्येक पद किसी विशेष लक्ष्य को आगे रख कर लिखा गया है। इससे यह कहना कि अमुक पद अधिक अच्छा है और अमुक कम, आपके पदों के विषय में केवल अपनी विशेष रुचि के अनुसार अपने निजी मत का प्रकट करना है।

इस कारण इस तुच्छ निबन्ध में अधिकांश आपके वही पद दिये गये हैं जो "फुलवाड़ी-रूपी संसार में फूल की भाँति खिल गये और सुगंध की भाँति फैल गये हैं।" यह जानते हुए कि "लोकप्रियता प्रतिभा की कोई परख नहीं है" इन पदों के देने से मेरा उद्देश केवल यह है कि हिन्दी-संसार को आधुनिक उर्दू के प्रसिद्ध सामयिक कवि के सुप्रसिद्ध नवीन रङ्ग का कुछ परिचय मिल जाय।

इन पदों की टिप्पणियों में सामयिक, सामाजिक और अन्य विषयों पर जो मत प्रकट किये गये हैं वे अकबर ही के हैं। इनके समर्थन में कहीं कहीं अन्य कवियों के पद लिख दिये गये हैं। ग्रन्थकर्त्ता का कोई निजी मत नहीं है।

इस ग्रन्थ के पहले भाग—जीवनचरित और काव्य की आलोचना—में विशेष गुण यह है कि इसके अक्षर-अक्षर को महाकवि के सुयोग्य पुत्र सैयद इशरत हुसेन साहब, बी० ए० (कंटाब), डिप्टी-कलक्टर (खीरी), ने पढ़कर अनेक त्रुटियों की पूर्ति करने की कृपा की है। इसके लिए उनको अनेक धन्यवाद दिया जाता है। ग्रंथकर्त्ता इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद के कार्याध्यक्ष बाबू हरिकेशव घोष का भी कृतज्ञ है जिनकी कृपा से यह ग्रन्थ इस सुन्दर आकार में प्रकाशित हुआ। अन्त में यह लिखना अनुचित न होगा कि इसके लिखने में ग्रन्थकर्त्ता को अपने परमपूज्य पिता साहित्यरत्न लाला सीताराम, बी० ए०, से बहुत सहायता मिली है।

२०३ मुट्ठीगंज, प्रयाग।
वैशाख बदी ७—१९८१।

रघुराजकिशोर

विषय-सूची

महाकवि अकबर

जीवन-चरित और काव्य की आलोचना

एक बार अकबर बादशाह के आगे मियाँ तानसेन ने सूर-दासजी का यह पद गाया—

"जसुदा बार बार यह भाखै।
है कोइ ब्रज में हितू हमारो चलत गोपालहि राखै॥"

बादशाह ने पूछा—इसका अर्थ क्या है?

मियाँ ने कहा—यशोदाजी घड़ी-घड़ी यह कहती हैं कि भला इस ब्रज में हमारा कोई ऐसा भी मित्र है जो गोपाल को जाने से रोकै?

मियाँ गा-बजा कर चले गये। उनके पीछे बीरबल आये। बादशाह ने उनसे भी इसका अर्थ पूछा।

बीरबल बोले—धर्मावतार बार का अर्थ द्वार है। इसलिए पद का भाव यह है कि यशोदाजी द्वारे द्वारे कहती फिरती हैं कि ब्रज में हमारा कौन मित्र है जो गोपाल को रोकै?

जब राजा टोडरमल दरबार में आये तो बादशाह ने उनसे भी पद का भावार्थ पूछा।

राजा साहब ने कहा—बार का अर्थ जल भी है और द्वार भी। इस पद में क्रम से दोनों अर्थ लेने चाहिए। इसलिए बारबार का अर्थ हुआ "जल का द्वार" अर्थात् घाट। पद का तात्पर्य यह है कि यशोदाजी घाट-घाट कहती फिरती हैं।

मौलाना फ़ैज़ी ने भी आकर पद का अर्थ लगाया। बार-बार का अर्थ तो राजा टोडरमल की भाँति पानी का द्वार ही रक्खा, पर पानी से आँसू का मतलब निकाल बार-बार का अर्थ आँसू का द्वार अर्थात् आँख बतलाया। उनके अनुसार पद का अर्थ हुआ—यशोदाजी रो रो कर कहती हैं।

जब नवाब ख़ानख़ाना आये और उनसे भी पद का अर्थ बादशाह ने पूछा तो उन्होंने पहले यह प्रश्न किया कि "महाराज! इस पद का अर्थ किसी और ने भी किया है?" बादशाह ने उत्तर में जो जो अर्थ सुने थे, सब कह सुनाये।

ख़ानख़ाना ने सब बातें सुनकर निवेदन किया कि यह सब अर्थ तो लोगों ने अपने-अपने मन के भाव के अनुसार बतलाये हैं। तानसेन गानेवाला है। एक ही शब्द को घड़ी-घड़ी कहता है। उसने सोचा कि यशोदा भी इसी भाँति घड़ी-घड़ी रटती होंगी। बीरबल ब्राह्मण हैं। द्वारे द्वारे फिरनेवाले ठहरे। इनको यही सूझी कि यशोदा द्वारे-द्वारे कहती फिरती होंगी। टोडरमल मुतसद्दी हैं। वह यही समझे कि यशोदा घाट-घाट कहती हैं। फ़ैज़ी कवि ठहरे, इन्हें रोने के सिवा और कुछ सूझता ही नहीं। इसलिए इन्होंने बार-बार से रोने का अर्थ निकाला।

फ़ैज़ी का उत्तर न केवल फ़ैज़ी वरन् समस्त फ़ारसी-कवियों की मानसिक वृत्ति का दर्शन है। हिन्दी कविता में रोना केवल प्रोषित तथा प्रवत्स्यत्पतिका ही पर समाप्त हो जाता है परन्तु फ़ारसी और उर्दू, जिनमें अधिकांश शृङ्गार-रस ही का प्रयोग किया जाता है, कवियों को विरह इतना सताता है कि उन्हें रोने से बहुत कम छुट्टी मिलती है। यह प्रथा सदा से चली आ रही है।

आज-कल तो उर्दू-संसार में आँसुओं की कुछ ऐसी वर्षा हो रही है कि जिधर देखिए उधर कवि-रूपी पतंगों के झुंड के झुंड उठते दिखाई देते हैं। जिस उठल्लू को थोड़ी-बहुत तुक-बंदी आ गई उसने एक तख़ल्लुस (उपनाम) रख लिया और माशूक़ के दीपक-रूपी मुखड़े के चारों ओर मँड़राने लगा। परन्तु इनका आगमन इस महफ़िल के सदस्यों के आनन्द में विघ्न डालने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करता। कोई उनके शराब के प्याले में कूद पड़ता है तो कोई उड़ कर उनके मुँह पर बैठ जाता है। इन पतंगों की गणना महफ़िल के सदस्यों में नहीं की जा सकती और न इनसे उर्दू-साहित्य को कोई लाभ ही पहुँच सकता है। फ़ारसी और पुराने उर्दू-कवियों का अनुकरण करते-करते इनकी विचार-शक्ति शून्य हो जाती है और नवीन भावों का वर्णन इनकी सामर्थ्य से बाहर हो जाता है। उर्दू-साहित्य में ऐसे लोगों की संख्या, जिनको वास्तव में कवि कहा जा सके, बहुत थोड़ी है।

आधुनिक उर्दू कवियों में ख़ान बहादुर सैयद अकबरहुसेन ही एक ऐसे कवि हुए जिन्होंने इस शोक-सभा को एक बार हँसा दिया और ऐसा हँसाया कि देखनेवाले दंग रह गये। नज़ीर और इन्शा के बाद यही एक ऐसे कवि हुए जिन्होंने पुराने बन्धनों

को तोड़ कर शृङ्गार-रस के अतिरिक्त और भी रसों का प्रयोग करना आरम्भ किया। मनुष्य-जीवन की साधारण घटनाओं और समाज, राजनीति और दर्शन के पेचदार प्रश्नों का जिस सरलता के साथ इन्होंने हास्य-रस के चुटकुलों में वर्णन कर दिया है उसके लिए औरों को बड़े-बड़े निबन्ध लिखने की आवश्यकता होती है।

मेरा यह शेर अकबर एक दफ़्तर है मआनी का।
कोई समझे न समझे हम तो सब कुछ कह गुज़रते हैं॥

(भावार्थ—हे अकबर ! मेरा यह पद गूढ़ मर्मों की एक पुस्तक है। चाहे कोई समझे अथवा न समझे, हम तो सब कुछ कह डालते हैं।)

सैयद अकबरहुसेन का जन्म नवम्बर सन् १८४६ ई० में क़सबा बारा, ज़िला इलाहाबाद में हुआ, जहाँ आपके चचा तहसीलदार थे। बाल्य-अवस्था ही से आपको कविता करने की रुचि थी और जैसे-जैसे आयु बढ़ती गई आपकी रुचि भी बढ़ती गई। प्रयाग के एक उर्दू-कवि वहीद को आपने अपना उस्ताद बनाया। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात।" गुरु को आरम्भ ही में अपने योग्य शिष्य की प्रतिभा का परिचय मिल गया और उसने .खूब जी लगा कर शिक्षा दी। पहली ग़ज़ल, जो आपने मुशायरे में पढ़ी, उसके कुछ पद यहाँ पाठकों के मनोविनोद के लिए दिये जाते हैं। इस समय आपकी अवस्था केवल इक्कीस वर्ष की थी और इसी समय से जनता को आपकी प्रतिभा का परिचय मिला।—

समझे वही उसको जो हो दीवाना किसी का।
अकबर ये ग़ज़ल मेरी है अफ़साना किसी का॥ १॥

अल्लाह ने दी है जो तुम्हें चाँद सी सूरत।
रोशन भी करो जाके सियह-ख़ाना किसी का ॥२॥*

बाईस वर्ष की अवस्था के दो पद देखिए—

आप से आते हो कब उश्शाक़े-मुज़्तर की तरफ़।
जज़्बे-दिल यह तुमको लाया है मेरे घर की तरफ़ ॥१॥†

पूछता है जब कोई उनसे किसे है तुमसे इश्क़।
देखते हैं प्यार से शरमा के अकबर की तरफ़ ॥२॥

इसी अवस्था की एक और ग़ज़ल के कुछ पद देखिए—

१ लिखा हुआ है जो रोना मेरे मुक़द्दर में।
ख़याल तक नहीं जाता कभी हँसी की तरफ़ ॥१॥

क़बूल कीजिए लिल्लाह तोहफ़ये-दिल को।
नज़र न कीजिए इसकी शिकस्तगी की तरफ़ ॥२॥

ग़रीब-ख़ाने में लिल्लाह दो घड़ी बैठो।
बहुत दिनों में तुम आये हो इस गली की तरफ़ ॥३॥

---

* इन पदों का अर्थ आगे दिया गया है।

† अपने व्याकुल प्रेमियों की ओर तुम अपने आपसे कब आते हो। यह तो मेरे हृदय की आकर्षणशक्ति है जो तुमको मेरे घर की ओर खींच लाई है। दूसरे पद का अर्थ स्पष्ट है।

१ मेरे भाग्य में रोना बदा है इस कारण हँसने की ओर मेरा ध्यान तक नहीं जाता ॥१॥ ईश्वर के लिए दिल की भेंट ले लीजिए। इसके टूटेपन पर न जाइए क्योंकि यह आपके प्रेम में ही टूटा है। इस कारण आपके लिए अधिक उपयोगी होगा ॥२॥ ईश्वर के लिए दो घड़ी तो इस निर्धन के घर में बैठो। इस गली की ओर तुम्हारा आगमन बहुत दिनों में हुआ है ॥३॥

ज़रा सी देर ही हो जायगी तो क्या होगा ?
घड़ी घड़ी न उठाओ नज़र घड़ी की तरफ़ ॥४॥
जो घर में पूछे कोई, ख़ौफ़ क्या है, कह देना।
चले गये थे टहलते हुए किसी की तरफ़ ॥ ५ ॥

इन पदों से स्पष्ट है कि आरम्भ में आप भी अन्य उर्दू-कवियों की भाँति पुराने और विशेष कर लखनऊ के ढङ्ग की कविता किया करते थे परन्तु आप भली भाँति जानते थे कि मनो-विनोद के अतिरिक्त इससे और कोई लाभ नहीं;—

१ ख़ुद समझता हूँ कि रोने से भला क्या हासिल।
पर करूँ क्या यूँही तसकीन ज़रा होती है ॥

यह आपकी कविता का पहला काल था। आरम्भ में जीविका-निर्वाह के लिए आपको छोटी-छोटी नौकरियाँ करनी पड़ीं। छोटी नौकरियों में अधिकांश छोटे लोगों की सङ्गत करनी पड़ती है जिससे बहुधा मनुष्य की विचारशक्ति भी ओछी पड़ जाती है और नाना प्रकार के नित नये कष्ट उठाने पड़ते हैं क्योंकि यदि कोई योग्य पुरुष अभाग्यवश किसी नीचे पद पर नियुक्त हो जाता है तो उसके सहकारी सदा ईर्ष्या के कारण उसको नीचा दिखाने का प्रयत्न किया करते हैं। एक ओर दफ़्तर की पिसाई और दूसरी ओर ईर्ष्या की अग्नि बड़ी-बड़ी

यदि तुम्हें तनिक देर ही हो जायगी तो क्या हानि होगी ? घड़ी-घड़ी घड़ी की ओर न देखो ॥४॥ यदि कोई घर में कुछ कहे तो डर काहे का है। कह देना, योंही किसी ओर टहलते चले गये थे ॥५॥

१ मैं स्वयं जानता हूँ कि रोने से कोई लाभ नहीं परन्तु करूँ तो क्या करूँ। रो लेने ही से आत्मा को कुछ शान्ति मिलती है।

सोने की प्रतिमाओं को राख बना देती है। परन्तु अकबर की प्रतिभा पर इसका प्रभाव उलटा ही पड़ा। एक स्थान पर ठीक कहा है—

१ जफ़ायें झेल कर तासीरे-उल्फ़त हम दिखाते हैं।
हिना की तरह जब पिस लेते हैं तब रंग लाते हैं॥

आपने धीरे-धीरे अपनी योग्यता से बड़े-बड़े पद प्राप्त किये। सन् १८६७ ई० में क़ानून का नीचा दरजा पास करने के बाद सन् १८६९ ई० में आप नायब तहसीलदार नियुक्त हुए और इसके एक साल बाद ही प्रयाग-हाईकोर्ट में "मिसिलख़ान" का पद प्राप्त किया। सन् १८७३ ई० में प्रयाग-हाईकोर्ट की वकालत की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। कुछ दिन वकालत की। सन् १८८० ई० में मुंसिफ़ हुए। अँगरेज़ी घर पर पढ़ी परन्तु क़ानून के काम में ऐसी योग्यता दिखाई कि कुछ ही दिनों में सबजजी का पद प्राप्त किया; और चार ही पाँच वर्ष में आपको सेशन जज बनाने का विचार किया जाने लगा। वर्षों तक आपने क़ायम मुक़ाम सेशन जजी भी की और अपना काम इस योग्यता के साथ किया कि सरकार ने सन् १८९८ ई० में आपको "ख़ानबहादुर" की पदवी दी। कुछ दिनों में आप प्रयाग-विश्वविद्यालय के फेलो भी निर्वाचित हुए और पेंशन लेने पर प्रयाग के ख़फ़ीफ़ा अदालत के हॉल में आपका चित्र बड़े सम्मान के साथ लगाया गया। परन्तु इन बातों से आपके दुखे हुए हृदय को शान्ति नहीं मिली। क्योंकि—

नेशनल[२] वक़अत के गुम होने का है अकबर को ग़म।
आफ़िशल[३] इज्ज़त का उसको कुछ मज़ा मिलता नहीं॥

---

१ हम अपने प्रेम का प्रभाव कष्ट उठाने के उपरान्त दिखाते हैं क्योंकि हमारा हाल मेंहदी की भांति है, जो पिसने पर रङ्ग लाती है।

२ जातीय। ३ सरकारी।

सरकारी नौकरी का बहुत सा भाग अलीगढ़ में बीता। अलीगढ़ उस समय सर सैयद अहमद और उनके अनुयायियों का मुख्य स्थान होने के कारण भारत के अँगरज़ी पढ़े मुसलमानों की नवीन सभ्यता का केन्द्र हो रहा था। अकबर ने अपनी तीव्र दृष्टि से देख लिया कि जिस सभ्यता की नींव अलीगढ़ में पड़ रही है उस पर मुसलमानों की जातीय उन्नति का मन्दिर कभी नहीं टिक सकता।

हाज़िर हुआ मैं ख़िदमते-सैयद में एक रात।
अफ़सोस है कि हो न सकी कुछ ज़ियादा बात॥
बोले कि तुझको दीन की इसलाह फ़र्ज़ है।
मैं चल दिया यह कहके कि आदाब अर्ज़ है॥

एक रात मैं सर सैयद की सेवा में उपस्थित हुआ परन्तु शोक है कि उनसे कुछ अधिक बात न हो सकी। जब वे बोले कि धर्म का सुधार करना तेरा कर्तव्य है तो मैं सलाम करके उठा और चल दिया। क्योंकि मैं उनके सुधार-सम्बन्धी विचारों से सहमत नहीं था। अकबर का विचार था कि—

बेशक नई रोशनी से बेहतर है कहीं।
इन्सान के लिए किरिश्चिन[1] हो जाना॥

यह देखते ही अकबर की कविता का एक नया काल आरम्भ हुआ। अब आपके गद्य और पद्य लेखों का उद्देश्य केवल मनो-विनोद अथवा साहित्य-सेवा न रहा वरन् समाजसेवा और विशेष कर नई सभ्यता की निन्दा और मुसलमानों का ध्यान अपनी प्राचीन सभ्यता की ओर आकर्षित कराना हो गया।

---

१ ईसाई।

मौत से डरते हैं अब पहले ये तालीम[1] न थी।
कुछ नहीं आता था अल्लाह से डरने के सिवा॥

यह अकबर की कविता का दूसरा काल था। सौभाग्यवश अकबर को संगति भी ऐसी मिल गई जिसमें एक से एक प्रकाण्ड विद्वान् मौजूद थे। उन दिनों लखनऊ के प्रसिद्ध समाचारपत्र "अवध पञ्च" की धूम मची हुई थी। "अवध पञ्च" सन् १८७६ ई० में प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। समय के प्रायः सभी सुयोग्य लेखक इसमें निबन्ध लिखा करते थे। मुंशी सज्जादहुसेन, मुंशी ज्वालाप्रसाद बर्क़, सितमज़रीफ़, शौक़ इत्यादि जिस पत्र के संचालकों में थे ऐसे पत्र का क्या कहना। समाज, विज्ञान, दर्शन और राजनीति इत्यादि के ऐसे-ऐसे गूढ़ मर्मों को ये लोग हास्यरस के चुटकुलों में इस सरलता के साथ उड़ा देते थे कि देखनेवाले दाँतों तले उँगलियाँ दबा कर रह जाते थे। अकबर भी इसी रंग में रँग गये और पुराने बन्धनों को तोड़ कर एक नये रंग का आविष्कार किया। सन् १८७७ ई० में आपकी जो चिट्ठी "पञ्च" की प्रशंसा में प्रकाशित हुई थी उसके कुछ पद नीचे दिये जाते हैं—

[2] ऐ गौहरे-मख़ज़ने ज़राफ़त। वै जौहरे-मादने लताफ़त॥१॥
ऐ फ़ख़्-दिहे ज़बाने-उर्दू। वै औज-दिहे निशाने-उर्दू॥२॥
दिन रात यही हैं अब तो चर्चे। परचाते हैं दिल को इसके पर्चे॥३॥

---

१ तालीम = शिक्षा।

२ हे हास्य के कोष के मोती! हे माधुर्य की खान के रत्न॥१॥ हे उर्दू भाषा की महिमा बढ़ानेवाले! हे उर्दू के झण्डे के ऊँचा करनेवाले॥२॥ अब तो दिन-रात लोगों में यही बातचीत होती है कि इसके

बिगड़े हुए बन गये हँसी में । हिकमत है तो ऐसी दिल्लगी में ॥४॥
एक नूर है मेहरे-लखनऊ का । अख़्तर है सिपहेरे-लखनऊ का ॥५॥
कहना इसे शमअ कब रवा है । औसाफ़ में शमअ से सिवा है ॥६॥
वह चेहरा-नुमाये बज़्मे सूरत । यह परदःबर अफ़गने हक़ीक़त ॥७॥
हर गाम प है चमन हज़ारों । इक इक में गुले-सुख़न हज़ारों ॥८॥
हर बर्गे-गुले सुख़न में सौ रङ्ग । हर रंग में लाख लाख नैरंग ॥९॥
अहबाब जो इसके हैं मुआविन । आली मनेशान नेक बातिन ॥१०॥
ज़र्राफ़ो मुसन्निफ़े लतायफ़ । तब्बाओ मुसव्विरे क़वायफ़ ॥११॥
रंगी तबई से गुल खिलाये । चश्मे बदबीं को ख़ूँ रुलाये ॥१२॥
बेसाख़्ता बोल उठे सुख़नवर । अल्लाह रे तब्बो फ़िक्रे अकबर ॥१३॥

पत्र हृदय को मोहित करते हैं ॥३॥ बहुत से बिगड़े लोग इसकी ठठोल-भरी बातें सुनकर सँभल गये। ऐसी ही दिल्लगी में बुद्धिमानी होती है ॥४॥ यह लखनऊ के सूर्य की एक ज्योति है । यह लखनऊ के आकाश का सूर्य्य है ॥५॥ इसको दीपक कहना कब ठीक है ? यह गुणों में दीपक से अधिक है ॥६॥ दीपक केवल ऊपरी रूप पर प्रकाश डालता है परन्तु यह पत्र वास्तविक तत्वों का दर्शन कराता है ॥७॥ इसके पद-पद पर सहस्रों फुलवाड़ियाँ हैं और प्रत्येक फुलवाड़ी में सहस्रों कविता के फूल हैं ॥८॥ और प्रत्येक फूल की पँखड़ी में सौ-सौ रंग हैं और प्रत्येक रंग में लाख-लाख नई बातें हैं ॥९॥ जो मित्रवर्ग इसके संचालक हैं वह ऊँचे विचारवाले और स्वच्छ हृदयवाले हैं ॥१०॥ वे लोग हास्यरस का प्रयोग करते हैं और ठठोल-भरी कहानियाँ लिखते हैं ॥११॥ वे सहृदय लोग हैं और घटनाओं का चित्र खींच देते हैं ॥१२॥ वे अपने रंगीन भावों से गुल खिलाते हैं और समालोचक की आँख से लोहू रुलवाते हैं ॥१३॥ इसको पढ़ कर कवि लोग बेधड़क बोल उठे कि अकबर की विचार-शक्ति धन्य है ।

अकबर के "अवध पञ्च" के लेखों में बहुत सी कवितायें ऐसी हैं जो आज भी उतनी ही रुचि से पढ़ी जाती हैं जितनी रुचि से उन दिनों पढ़ी जाती थीं। इनमें से अधिकांश क्या प्रायः सभी सामयिक विषयों पर हैं। सामयिक विषयों पर लेख कैसे ही रोचक क्यों न हों, समय बीत जाने पर अपनी लोकप्रियता बहुत कुछ खो देते हैं परन्तु अकबर के बहुत से लेखों में यह बात नहीं। कारण यह कि:—

क्योंकर न शेरे-अकबर आयें पसन्द सबको।
यह रंग ही नया है कूचा ही दूसरा है॥

कुछ दिन पीछे मुंशी सज्जादहुसेन की अकाल-मृत्यु हो जाने से अवधपञ्च बन्द हो गया और वह सभा टूट गई परन्तु अकबर के उच्च विचारों के हास्यजनक उद्गारों ने उस सभा का काम बराबर उसी तरह जारी रक्खा जिससे कुछ ही काल में उर्दू-संसार ने आपको अपने रङ्ग का उस्ताद मान कर लस्सान-उल-अस्र (सामयिक कवि) की पदवी दी।

सन् १९०३ ई० में आपने जज-ख़फ़ीफ़ा के पद से पेंशन ले ली और अपने बड़े लड़के सैयद इशरतहुसेन बी० ए० (कैंटाब) डिपटी कलक्टर के नाम पर चौक के समीप एक कोठी "इशरत मंज़िल" बनवा कर आप प्रयाग-वास करने लगे। लोगों का अनुमान था कि अब आपका समय आनन्द से व्यतीत होता होगा परन्तु कालचक्र ने ऐसा न होने दिया। सात वर्ष तक मोतियाबिन्द से आप पीड़ित रहे। दिसम्बर सन् १९०९ ई० में कलकत्ते में नश्तर लगवाया जिससे आपकी आँखों में फिर से ज्योति आगई। इस हर्ष के अवसर पर आपने डाक्टर के धन्यवाद में एक कविता लिखी, जिसके दो पद ये हैं—

१ हफ़्त साला था मरज़ दम भर में ज़ायल हो गया।
आँख रौशन हो गई जाता रहा सारा हिजाब॥
पाँच ही दिन में न पट्टी थी न बिस्तर की वो क़ैद।
हुस्ने-कलकत्ता था और मेरी निगाहे इन्तख़ाब॥

परन्तु यह सुख आपको अधिक काल तक शान्तिपूर्वक भोगना बदा न था। इसके कोई दस ही महीने बाद २४ अक्टूबर सन् १९१० ई० को आपकी प्रिय पत्नी का परलोकवास हो गया और इसके कुछ ही काल पीछे आपके जवान बेटे हाशिम की भी अकाल-मृत्यु हो गई। यद्यपि आपने इन सब विपदाओं को बुढ़ापे में बड़े धीर हृदय के साथ सहा परन्तु अब आपका हृदय इस असार संसार की ओर से बिलकुल विरक्त हो गया।

चल बसे याराने-हमदम उठ गये प्यारे रफ़ीक़।
फ़िक्र कर उक़बा[२] की कुछ अकबर की दुनिया हो चुकी॥

अब आपकी कविता में वैराग्य और शान्तरस की झलक दिखाई देने लगी। यह आपकी कविता का तीसरा काल था। इस काल के पद अधिकांश वैराग्य और शान्तरस के भावों से परिपूर्ण हैं।

३ इक नज़र का है तअल्लुक़ इस जहाँ से होश को।
सबका सब इक जुम्बिशे मिज़गाँ में पिनहाँ हो गया॥१॥

---

१ सात वर्ष का रोग था दम भर में चला गया। आँखों में ज्योति आ गई और सारा परदा उठ गया। पांच ही दिनों में पट्टी उतर गई और बिछौना भी छूट गया। एक ओर कलकत्ते का सौन्दर्य था और दूसरी ओर मेरी निर्वाचन करनेवाली आँखें।

२ उक़बा = परलोक। ३ संसार और जीव का सम्बन्ध केवल

तर्के दुनिया से हुई जमईयते-ख़ातिर नसीब ।
हाल मेरा गो कि ज़ाहिर में परीशां हो गया ।।२।।

परन्तु अकबर की प्राकृतिक चञ्चलता ने कभी आपका साथ न छोड़ा।

१ क़ैस का ज़िक्र मेरे शाने-जुनूँ के आगे ।
अगले वक्तों का कोई बादिया-पैमा होगा ।।

२ जो मिल गया सो खाना दाता का नाम जपना ।
इसके सिवा बताऊँ क्या तुमसे काम अपना ।।१।।
ऐ बरहमन हमारा तेरा है एक आलम ।
हम ख़्वाब देखते हैं तू देखता है सपना ।।२।।
बे-इश्क़ की जवानी कटनी नहीं मुनासिब ।
क्योंकर कहूँ कि अच्छा है जेठ का न तपना ।।३।।
है ग़ज़ब जल्व दैरे-फ़ानी का ।
पूछना क्या है उसके बानी का ।।१।।
इंजन आया निकल गया ज़न से ।
सुन लिया नाम आग-पानी का ।।२।।

पल-मात्र का है। यह सब एक पल में आँखों से ओझल हो जाता है ।।१।। संसार परित्याग करने से आत्मा को शान्ति मिल गई यद्यपि ऊपरी दशा देखनेवालों को यह जान पड़ा कि मेरी अवस्था बिगड़ गई है।

१ क़ैस अर्थात् मजनूँ के प्रेममय उन्माद की तुलना मेरे उन्माद से कब की जा सकती है। वह तो लैला के प्रेम में पागल होकर जङ्गल जङ्गल मारा मारा फिरता था। उहँ, प्राचीन काल का कोई जङ्गलों में फिरनेवाला मनुष्य होगा।

२ पहले पद का अर्थ स्पष्ट है। दूसरे पद का आशय यह है कि हिन्दू मुसलमान दोनों की दशा एक सी है। सृष्टि दोनों के लिए स्वप्न के समान है। केवल कहने का अन्तर है।

बात इतनी और इस प यह तूमार !
.गुल है यूरप की जाँ-फ़िशानी का ॥३॥

जैसा कि ऊपर की बातों से प्रकट है, अकबर की कविता के तीन काल हुए। पहले काल की कविता में अधिकांश शृङ्गार-रस है। इसका उद्देश्य केवल मनोविनोद और साहित्य-सेवा था। दूसरे काल की कविता अधिकांश हास्यरस की है। इसका उद्देश्य समाज-सेवा और विशेष कर नवीन सभ्यता के दोषों को दिखाना और मुसलमानों का ध्यान अपनी प्राचीन सभ्यता की ओर आकर्षित करना हो गया। हास्यरस के प्रयोजन का यह कारण था कि व्यङ्ग सुननेवाले के हृदय पर मीठी छुरी का काम करता है और इसी कारण इसका जो प्रभाव पड़ता है वह बड़े बड़े धर्मशिक्षकों के व्याख्यानों का नहीं पड़ सकता। क्योंकि—

१ बारे-ख़ातिर हो तो वाइज़ का भी इरशाद बुरा।
दिल को भा जाय तो अकबर की .खुराफ़ात अच्छी॥

दूसरा उद्देश्य यह था कि—

२ कलई भी रियाकार की खुलती रहे अकबर।
तानों में मगर तर्ज़-मेहज़्ज़ब भी न छूटे॥

तीसरे काल की कविता में अधिकांश वैराग्य अथवा शान्त-रस का वर्णन है। यह एक टूटे हुए दिल का उद्गार है। इसका

---

१ यदि जी को न रुचे तो धर्मशिक्षक का व्याख्यान भी बुरा और यदि रुचै तो अकबर का अनाप-शनाप बकना भी अच्छा।

२ हे अकबर! कपटी की पोल भी खुलती रहे परन्तु साथ ही साथ व्यङ्ग शब्दों से किसी प्रकार का नीच भाव न प्रकट हो। ज़ौक़ का यह पद देखिए:—नाज़ुक कलामियाँ मेरी तोड़ें अदू का सिर।
मैं वह बला हूँ शीशे से पत्थर को तोड़ दूँ॥

उद्देश्य अधिकांश अपने अस्थिर चित्त को शान्ति देना था। एक स्थान पर ठीक कहा है—

१ तसव्वुफ़ के बयां को होश ने रूह-आश्ना पाया।
मआनी कुछ न समझा पर क़यामत का मज़ा पाया॥

अकबर की कविता में बहुत सी विशेषतायें हैं परन्तु उनका सम्पूर्ण वर्णन इस छोटे निबन्ध में करना सम्भव नहीं। इस कारण कुछ मुख्य-मुख्य बातें हो यहाँ दी जाती हैं। एक सबसे बड़ा विशेषता यह है कि बहुधा उर्दू-कवियों की भाँति अकबर ने केवल शृंगाररस के अश्लील भावों अथवा त्रुटियों को छिपाने के लिए शान्तरस की शरण नहीं ली और न उनको कभी यह अभिलाषा थी कि कोई उनको बड़ा पहुँचा हुआ फ़क़ीर समझे,—

२ जो दिल में आये करूँ गुज़ारिश बग़ैर पेचीदगी व साज़िश।
फ़क़ीर होने की है न ख़्वाहिश न चाहता हूँ अदीब होना॥

जहाँ कहीं शान्तरस-सम्बन्धी कोई शेर कहा है, ऐसा जान पड़ता है कि स्वयम् अपने अनुभव का वर्णन कर रहे हैं। आगे की ग़ज़ल देखिए,—

१ शान्तरस से जीव-परिचित जान पड़ा। यदि इसका आशय कुछ समझ में न आया तब भी उसके सुनने से अत्यन्त आनन्द मिला।

२ मेरी एक-मात्र अभिलाषा यही है कि जो जी में आवे वह स्पष्ट शब्दों में कह दूँ। ऐसा करने से न मेरी इच्छा यह है कि कोई मुझे बड़ा पहुँचा हुआ फ़क़ीर समझे और न मैं यही चाहता हूँ कि मेरी गणना विद्वानों में की जाय।

१ अजल से वह डरें जीने को जो अच्छा समझते हैं।
यहाँ हम चार दिन की ज़िन्दगी को क्या समझते हैं ॥ १ ॥
निसार अपने तसव्वुर के कि जिसके फ़ैज़ से हरदम।
जो नापैदा है नज़रों से उसे पैदा समझते हैं ॥ २ ॥
उसे हम आख़िरत कहते हैं जो मशग़ूले-हक़ रक्खे।
ख़ुदा से जो करे ग़ाफ़िल उसे दुनिया समझते हैं ॥ ३ ॥
निगाहों के इशारे से जो हुक्म उठने का होता है।
मुझे भी आप क्या दर्दे-दिले-शैदा समझते हैं ॥ ४ ॥
मैं अपने नक़्दे-दिल से जिन्से-उल्फ़त मोल लेता हूँ।
अतिब्बा को ज़रा देखो इसे सौदा समझते हैं ॥ ५ ॥

---

१ मृत्यु से वे डरें जो जीवन को अच्छा समझते हैं। हम क्यों डरें ? हम तो जानते हैं कि यह चार दिन का जीवन कुछ नहीं है ॥१॥ हम अपनी कल्पना-शक्ति के अत्यन्त अनुगृहीत हैं क्योंकि इसकी कृपा से हम उस (ईश्वर) को प्रत्यक्ष जानते हैं जिसका दर्शन हमारी आँखों की शक्ति से बाहर है। आतिश का यह पद देखिए—

" नहीं देखा है लेकिन तुझको पहचाना है आतिश ने।
बजा है ऐ सनम जो तुझको दावा है ख़ुदाई का ॥ २ ॥

जो ईश्वर के ध्यान में लीन रक्खे उसको परलोक अथवा भक्ति और जो ईश्वर की ओर ध्यान न जाने दे उसे संसार अथवा माया समझते हैं ॥ ३ ॥ मुझे आप आंखों के इशारे से अपनी महफ़िल से उठने की क्यों आज्ञा दे रहे हैं ? क्या आप यह समझते हैं कि मैं प्रेमी के हृदय की पीर हूँ जो आँख लड़ने से उठने लगती है। ज़ौक़ का यह पद इसी दर्द का वर्णन करता है—

निगह का वार था दिल पर तड़पने जान लगी।
चली थी बर्छी किसी पर किसी के आन लगी ॥ ४ ॥

मैं तो अपने मुद्रारूपी हृदय को देकर प्रेम की अमूल्य सामग्री मोल लेता हूँ, परन्तु तनिक बैदों को तो देखिए। वे लोग इसको सौदा अर्थात् उन्माद समझते हैं। इस पद में सौदा के शब्द में श्लेष है।

१ मुक़ामे-शुक्र है गाफ़िल मुसीबते दुनिया।
इसी बहाने से अल्लाह याद आता है॥

यहाँ शृङ्गाररस के अश्लील भावों को शान्तरस के परदे में छिपाने की एक बात याद आ गई। एक बार लखनऊ में एक मुशायरा हुआ। उसमें एक कवि महाशय ने निम्नलिखित पद पढ़ा--

दिल समझता था कि ख़िलवत में तो तनहा होंगे।
मैंने परदा जो उठाया तो क़यामत देखी॥

(भावार्थ--दिल समझता था कि ख़िलवत अर्थात् एकान्त में वह अकेले बैठे होंगे परन्तु जब मैंने परदा उठाया तो अनर्थ दिखाई दिया।) सभासदों में बड़ी वाहवाही हुई। दूसरे ही दिन यह शेर शहर भर में फैल गया। परन्तु लोग थे लखनऊ के, भाँति-भाँति के कटाक्ष होने लगे। कोई कहता था कि भाई अच्छा अनर्थ देखा। कोई कहता था कि कैसा अनर्थ था? क्या कोई और घर के भीतर घुसा हुआ था या कुछ गड़बड़ मामला था? इत्यादि। झेंप के मारे कवि महाशय के इष्ट-मित्रों ने उस पर शान्तरस का रंग चढ़ाना आरम्भ किया। अब यह अर्थ

---

१ हे मूर्ख! संसार की विपदा ईश्वर को धन्यवाद करानेवाली वस्तु है। क्योंकि बहुधा बिना विपदा पड़े हुए लोगों का ध्यान ईश्वर की ओर नहीं जाता। ईश्वर की ओर मनुष्य का ध्यान आकर्षित करना संसार के दुखों का सबसे बड़ा प्रयोजन है। यह पद देखिए—

क्या मसायब की करामात बयाँ तुमसे करूँ।
फ़लसफ़ा सूझता है लोगों को हिरमाँ में वतन॥

लगा कि दिल समझता था कि ईश्वर ऐसे स्थान में वास करता होगा जहाँ और कोई न होगा परन्तु जब माया का परदा उठाया तो एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया।

दूसरी विशेषता यह है कि आप किसी वस्तु के ऊपरी रङ्ग-रूप को देखकर उसके विषय में साधारण उर्दू-कवियों की भाँति अपनी सम्मति नहीं पक्की कर लेते थे। हर विषय की तह तक पहुँच जाते थे और उसका वर्णन इतने सरल शब्दों में कर देते थे कि प्रत्येक उर्दू जाननेवाला समझ सकता था। इनकी सामाजिक कविता का उद्देश सदा मध्य श्रेणी के लोगों का सुधार रहा। मध्य श्रेणी के लोगों को समाचारपत्र इत्यादि पढ़ने से सामयिक विषयों का विशेष ज्ञान रहा करता है। इस कारण अकबर की सामाजिक कविता में अधिकांश सामयिक विषयों का वर्णन है क्योंकि आपने अधिकांश सामयिक घटनाओं ही के आधार पर शिक्षा दी है। शिक्षा देनेवाले की भाषा भी वही होनी चाहिए जो शिक्षित भली-भाँति समझ सकें। लखनऊ के प्रसिद्ध रेख़्तीगो कवि (ज़नानी बोली में कविता करनेवाले) जान साहब ने लखनऊ की बेगमी भाषा का प्रयोग किया। महाकवि मीर, सौदा, इन्शा और नज़ीर ने भी सामयिक विषय के पद प्रतिदिन की बोलचाल में लिखे हैं। इस कारण अकबर ने भी अपने पदों में वही भाषा रक्खी जो आजकल के मध्यम श्रेणी के लोगों में प्रचलित है। इससे अकबर की कविता में एक बहुत बड़ी विशेषता यह पैदा हो गई कि इसके प्रभाव से अँगरेज़ी और अन्य भाषाओं के शब्द, जो उर्दू-संसार में प्रचलित हैं, उर्दू-काव्य में बराबर पाये जाने लगे हैं। यही सब कारण हैं जिनसे आज सामयिक कवि अकबर का नाम उर्दू-काव्य-क्षेत्र के बड़े-बड़े महारथियों में गिना जाता है और आपकी कविता ऐसी ग्राह्य हो गई है कि—

*गुलशने देहर में अकबर का कलामे रंगी।
खिल गया गुल की तरह फैल गया बू की तरह॥

कुछ दिनों तक विलायत जानेवाले भारतीय छात्रों में मेमों से विवाह करने की बड़ी चाल चल गई थी। उनका सुधार करने का उद्देश आगे रखकर अकबर ने अपनी कविता में एक यह भी नई बात पैदा की कि पुरानी चाल के माशूक़ दीपक, गुल, बुत इत्यादि के अतिरिक्त नये चाल की माशूक़ाओं अथवा विलायती मिसों के रंग-रूप की महिमा बखानने और उनके प्रेम का दम भरने लगे—

१ आ गई ज़ुल्फ़े-मिसां ज़ुल्फ़े-बुतां पर ग़ालिब।
पेंच होते हैं बहम अफ़ई व रासू की तरह॥
२ लिपट भी जा न रुक अकबर ग़ज़ब की ब्यूटी है।
नहीं नहीं पं न जा यह हया की ड्यूटी है॥
३ लिया सुबहे शबे-वस्ल उसका बोसा मैंने यह सच है।
इसी पर बोल उठी वह शोख़ मिस यह फ़ाइनल टच है॥
४ मैं हुआ रुख़सत उससे ऐ अकबर।
वस्ल के बाद थैंकयू कहकर॥

काव्य-कुशलता का यह हाल था कि जहाँ सामने कोई पद

* फुलवाड़ीरूपी संसार में अकबर का रस-पूर्ण काव्य फूल के समान खिल गया और महक के समान फैल गया।

१ मिसों की ज़ुल्फ़ ने बुतों (सौन्दर्य्य की प्रतिमाओं) की ज़ुल्फ़ को दबा लिया। अब साँप और नेवले की भाँति आपस में पेंच होते हैं। २ ब्यूटी Beauty = सौन्दर्य्य। हया = लज्जा। ड्यूटी Duty = धर्म। ३ फ़ाइनल टच Final touch = अंतिम स्पर्श। ४ वस्ल = मिलन। थैंक यू Thank you = धन्यवाद।

लाया गया और आपने उस पर दूसरा पद ऐसा अच्छा लगाया कि पूरा पद अपना लिया। एक बार आप लखनऊ के अमीनाबाद में किसी कोठे पर ठहरे हुए थे। प्रातःकाल एक नये कवि आपसे मिलने के लिए आये। अकबर उस समय कविता करने में मग्न थे। यह पद बना था—

कहूँ क्या हस्तिये-बारी में शक होने के क्या माने।

आनेवाले कवि को आपने यह पद सुनाया और कहा कि पहला पद हो गया है दूसरा सोच रहा हूँ, आप कोई क़ाफ़िया बताइए। नये कवि ने कहा, शक को क़ाफ़िया रखिए। अकबर ने दो ही तीन मिनट में इस क़ाफ़िये पर शेर पूरा कर दिया।

[1] कहूँ क्या हस्तिये-बारी में शक होने के क्या माने।
यही समझा नहीं मैं आज तक होने के क्या माने॥

यह तो हुई पद पर पद लगाने की बात। अब नये पद को देखिए कि प्रतिदिन की घटनाओं की सामग्री लेकर किस सरलता के साथ बनता है। कुछ ही दिन की बात है कि आप कटरे में लेखक के एक मित्र के यहाँ बैठे हुए थे। आपका नौकर सुलेमान भी आपके साथ था। पास ही थोड़ी दूर पर एक तख़्त बिछा हुआ था। भीतर से शरबत आया। आपने अपने नौकर को शरबत दिया और कहा कि सुलेमान तख़्त पर बैठ कर शरबत पी ले। इतना

१ मैं क्या बताऊँ कि ईश्वर के अस्तित्व में सन्देह होने का क्या आशय है, मुझे तो आज तक यही पता नहीं चला कि शब्द 'होना' का क्या अर्थ है अर्थात् मैं संसार ही को मिथ्या समझता हूँ तो ईश्वर में संदेह जो संसार की माया के कारण उत्पन्न होता है उसे क्यों न मिथ्या समझूँ?

कहना था कि आपको मिस्टर शाह मोहम्मद सुलेमान की याद आई जो उन्हीं दिनों इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज नियुक्त हुए थे। फिर परियों के बादशाह हज़रत सुलेमान की ओर ध्यान गया जिनका तख़्त (सिंहासन) हवा में उड़ता था। बस क्या था, एक पद तैयार हो गया—

बेंच हाईकोर्ट अब तख़्ते-सुलेमाँ हो गया।

ऐसे ही एक बार पंजाब के एक लेखक मौलवी अलिफ़दीन ने अपनी पुस्तक आपके पास सम्मति के लिए भेजी। आपने तुरन्त यह पद उत्तर में लिख कर भेज दिया।

[1] अलिफ़दीन ने ख़ूब लिक्खी किताब।
कि बेदीन ने पाई राहे-सवाब ॥

यह देख कर हमें अँगरेज़ों के विख्यात कवि वर्ड्सवर्थ का यह कथन याद आता है कि "क्षुद्र से क्षुद्र फूल को देख कर मेरे हृदय में उन भावों का सञ्चार होता है जिनका आँसुओं द्वारा भी व्यक्त करना सम्भव नहीं है।"[2]

अकबर के सम्पूर्ण काव्य को अकबर के समय का सामाजिक और राजनैतिक इतिहास समझना चाहिए जिसमें मध्यम श्रेणी के लोगों के रहन-सहन और आचार-विचार के जीते-जागते चित्र

---

१ अलिफ़ उर्दू भाषा का पहला अक्षर (ا) और बे (ب) दूसरा अक्षर है। बे का अर्थ बिना है। भावार्थ—अलिफ़दीन ने अच्छी पुस्तक लिखी जिसको पढ़ कर बेदीन अर्थात् अधर्मी को पुण्य हुआ।

2. To me the meanest flower that blows, can give
Thoughts that often lie too deep for tears.

खिंचे हुए हैं। आपकी सम्पूर्ण कविता पाँच भागों में बाँटी जा सकती है (१) सामयिक, (२) सामाजिक, (३) धार्मिक, (४) राजनैतिक और (५) दार्शनिक। परन्तु जैसा कि स्वयं कहते हैं—"तवज्जुह फ़रमाकर कुल कुल्लियात का मुलाहिज़ा ज़रूरी है क्योंकि एक किस्म के अशआर एक जगह नहीं हैं।" अकबर की कविता में ऐसे पद बहुत थोड़े मिलेंगे जिनका उद्देश केवल लोगों को हँसाना या अलङ्कार का खेल अथवा अपनी काव्य-कुशलता दिखाना हो और साथ ही साथ किसी गूढ़ रहस्य का दिग्दर्शन न हो। यह पद देखिए—

दांत का दर्द बदस्तूर चला जाता है।
वही माजू वही काफ़ूर चला जाता है॥
१ डारविन के उसी लेक्चर का सबक़ है अब तक।
वही बन्दर वही लंगूर चला जाता है॥
२ बर्क़ के लम्प से आंखों को बचाये अल्लाह।
रोशनी आती है और नूर चला जाता है॥

पानी के नल का हाल भी बिजली के लम्प का सा है—

ताऊन, तप और खटमल मच्छड़ सब कुछ हैं पैदा कीचड़ से।
बम्बे की रवानी एक तरफ़ और सारी सफ़ाई एक तरफ़॥

---

१ अँगरेज़ी वैज्ञानिक डारविन जिसने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि मनुष्य-जाति की उत्पत्ति बन्दर से हुई है उसका वही पुराना बन्दर और लंगूरवाला पाठ अब तक पढ़ाया जाता है। धार्मिक शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं हुआ।

२ ईश्वर बिजली के लम्प से नेत्र की रक्षा करे क्योंकि इन लम्पों से प्रकाश तो फैलता है परन्तु इस प्रकार से आंखों की ज्योति चली जाती है।

कुछ लम्प और पम्प ही नहीं, अकबर का मत था कि समस्त नवीन सभ्यता और उसके आविष्कार समाज और विशेष कर मुसलमानों की धार्मिक उन्नति के लिए हानिकारक हैं और नई रोशनी किसी के हृदय का अन्धकार नहीं दूर कर सकती।

ये जुगनूँ भी नई ही रोशनी से मिलते जुलते हैं।
अँधेरा ही रहा जंगल में गो यह जा बजा चमके॥

इससे यह न समझना चाहिए कि अकबर अँगरेजी शिक्षा के भी विरोधी थे। आपने स्वयं अपने ज्येष्ठ पुत्र को शिक्षा प्राप्त करने के लिए विलायत भेजा था। दोष इतना ही समझते थे कि यूरोपियन फ़ैशन के चक्कर में पड़ कर लोग जाति और धर्म को भुला देते हैं।

१ न निमाज़ है न रोज़ा न ज़कात है न हज है।
तो ख़ुशी फिर इसकी क्या है कोई जंट कोई जज है॥

यदि लोग अपने धर्म को न छोड़ें तो इसमें कोई हानि नहीं--

२ सर में सौदा आख़िरत का हो यही मक़सूद है।
मग़रिबी टोपी पहिन या मशरिक़ी दस्तार बांध॥

बहुधा यह भी होता है कि लोग कोट-पतलून पहन कर जामे से बाहर हो जाते हैं और अपने जातीय भाइयों को घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं—

---

१ जब कि लोग अँगरेज़ी पढ़ के दान-पुण्य, तीर्थ-व्रत सब छोड़ देते हैं तो फिर केवल इस बात से कि अमुक अँगरेज़ी पढ़ के जंट हो गया और अमुक जज हो गया चित्त को क्या प्रसन्नता हो सकती है।

२ मनुष्य परलोक को न भूल जाय, ऊपर से चाहे साहबी टोपी लगाये चाहे देशी पगड़ी बाँधे, इसमें कोई हानि नहीं है।

गिरे जाते हैं हम ख़ुद अपनी नज़रों से सितम यह है।
बदल जाते तो कुछ रहते मिटे जाते हैं ग़म यह है॥

जाति और धर्म खो देने से जातीय उन्नति नहीं हो सकती,

१ खोये देते हो जो तुम मज़हबो-मिल्लत ऐ यार।
क्या समझते हो कि मिल जायगी तक़दीर नई॥

और न केवल कोट-पतलून पहनने से कोई साहब हो सकता है।

पाँव काँपा ही किये ख़ौफ़ से उनके दर पर।
चुस्त पतलून पहनने से भी पिँडली न तनी॥

यह तो गुप्तजी के कथनानुसार वही बात हुई कि

अफ़सर से खा लेना मार।
परअधीन को दे पैजार॥

यदि किसी को साहब बनने की इच्छा ही है तो उसको साहब के भेष की अपेक्षा साहब के गुणों को प्राप्त करना अधिक आवश्यक समझना चाहिए—

२ अज़्म कर तक़लीदे यूरुप का हुनर के ज़ोर से।
लुत्फ़ क्या गर लद गये मोटर प ज़र के ज़ोर से॥

भारतवासियों को यूरोप की शिल्पकला और व्यापार की उन्नति को देख कर लाभ उठाना चाहिए—

---

१ हे मित्र, तुम जो नई सभ्यता के फेर में अपनी जाति और धर्म की मर्यादा खोये देते हो तो क्या तुम्हें यह आशा है कि ऐसा करने से तुम्हें नया भाग्य भी मिल जायगा?

२ यूरोपवालों की चाल-ढाल का अनुकरण तुझे गुणों के बल पर करना चाहिए। इससे क्या लाभ है कि रुपया देकर पराई मोटर पर चढ़ लिये। चित्त को तो तभी आनन्द आता है जब वस्तु अपनी हो।

१ यूरुप की गो है जङ्ग की क़ूवत बड़ी हुई।
लेकिन फ़िज़ूँ है इसमे तिजारत बड़ी हुई॥
मुमकिन नहीं लगा सकें वह तोप हर जगह।
देखो मगर पियर्स का है सोप हर जगह॥

भारत की तो अभी यही दशा है कि
यूरुप के लिए बस एक गुदाम है हिन्द॥

अँगरेज़ी-शिक्षा अधिकांश भारतवासी केवल जीविका-निर्वाह के लिए प्राप्त करते हैं।

२ पढ़ के अँगरेज़ी मैं दाना हो गया।
कम का मतलब ही कमाना हो गया॥

परन्तु केवल इसी उद्देश से यह शिक्षा प्राप्त करनी ठीक नहीं—

३ मज़हब छोड़ो मिल्लत छोड़ो सूरत बदलो उम्र गँवाओ।
सिर्फ़ किलरकी की उम्मीद और इतनी मुसीबत तोबा तोबा॥

बड़ी नौकरियों की आशा हो तो वह भी एक बात है परन्तु उनका मिलना तो आजकल साधारण मनुष्य के लिए दुर्लभ है—

---

१ यद्यपि यूरुप की लड़ाई की शक्ति बड़ी हुई है परन्तु उसका व्यापार उससे अधिक बढ़ा हुआ है। यह सम्भव नहीं है कि यूरपवाले हर स्थान पर तोप लगा सकें परतु यह प्रत्यक्ष है कि यूरुप के व्यापारी पियर्स का साबुन हर स्थान पर मिल सकता है।

२ अँगरेज़ी पढ़ के मैं बुद्धिमान् हो गया; मुझमें यह बुद्धि आ गई कि अँगरेज़ी शब्द कम (Come) का अर्थ कमाना अथवा अँगरेज़ी पढ़ने का उद्देश पैसा कमाना है।

३ पढ़ने के पीछे धर्म छोड़ो, जाति छोड़ो, सूरत बदलो, उम्र बिता दो, इतना कष्ट उठाओ और अन्त में किसी दफ़्तर में किलरकी करना पड़े, छिः! छिः! ऐसी विद्या किस अर्थ की!

१ ख़्वाहाने नौकरी न रहें तालिबाने इल्म ।
क़ायम हुई है राय ये अहलें-शऊर की ॥
कालिज में धूम मच रही है पास पास की ।
ओहदों से आ रही है सदा दूर दूर की ॥

शिक्षा का उद्देश यह होना चाहिए कि देश और जाति की उन्नति हो केवल नौकरी करके पेट पालने का [illegible] सामने रखकर शिक्षा प्राप्त करने से लोग व्यापार और शिल्प-कला की ओर ध्यान देना छोड़ देते हैं जिससे देश निर्धन हो जाता है ।

ज़वाले-क़ौम की तो इब्तदा वही थी कि जब ।
तिजारत आपने की तर्क नौकरी कर ली ॥

इस कारण—

कुछ सनअतोहिरफ़त प भी लाज़िम है तवज्जह ।
आख़िर ये गवरमेंट से तनख़्वाह कहाँ तक ॥

पहिले बहुधा भारतीय छात्र विलायत में मेमों से विवाह कर लिया करते थे ।

२ पेचीदा मसायल के लिए जाते हैं इँगलैंड ।
ज़ुल्फ़ों में उलझ आते हैं, आफ़त है तो यह है ॥

उनसे कहते हैं—

ऐसा शौक़ न करना अकबर । गोरे को न बनाना साला ॥
भाई रङ्ग यही है अच्छा । हम भी काले यार भी काला ॥

---

१ बुद्धिमानों की यह सम्मति है कि विद्यार्थियों को नौकरी की इच्छा न करनी चाहिए क्योंकि यदि कालिज में 'पास पास' के शब्द की धूम मची हुई है तो उच्च पदों से दूर ! दूर ! का शब्द सुनाई दे रहा है ।

२ विद्यार्थी लोग पेचदार प्रश्नों को सीखने के लिए इँगलिस्तान जाते हैं परन्तु आपत्ति तो यह है कि वे लोग वहाँ की सुन्दरियों की पेचदार लटों में उलझ आते हैं ।

यह तो हुई विलायत की बात अब घर की देखिए। अकबर का विचार था कि नई सभ्यता के आगमन से देश में परदे का रिवाज उठता जाता है।—

१ बे परदा कल जो आईं नज़र चन्द बीबियाँ।
[illegible] ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गड़ गया॥
पूछा जो उनसे आपका परदा वह क्या हुआ।
कहने लगीं कि अक्ल प मर्दों की पड़ गया॥

एक और स्थान पर कहते हैं। व्यंग्य-ढँग देखिए—

२ बिठाई जायँगी परदे में बीबियां कब तक।
बने रहोगे तुम इस मुल्क में मियाँ कब तक॥
हरममरा की हिफ़ाज़त को तेग़ ही न रही।
तो काम देंगी ये चिलमन की तीलियां कब तक॥
अवाम बांध लें दोहर को थर्डो इन्टर में।
सेकेण्डो फ़र्स्ट की हों बन्द खिड़कियां कब तक॥

---

१ कल जो कुछ महिलाओं को बे परदा देखा तो अकबर वहीं पर जातीय लज्जा के कारण गड़ गया। जब उनसे यह पूछा कि आपका परदा कहाँ गया तो वे कहने लगीं कि मर्दों की बुद्धि पर पड़ गया जो हमें बाहर निकालते हैं।

२ परदे में महिलायें भला कब तक बिठाई जायँगी। तुम इस देश में पुरानी प्रथा के मियाँ कब तक बने रहोगे। साहब कब तक न बनोगे। जब तुम्हारे हाथ में तलवार ही न रही जिससे हरमसरा (ज़नाने) की रक्षा कर सको तो यह चिक की तीलियां कब तक काम देंगी। यह बात सम्भव है कि साधारण लोग तीसरे और ड्योढ़े दरजे में परदा करने के लिए दोहर बांध लें अर्थात् कम पढ़े लोग परदे की प्रथा बनाये रक्खें परन्तु यह सम्भव नहीं है कि पहले और दूसरे दरजे में यात्रा करनेवाले जिन पर नई सभ्यता का प्रभाव अधिक पड़ चुका है अधिक दिन तक खिड़कियां बन्द रख सकें।

अँगरेज़ी चाल भारतवासियों ने अँगरेज़ी शिक्षा से ग्रहण की और मुसलमानों में अँगरेज़ी शिक्षा पहले-पहल अलीगढ़-कालिज से फैली जिसको सर सैयद अहमद ने स्थापित किया था; इस कारण अकबर के बहुत से पद्यों में सर सैयद के ऊपर भी कटाक्ष है। यह कविता देखिए—

१ कहा किसी ने ये सैयद से आप ऐ हज़रत।
न पीर को न किसी पेशवा को मानते हैं॥
नज़र तो कीजिये इस बात पर जो हैं हिन्दू।
ब-सद ख़ुलूस हरेक देवता को मानते हैं॥
बहुत वो हैं जो अनासिर परस्त हैं दिल से।
वो आग पूजते हैं या हवा को मानते हैं॥
मुराद मांगते हैं लोग पाकरूहों से।
किसी बुज़ुर्ग को या मुक़तदा को मानते हैं॥
फिर आप में ये हवा क्या समा गई है कि आप।
न दस्तगीर न मुशकिलकुशा को मानते हैं॥
जवाब उन्होंने दिया हम हैं पैरवे क़ुरआं।
अदब हर एक का है लेकिन ख़ुदा को मानते हैं॥

---

१ किसी ने सर सैयद अहमद से कहा कि "हे महाशय, आप न किसी महापुरुष को और न किसी धर्मशिक्षक को मानते हैं। तनिक यह तो देखिए कि जो लोग हिन्दू हैं वह बड़े प्रेम से हर एक देवता को मानते हैं। बहुत से वे हैं जो पारसी कहलाते हैं और आग पूजते हैं या हवा को मानते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो पवित्र आत्माओं से मुरादें माँगते हैं और किसी महापुरुष या महात्मा को मानते हैं फिर आपको यह क्या हो गया है कि आप न सहायता देनेवाले और न कष्टों के निवारण करनेवाले को मानते हैं।" यह सुन कर सर सैयद अहमद ने कहा कि "हम क़ुरान की बातों पर चलते हैं। हम हर एक का सम्मान करते हैं परन्तु वास्तव में ख़ुदा को

जवाब हज़रते सैयद का .खूब है अकबर।
हम उनके क़ौले दुरुस्तो बजा को मानते हैं॥
व लेकिन इस नई तहज़ीब के बुज़ुर्ग अकसर।
.खुदा को और न तरीक़े दोश्रा को मानते हैं॥
ज़बानी कहते हैं सब कुछ मगर हक़ीक़त में।
वो सिर्फ़ .कुव्वते-फ़रमांरवा को मानते हैं॥

अब समाज की दशा देखिए कि नई सभ्यता का इस पर कैसा प्रभाव पड़ा है।

१ नई नई लग रही हैं आँचें ये क़ौम बेकस पिघल रही है।
न मशरिक़ी है न मग़रिबी है अजीब साँचे में ढल रही है॥

फिर हताश होकर कहते हैं।

२ मेरे मन्सूबे तरक्क़ी के हुए सब पायमाल।
बीज मग़रिब ने जो बोया वह उगा और फल गया॥

मानते हैं।" हे अकबर सैयद महाशय का उत्तर बहुत ठीक है। हम उनकी बात का विश्वास करते हैं परन्तु आपत्ति यह है कि यह नई शिक्षा जिसके आप सञ्चालक हैं इसको प्राप्त करनेवाले बहुधा महाशय ऐसे होते हैं कि न वे ईश्वर को मानते हैं और न अपने धर्म ही को मानते हैं। कहने को सर सैयद के समान मुँह से सब कुछ कहते हैं परन्तु वास्तव में उनके हृदय पर केवल शासक की शक्ति का प्रभाव होता है।

१ नई नई आँचें लग रही हैं जिसके कारण यह बिचारी जाति गली जा रही है न तो यह अब पूरबी कही जा सकती है न पश्चिमी क्योंकि यह एक विचित्र साँचे में ढल रही है।

२ मेरी सारी उन्नति की आशायें मिट्टी में मिल गईं। पश्चिम ने जो बीज बोया वह उगा और फल भी गया अर्थात् पश्चिमी सभ्यता भली भाँति फैल गई यही कारण है जिससे अँगरेज़ी मोची डासन का

बूट डासन ने बनाया मैंने इक मज़मूँ लिखा ।
मुल्क में मज़मूँ न फैला और जूता चल गया ॥

आपका विचार था कि पूँजीवालों की बढ़ती से देश की उन्नति नहीं हो सकती ।

जिस रोशनी में लूट ही की आपको सूझे ।
तहज़ीब की तो मैं उसको तजल्ली न कहूँगा ॥
लाखों को मिटा कर जो हज़ारों को उभारे ।
इसको तो मैं दुनिया की तरक़्क़ी न कहूँगा ॥

पुरानी प्रथा के अनुगामी नई सभ्यता की इन चोटों से बचे हुए थे ।

१ मग़रिबी धौल का सर में न पहुँचता था असर ।
एक यह बात बहुत ख़ूब थी अम्मामे में ॥

अब कुछ धार्मिक पदों को लीजिए । यूरुप के इतिहास-लेखकों के इस कथन का कि इसलाम तलवार-द्वारा फैलाया गया है कैसा उत्तर देते हैं—

२ यही फ़रमाते रहे तेग़ से फैला इसलाम ।
यह न इरशाद हुआ तोप से फैला क्या है ॥

बनाया हुआ जूता सारे देश में चल गया और मेरा लेख जो उसके विरुद्ध था देश में न फैला ।

१ पश्चिमी घूँसे की चोट सिर में न लगती थी । पगड़ी में यह बड़ा अच्छा गुण था अर्थात् पुरानी चालवालों पर नई सभ्यता के दोषों का प्रहार न होता था ।

२ यही कहते रहे कि इसलाम-धर्म तलवार के बल से फैलाया गया, यह कभी न बताया कि तोप के बल से क्या फैलाया गया है ।

समाज और राजनीति का सदा से कुछ न कुछ सम्बन्ध चला आता है परन्तु आजकल तो यह हाल है कि मध्यम श्रेणी का छोटे से छोटा बच्चा तक सामयिक राजनैतिक विषयों का कुछ न कुछ भला-बुरा ज्ञान रखता है। इस कारण यह असम्भव था कि अकबर जिन्होंने कलकत्ता बोर्ड आफ़ इग्ज़ामिनेशन के कथनानुसार ज़माने के मैलान (रुझान) आम और जदीद (नवीन) असरात (प्रभाओं) से मोअस्सर होकर शायरी के लिए नई-नई राहें निकालीं, देश की राजनैतिक स्थिति पर विचार न करते। आपका जाति-अभिमान इसी से प्रकट है कि एक बार भारत के भूतपूर्व वाइसराय लार्ड करज़न ने अपने एक भाषण में भारत-वासियों को झूठा बनाया। अकबर इस आक्षेप को सहन न कर सके। सरकारी नौकर होते हुए भी आपने तुरन्त इसके उत्तर में एक कविता "अवध पंच" में प्रकाशित की जिसका एक बहुत प्रसिद्ध पद यह है—

> झूठे हैं हम तो आप हैं झूठों के बादशाह।

बहुत लोगों का यह विचार था कि अकबर ने बहुत से पद सरकार के विरुद्ध लिखे। यह बात उच्च अधिकारियों के कानों में भी डाली गई।

> रक़ीबों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में।
> कि अकबर नाम लेता है ख़ुदा का इस ज़माने में॥

परन्तु "साँच को क्या आँच" अकबर ने इसकी कुछ परवा न की क्योंकि वे जानते थे कि यह केवल लोगों की समझ का फेर है। साधारण शृङ्गाररस के पद से भी राजनैतिक अर्थ निकाले जा सकते हैं। क्योंकि—

ग़लत-फ़हमी बहुत है आलमे अलफ़ाज़ में अकबर ।
बड़ी मायूसियों के साथ अकसर काम चलता है ॥
ये रोशन है कि परवाना है उसका आशिक़े सादिक़ ।
मगर कहती है ख़िलक़त शमश्र से परवाना जलता है ॥

हे अकबर शब्द-संसार में बहुत उलटे अर्थ लगाये जाते हैं। इस कारण हमको कभी बड़ी-बड़ी निराशायें होती हैं। यद्यपि यह सब जानते हैं कि पतिंगा दीपक पर माहित है परन्तु तब भी सब यही कहते हैं कि दीपक से पतिंगा जलता है अर्थात् ईर्ष्या रखता है। सारांश यह कि किसी के प्रति प्रेम का भाव प्रकट करो तब भी लोग समझते हैं कि यह इससे बैर रखता है।

आपका विचार था कि भारत की अवनति के कारण स्वयं भारतवासी हैं।

१ अपने मिनक़ारों से फन्दा कस रहे हैं जाल का ।
तायरों पर सेहर है सैयाद के इक़बाल का ॥

भारत के राजनैतिक नेताओं की यह दशा है—

२ कमर बाँधी है यारों ने जो बाहम हुब्बे क़ौमी में ।
वो बोले तू नहीं चलता वो बोले तू नहीं चलता ॥
कहा पीरे-तरीक़त ने अकड़ कर अपनी टमटम पर ।
यही मंज़िल है जिसमें शेख़ का टट्टू नहीं चलता ॥

---

१ स्वयं अपनी चोंचों से जाल का फंदा कस रहे हैं। पक्षियों पर भाग्यरूपी चिड़ीमार के प्रताप का जादू फिरा हुआ है।

२ मित्रवर्ग ने देश-सेवा पर कमर कसी है परन्तु किसी में इतना साहस नहीं है कि स्वयं आगे बढ़ कर काम करे सब दूसरों ही पर दोष धरते हैं और मियाँ भाई का तो यह हाल है कि उन्होंने पहले ही से जवाब दे दिया है कि मुझसे यह नहीं हो सकता।

इनमें से बहुतों को तो नेता बनने की इच्छा केवल यश प्राप्त करने के लिए होती है जिसमें अधिकारीवर्ग में उनका सम्मान हो।

१ क़ौम के ग़म में डिनर खाइए हुक्काम के साथ।
रञ्ज लीडर को बहुत है मगर आराम के साथ॥

नये सुधार के उत्सुकों से कहते हैं।

२ हमें घेरे हुए हैं हर तरफ़ इसलाह की मौजें।
मगर यह हिस नहीं है डूबते हैं या उभरते हैं॥

कौंसिलों में भी आपको बहुत श्रद्धा न थी क्योंकि—

३ रिज़ोल्यूशन की शोरिश है मगर उसका असर ग़ायब।
प्लेटों की सदा सुनता हूँ और खाना नहीं आता॥
कौनसिल में सवाल होने लगे।
क़ौमी ताक़त ने जब जवाब दिया॥

---

१ देश के प्रेम अथवा शोक में नेता का कर्तव्य है कि अधिकारीवर्ग के साथ भोज खाय। इससे जान पड़ता है कि (Leader अथवा) नेता को शोक वास्तव में बहुत है परन्तु उसकी (ऐसा करने से) कटती चैन से है क्योंकि अधिकारीवर्ग इस धोखे में पड़ कर कि यह वास्तव में जनता का पूज्य है उसका सम्मान करते हैं।

२ हमें चारों ओर से सुधार की लहरें घेरे हुए हैं परन्तु हमको यह ज्ञान नहीं है कि हम डूबे जा रहे हैं या उभर रहे हैं।

३ प्रस्तावों की बड़ी धूम है परन्तु उनका कोई प्रभाव नहीं है। यह बात ऐसी है जैसे किसी भोज में प्लेटों अर्थात् रकाबियों की खनखनाहट सुनाई दे परन्तु खाना न मिले।

महायुद्ध के समय में आपने नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र बनने के समाचार पढ़े; उस पर कहते हैं—

जान ही लेने की हिकमत में तरक़्क़ी देखी।
मौत का रोकनेवाला कोई पैदा न हुआ॥

अकबर के जीवन के अन्तिम दिनों में असहयोग के नाद से भारत गूँज रहा था। इस समय बहुत सी ऐसी घटनायें हुईं जिन पर आप कुछ न कुछ लिख सकते थे परन्तु आप अपनी लेखनी को यथाशक्ति रोके रहे; क्योंकि आप सरकार के विरुद्ध कुछ प्रकाशित नहीं कराना चाहते थे।

अफ़वाह है कि अकबर बेहोश हो गया है।
यह तो ग़लत है लेकिन ख़ामोश हो गया है॥

क्योंकि—

१ मेरी तरफ़ से सारा जहाँ बदगुमाँ है अब।
आज़ादिये ख़याल वो मुझमें कहाँ है अब॥
रखती हैं फूँक फूँक के बातें मेरी क़दम।
तेग़-ज़बाँ नहीं है असाये-ज़बाँ है अब॥

फिर भी इससे यह न समझना चाहिए कि आपने सामयिक घटनाओं पर विचार करना छोड़ दिया था।

---

१ सारा संसार अब मुझ पर सन्देह करता है। अब मैं उस स्वतन्त्रता के साथ अपने भावों का वर्णन कब कर सकता हूँ। मैं अब बहुत सोच-समझ कर बातें करता हूँ। मेरी जिह्वा अब तलवार के समान काट नहीं करती, अब डण्डा हो गई है।

१ मेरे सकूत से मुझे नादां न जानिए।
अलफ़ाज़ की कमी है ख़यालात की नहीं॥

क्योंकि—

२ तनख़्वाह के लिए है न है वाह के लिए।
है मेरी शायरी दिले-आगाह के लिए॥
है यह दोआ कि तर्के-फ़ुजूली नसीब हो।
जो कुछ कहूँ सो हो फ़क़त अल्लाह के लिए॥
इक ग़ुल मचा कि इसको भी लैसंस है ज़रूर।
मुँह खुल चुका था वरना मेरा आह के लिए॥

अन्त में हताश होकर कहते हैं—

इतनी आज़ादी भी ग़नीमत है।
साँस लेता हूँ बात करता हूँ॥

मुसलमान असहयोगियों पर कटाक्ष देखिए—

बुद्धू मियां भी हज़रते गांधी के साथ हैं।
गो गर्द-राह हैं मगर आंधी के साथ हैं॥

१ मेरी चुप से मुझे अज्ञान न जानना। मुझमें अब केवल शब्दों का अभाव है, भावों का नहीं। भाव वही उठते हैं जो पहले उठते थे।

२ न वेतन के लिए है और न प्रशंसा के लिए। मेरी कविता केवल ज्ञानी के हृदय के लिए है। ईश्वर से मेरी यह प्रार्थना है कि अण्ड-बण्ड न बकूं, जो कुछ कहूँ वह केवल ईश्वर के लिए हो। परन्तु यह हल्ला मचा कि धर्मसम्बन्धी बातें भी बिना लैसंस (License) अर्थात् अधिकारीवर्ग की आज्ञा लिये हुए नहीं कही जा सकतीं; इस कारण मैं रुक गया नहीं तो मेरा मुँह तो कभी का धार्मिक अवनति पर शोक करने के लिए खुल गया था।

हिन्दू-मुसलिम-ऐक्य पर क्या अच्छा कहा है—

१ कहता हूँ मैं हिन्दू ओ मुसलमां से यही।
अपनी अपनी रविश प तुम नेक रहो॥
लाठी है हवाय-दहेर पानी बन जाव।
मौजों की तरह लड़ो मगर एक रहो॥

असहयोग पर आपका यह भी पद बहुत प्रसिद्ध है। कुछ लोगों का अनुमान है कि इससे आपकी गाँधी-आन्दोलन से सहानुभूति सिद्ध होती है।

२ मदखूलये गवर्नमेण्ट अकबर अगर न होता।
इसको भी आप पाते गांधी की गोपियों में॥

अकबर के काव्य के तीन भाग अकबर के जीवन-काल ही में छप गये थे। सन् १९२० ई० तक पहले भाग के छः संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। इसका पहला संस्करण सन् १९०९ ई० में प्रकाशित हुआ था। इसके बहुत से पद कलकत्ता बोर्ड आफ़ इकज़ामिनेशन ने अपनो आनर्स की परीक्षा के उर्दू कोर्स में दिये। यह कोर्स सन् १९०९ ई० में प्रकाशित हुआ था और इसमें केवल उर्दू के महाकवियों ही के काव्य का संग्रह है। इसके पहले आपकी बहुत सी क़ानून की किताबें और मिस्टर ब्लंट की अँगरेज़ी पुस्तक "फ़्यूचर आफ़ इस्लाम" का उर्दू अनुवाद प्रकाशित हो चुका था। अपने काव्य के पहले भाग के

---

१ मैं हिन्दू-मुसलमानों से यही कहता हूँ कि तुम लोग अपनी-अपनी चाल पर धर्म-पूर्वक चलो। संसार की हवा लाठी के समान है, तुम पानी बन जाओ। लहरों के समान आपस में लड़ो परन्तु फिर एक हो जाया करो।

२ यदि अकबर गवर्नमेंट की भार्या अर्थात् वैतनिक न होता तो इसको भी आप महात्मा गाँधी की गोपियों में पाते।

तीसरे संस्करण में, जो सन् १९१२ ई० में प्रकाशित हुआ, अकबर ने अपनी कविता के विषय में कुछ विचार प्रकट किये हैं। उनमें से कुछ नीचे दिये जाते हैं।

"मुसन्निफ़ (लेखक) ने बाज़ ख़यालात को, जो एक आरटिकिल (Article निबन्ध) चाहते हैं. अक्सर एक या चन्द अशआर में ज़ाहिर कर दिया है। तवज्जेह फ़रमाकर कुल कुल्लियात का मुलाहिज़ा ज़रूरी है क्योंकि एक क़िस्म के अशआर एक जगह नहीं हैं। एक लायक़ और ज़ीइल्म (विद्वान्) एडीटर साहब ने फ़रमाया है कि 'मुसन्निफ़ ज़ियादातर एक थिंकर या फ़िलासफ़र है जिसने अपने ख़यालात ख़ुशी के साथ दर्ज किये हैं।' मुसन्निफ़ (अकबर) को ख़ुशी है। यह राय उसकी इज्ज़त अफ़ज़ाई के साथ ही उसकी शायराना ज़िम्मेदारी को, जिसका ख़ुद उसको इद्दआ नहीं है, घटाती है। मुसन्निफ़ का इरादा है कि आइन्दा अपने ऐसे ख़यालात को—जो लिटरेचर, इख़लाक़, मज़हब, फ़लसफ़ा वग़ैरः मुख़्तलिफ़ उनवानों (भावों—विषयों) के ज़ैल में आ सकते हैं—अपने इल्म (विद्या) और समझ की बिसात के मुवाफ़िक़ अलहदा मुस्तक़िल तसनीफ़ में तहरीर करे। यह भी इरादा है कि इस कुल्लियात और उसके हिस्सा-दोयम का उम्दा और मोकम्मल इन्तेख़ाब मै (साथ) कलाम जदीदा के ज़रूरी तमहीद (भूमिका) और मुफ़स्सिल इन्डेक्स के साथ एक जिल्द, जिसकी क़ीमत ज़्यादा न हो, शाया करे।" अकबर की यह भी इच्छा थी कि उनके काव्य का चौथा भाग भी उनके सामने ही छप जाय परन्तु काल-चक्र ने ऐसा न होने दिया और ९ सितम्बर सन् १९२१ ई० को आपने इस असार संसार का परित्याग किया। इस घटना ने समस्त उर्दू-कवि समाज में एक घोर हाहाकार फैला दिया और इस महफ़िल के सदस्य, जो कुछ देर के लिए हँस

पड़े थे, फिर रोने लगे। आज अकबर की हड्डियाँ तीर्थराज में, जहाँ सरस्वती की धारा सदा गुप्त रूप से बहा करती है, गड़ी हुई हैं परन्तु उनकी शिक्षाप्रद कवितायें पहले ही की भाँति लोगों के हृदय में प्रकाश फैला रही हैं। स्वयं कह गये हैं—

और आलम में हूँ अब ऐ फ़ातेहाख़्वाँ बादे मर्ग।
मैं न था वह जिस्म जो मिट्टी में पिनहाँ हो गया॥

चुनी हुई ग़ज़लें

१ समझे वही उसको जो हो दीवाना किसी का।
अकबर ये ग़ज़ल मेरी है अफ़साना किसी का॥ १॥

गर शेखो-बरहमन सुनें अफ़साना किसी का।
मोबिद न रहे काबः औ बुतखाना किसी का॥ २॥

अल्लाह ने दी है जो तुम्हें चाँद सी सूरत।
रोशन भी करो जा के सियहखाना किसी का॥ ३॥

अश्क आँखों में आजायँ एवज़ नींद के साहब।
ऐसा भी किसी शब सुनो अफ़साना किसी का॥ ४॥

सामाने-तकल्लुफ़ नज़र आयेंगे जो हर सू।
ज़न्नत में भी याद आयेगा काशाना किसी का॥ ५॥

कोई न हुआ रूह का साथी दमे आख़िर।
काम आया न उस वक्त में याराना किसी का॥ ६॥

यहाँ शीशये दिल ख़ूने तमन्ना से है लबरेज़।
वहाँ बादये गुलफ़ाम है पैमाना किसी का॥ ७॥

करते वो निगाहों से अगर बादाफ़रोशी।
होता न गुज़र जानिबे-मैखाना किसी का॥ ८॥

हम जान से बेज़ार रहा करते हैं अकबर।
जब से दिले-बेताब है दीवाना किसी का॥ ९॥

(१) ईश्वर को वही पहचान सकता है जो किसी के प्रेम में पागल हो अथवा जिसके हृदय में प्रेम का अंश नहीं है वह ईश्वर को नहीं पहचान सकता। क्योंकि—"हरि

व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना।"
हे अकबर! मेरी यह ग़ज़ल किसी की प्रेम-कहानी है।

(२) यदि शेख़ अथवा ब्राह्मण उस (ईश्वर) का चरित्र सुनें तो इन दोनों में से कोई हज करने या मन्दिर में पूजन करने न जाय, दोनों उसके उन्माद में सांसारिक बातों को छोड़ दें।

(३) जब ईश्वर ने तुमको चन्द्रमा के समान मुखड़ा दिया है तो तुमको चाहिए कि इसको ले जाकर अपने प्रेमी का घर, जो तुम्हारे विरह में अँधेरा पड़ा है, उज्ज्वल करो।

(४) तुम्हारे प्रेमी की प्रेम-कहानी इतनी करुणामय है कि यदि तुम किसी रात्रि में सुनो तो नींद के बदले तुम्हारी आँखों में आँसू आजायँगे क्योंकि—

जी भर आया सुननेवालों के जिगर फट फट गये।
कुछ अजब हसरत भरी थी दास्ताने-अहले-इश्क़॥

(५) मुसलमनों का मत है कि वैकुण्ठ में लोगों को बड़ी-बड़ी सुख-सामग्रियाँ मिलती हैं। इसी को लेकर अकबर कहते हैं कि जब तुम्हारा प्रेमी स्वर्ग में जायगा तो वहाँ उसको चारों ओर अनेक सुख-सामग्रियाँ दिखाई देंगी। उनको देखकर प्रेमी को सुख की जगेह और दुःख होगा क्योंकि उसको अपनी प्रियतमा के सुख-सामग्रियों से परिपूर्ण गृह की याद आवेगी।

(६) अन्तिम समय में किसी ने जीव का साथ न दिया। उस समय किसी की मित्रता काम न आई। महाकवि

नज़ीर ने भी अपने 'हंसनामे' में इसी भाव का दिग्दर्शन कराया है।

सब छूट गये साथ के साथी जो नज़ीर आह।
आख़िर के तईं हंस अकेला ही सिधारा॥

(७) जो प्याला तुम्हारे पास है वह तुम्हारे प्रेमी के पास भी है, अन्तर यह है कि तुम्हारे प्रेमी के हृदय का प्याला विरह के रक्त से भरा हुआ है और जो प्याला तुम्हारे हाथ में है उसमें गुलाबी रंग की मदिरा है। दिल्ली के प्रसिद्ध कवि ग़ालिब ने भी अपनी एक ग़ज़ल में ऐसे बहुत से पद लिखे हैं—

*वां करम को उज्रे-वारिश था इनांगीरे ख़िराम।
गिरिये से यां पुम्बये बालिश कफ़े सैलाब था॥

(८) यदि वे अपनी मद-भरी आँखों से मदिरा बेचते अर्थात् अपनी मदभरी चितवन लोगों पर डालते तो कोई मदिरा की दुकान की ओर न जाता। यह प्रसिद्ध दोहा देखिए—

अमी हलाहल मदभरे श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत जेहि चितवत इक बार॥

(९) हे अकबर! जब से हमारा हृदय किसी के प्रेम में पागल हो गया है तब से हमारा जी जीने से उचट गया है और हम यही चाहते हैं कि मर कर तुममें लीन हो जायँ।

---

*वहां तो उनको मेरे पास आने की कृपा न करने का यह बहाना था कि पानी बरस रहा है और यहाँ आँसुओं की ऐसी झड़ी लगी हुई थी कि जान पड़ता था कि तकिये की रुई में बहिया आ गई है।

२ रोशन दिले आरिफ़ से फ़िज़ूँ है बदन उनका।
रंगीं है तबीयत कि तरह पैरहन उनका ॥ १ ॥

महरूम ही रह जाती है आग़ोशे-तमन्ना।
शर्म आके चुरा लेती है सारा बदन उनका ॥ २ ॥

है साफ़ निगाहों से अयाँ जोशे-जवानी।
आँखों से सम्हलता नहीं मस्ताना-पन उनका ॥ ३ ॥

यह शर्म के मानी हैं हया कहते हैं इसको।
आग़ोशे-तसव्वुर में न आया बदन उनका ॥ ४ ॥

इस ज़ुल्फ़ो-रुख़ो लब प उन्हें क्यों न हो नख़वत।
तातार है उनका हलब उनका यमन उनका ॥ ५ ॥

गुज़री हुई बातें न मुझे याद दिलाओ।
अब ज़िक्र ही जाने दो बस ऐ जाने मन उनका ॥ ६ ॥

दिलचस्प है आफ़त है क़यामत है ग़ज़ब है।
बात उनकी अदा उनकी क़द उनका चलन उनका ॥ ७ ॥

(१) उनका शरीर सिद्ध के हृदय से अधिक उज्ज्वल है। उनका वस्त्र किसी सहृदय के हृदय के समान रँगीला है।

(२) अपने प्रेमी को देखकर वह लज्जा से ऐसा सिकुड़ जाते हैं कि प्रेमी को उनका शरीर दिखाई ही नहीं देता और ऐसा जान पड़ता है कि लज्जा उनका शरीर चुरा ले गई और प्रेमी की उनको गोद में बैठाने की अभिलाषा पूरी न हुई।

(३) उनकी आँखों से जवानी की उमङ्ग स्पष्ट रूप से टपक रही है क्योंकि उनका मस्तानापन आज-कल इतना बढ़ा हुआ है कि आँखें उसका भार नहीं सँभाल सकतीं। दिल्ली के प्रसिद्ध कवि दाग़ ने ठीक कहा है--

हर अदा मस्ताना सर से पाँव तक छाई हुई ।
उफ़ तेरी काफ़िर जवानी जोश पर आई हुई ॥

(४) लज्जा इसको कहते हैं अर्थात् उनकी लज्जा इतनी बढ़ी-चढ़ी है और प्रेमी को देखते ही उनका शरीर ऐसा चुरा लेती है कि प्रेमी उनके रूप को अपने ध्यान की गोद में भी नहीं ले सकता ।

इस नज़ाकत का बुरा हो वो भले हैं तो क्या ।
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने ।

(५) उनको अपने केश, मुख और ओंठों पर क्यों न अभिमान हो जब कि इनके कारण तातार, हलब और यमन यह सब देश उनके अधिकार में आ गये हैं । कारण यह कि तातार कस्तूरी के लिए प्रसिद्ध है; कस्तूरी काली और महँकदार होती है । कस्तूरी ने यह रङ्ग और महँक उनके केशों से पाई है । हलब शीशे के लिए प्रसिद्ध है । शीशे की सारी चमक उनके (प्रियतम के) गालों से मिली है और यमन की सारी महिमा मानिक के कारण है और मानिक का लाल रङ्ग और चमक उनके (प्रियतम के) ओंठों से मिलती है ।

(६) हे प्रियवर, बीती हुई बातों को अब भूल जाओ क्योंकि उनके याद दिलाने से हृदय को कष्ट होता है ।

(७) उनकी बातें दिल को मोह लेती हैं, उनका हाव-भाव हृदय में प्रलय मचा देता है और उनकी चाल प्रेमी के हृदय को किंकर्तव्य-विमूढ़ कर देती है ।

३ इनायत तख़लिये में बज़्म में नाआश्ना होना ।
ग़ज़ब हैं यह अदायें दम ही भर में क्या से क्या होना ॥१॥
बुतों के पहिले बंदे थे मिसों के अब हुए ख़ादिम ।
हमें हर अहेद में मुशकिल रहा है बाख़ुदा होना ॥ २ ॥

जो दिक़त है तो यह है दिल नहीं है मेरे क़ब्ज़े में।
मुझे तसलीम है इरशादे-वाइज़ का बजा होना ॥ ३ ॥

.खुदा बनता था मंसूर इसलिए मुशकिल य पेश आई।
न खिंचता दार पर साबित अगर करता .खुदा होना ॥ ४ ॥

तरीक़े-मग़रिबी की क्या यही रोशनज़मीरी है।
.खुदा को भूल जाना और महवे मासेवा होना ॥ ५ ॥

(१) एकान्त में मिलने पर कृपा करना और भरी सभा में ऐसे बन जाना मानो कभी की जान-पहचान ही नहीं थी; उनकी ये बातें बड़ी विचित्र हैं कि दम भर में क्या से क्या हो जाते हैं। कदाचित् ग़ालिब का यह उपदेश उन्हें मालूम है—

दोस्ती का परदा है बेगानगी।
मुँह छिपाना हम से छोड़ा चाहिए ॥

(२) हमें तो सदा ईश्वर की भक्ति में कठिनाइयाँ ही पड़ती रहीं क्योंकि पहले तो बुतों* (सौन्दर्य की प्रतिमाओं)

---

* बुत मूर्ति को कहते हैं। यह संस्कृत शब्द बुद्ध का अपभ्रंश है। एक समय में बुद्ध-धर्म फ़ारिस और तुर्किस्तान इत्यादि में प्रचलित था और उन देशों में स्थान-स्थान पर महात्मा बुद्ध की प्रतिमाओं का पूजन हुआ करता था। बुख़ारा नगर में, जो कि विहार का अपभ्रंश है, बौद्धों का एक बहुत बड़ा विहार था जिसके खंडहर वहाँ अब तक पाये जाते हैं। जब मुसलमान-धर्म की उत्पत्ति हुई तो ये मूर्त्तियाँ तोड़ी जाने लगीं। मूर्त्तियाँ तो टूट गईं परन्तु यह शब्द बना रहा। आजकल उर्दू और फ़ारसी काव्य में बुत का अर्थ माशूक़ लगाया जाता है और उसके पूजनेवाले ब्राह्मण अथवा काफ़िर जो इसलाम-धर्म के विद्रोही हैं।

के दास बने रहे और अब उनसे छुट्टी मिली तो मिसों की सेवा करने लगे, अथवा उनकी प्रशंसा में कविता करने लगे। भगवद्भजन का अवकाश न पुराने और न नये रंग की कविता में मिला।

(३) उपदेशक महाशय जो कुछ कहते हैं उसे मैं जानता हूँ कि ठीक है, परन्तु मैं क्या करूँ, मेरा दिल ही मेरे बस में नहीं है। क्योंकि दिल तो अब किसी और के बस में हो गया है। यदि मेरे बस में होता तो मैं अवश्य उनका कथन मान लेता। यहाँ तो परवशता का यह हाल है।

कहा कि हम नहीं आने के याँ तो उसने "नज़ीर"।
कहा कि सोचो तो क्या आपसे तुम आते हो॥

(४) मंसूर के सूली पाने का कारण यह हुआ कि वह स्वयं ईश्वर बनता था। यदि वह अपना ईश्वर होना सिद्ध कर देता तो उसको यह विपत्ति न उठानी पड़ती। देखो उर्दू-काव्य-संबंधी परिभाषा।

(५) क्या यूरुपीय प्रथा की शिक्षा से यही ज्ञान प्राप्त होता है कि ईश्वर को भूल जाओ और ईश्वर के अतिरिक्त और जो कुछ है उसमें लीन हो जाओ?

४ गुंचये-दिल को नसीमे-इश्क़ ने वा कर दिया।
मैं मरीज़े-होश था मस्ती ने अच्छा कर दिया॥ १॥

दीन से इतनी अलग हद्दे-फ़िना से यूँ क़रीब।
इस क़दर दिलचस्प फिर क्यों रंगे-दुनिया कर दिया॥ २॥

क्या मेरे इक दिल को .खुश करने प वह क़ादिर नहीं ।
एक कुन से दो जहाँ को जिसने पैदा कर दिया ॥ ३ ॥

बे तुम्हारे देखे अब दम भर भी चैन आता नहीं ।
सच बताओ जाने-जाँ तुमने मुझे क्या कर दिया ॥ ४ ॥

सबके सब बाहर हुए वहमो-ख़िरद होशो-तमीज़ ।
ख़ानये-दिल में तुम आओ हमने परदा कर दिया ॥ ५ ॥

बे-ग़रज़ होकर मज़े से ज़िन्दगी कटने लगी ।
तर्क-.ख्वाहिश ने हमारा बोझ हलका कर दिया ॥ ६ ॥

रँग उड़ाना अहले-यूरुप का तो अकबर है मोहाल ।
मुफ़्त अपने आपको तुमने तमाशा कर दिया ॥ ७ ॥

(१) दिल की कली को प्रेम की हवा ने खिला दिया। मुझे चेत का रोग था; जब मैं प्रेम में अचेत हुआ तो मुझे जान पड़ा कि मेरा रोग दूर हो गया अर्थात् ईश्वर के प्रेम में मग्न हो जाने से मुझे संसार के झगड़ों से छुटकारा मिल गया और मेरे चित्त को शान्ति मिल गई।

एक और स्थान पर कहते हैं—

ग़मे-दहर से बचाता है बशर को मस्त रहना ।
मुझे शायरी न आती तो मैं बादा-नोश होता ॥

(२) धर्म से इतनी दूर और मृत्यु की सरहद के इतना पास! जब संसार का यह हाल है तो हे ईश्वर! तूने इसका रंग इतना चित्ताकर्षक क्यों बना दिया है कि हर-एक इसको देख कर ऐसा मोहित हो जाता है कि अपने बनानेवाले तक को भूल जाता है।

(३) मुसलमानों का यह मत है कि संसार की उत्पत्ति केवल "कुन" शब्द से हुई है। अकबर कहते हैं कि जिसने दोनों संसार केवल एक "कुन" शब्द का उच्चारण करके बना दिये, क्या उसमें इतनी शक्ति भी नहीं है कि मेरे नन्हें से दिल को शान्ति प्रदान कर सके ?

(४) हे प्रियतम ! बिना तुम्हारे दर्शन पाये हुए मैं एक-दम भी सुचित्त नहीं रह सकता। सच बताओ, तुमने क्या कर दिया जो मेरी ऐसी दशा हो गई। अमीर खुसरू का यह पद देखिए—

*चो शम्मा सोज़ाँ चो ज़र्रा हैराँ जे मेहर आँ मह बगश्तम आख़िर।
न नींद नैनाँ न अंग चैनां न आप आवैं न भेजैं पतियाँ॥

(५) तुम मेरे हृदय-मन्दिर में क्यों नहीं प्रवेश करते ? कदाचित् तुम परदानशीन हो, किसी के आगे नहीं होना चाहते। तो मैंने इसका भी प्रबन्ध कर दिया है क्योंकि मैंने तुम्हारे प्रेम में समझ, बुद्धि, विवेक इत्यादि सबको अपने हृदय-मन्दिर से निकाल दिया है; अब बेखटके चले आओ।

(६) इच्छाओं का परित्याग करने से जीवन सुख के साथ व्यतीत होने लगा क्योंकि इच्छाओं का बोझ सिर से उतर गया। मनुष्य को जितनी कम आवश्यकतायें होती हैं उतने ही कम झंझट होते हैं।

---

*उस चन्द्रमुखी के प्रेम में मैं दीपक की भांति जलने लगा और कण की भांति हैरान हो गया।

(७) हे अकबर, तुमने यूरुपवालों के रङ्ग उड़ाने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु सफल न हुए क्योंकि यूरुपवालों का रङ्ग उड़ाना असम्भव है। ऐसा करके तुम वृथा नक्कू बने।

ख़ुदा के होते बुतों को पूजूँ नहीं था मुतलक़ गुमान ऐसा।
मगर तुम्हें देख कर तो वल्लाह आ गया मुझको ध्यान ऐसा॥ १॥

वो छत प बेपरदा सो रहे हैं फ़लक क़मर से ये पूछता है।
बता तो तेरी नज़र से गुज़रा है कोई ख़ुशरू जवान ऐसा॥ २॥

भुला हि देती है जिसको दुनिया मिटा हि देता है जिसको गरदूँ।
अबस है इन्सान चाहता है जो नाम ऐसा निशान ऐसा॥ ३॥

भरा हुआ दिल जो ज़ौक से हो ख़ुदा की याद उसमें शौक़ से हो।
वहाँ के जलवों का पूछना क्या मकीन ऐसा मकान ऐसा॥ ४॥

दिलो-जिगर को फ़िराक़े-बुत में हवालये-चश्मेतर करूँगा।
कभी किसी न किया न होगा किनारये-गंग दान ऐसा॥ ५॥

(१) ईश्वर के होते हुए बुतों (सौन्दर्य की प्रतिमाओं) को पूजूँ, इस बात की तो मुझे पहले तनिक भी सम्भावना नहीं जान पड़ती थी परन्तु तुम-सी सौन्दर्य की प्रतिमा को देख कर, मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ कि, मुझको यह सम्भावना प्रतीत होने लगी कि अब तुम्हारे रूप पर मुग्ध होकर ईश्वर को भूल जाऊँगा।

(२) वह छत के ऊपर बेपरदा सो रहे हैं जिससे आकाश की दृष्टि उनकी छवि पर पड़ रही है। उनका सौन्दर्य देख कर आकाश चन्द्रमा से पूछता है कि हे चन्द्रमा! तू तो सारी पृथ्वी की परिक्रमा किया करता है, यह तो बता कि तूने कोई ऐसा सुन्दर नवयुवक कहीं देखा है? आशय यह है कि चन्द्रमा आकाश में सबसे सुन्दर है

परन्तु कवि के प्रियतम की सुन्दरता को देख कर आकाश चन्द्रमा की सुन्दरता को भूल जाता है; ठीक है।

रुखे-शम्सो-क़मर भी उसको पीले-से नज़र आये।
जो तेरी शक्ल को इक बार ऐ जाने-जहाँ देखे॥

(३) जब मनुष्य की यह गति है कि उसका नाम संसार भुला देता है और उसका चिह्न आकाश मिटा देता है तो ऐसा नाम पैदा करने और संसार में ऐसा चिह्न छोड़ जाने की अभिलाषा वृथा है।

(४) जब हृदय-मन्दिर ईश-प्रेम से भरा हो और उसमें ईश्वर का ध्यान वास करता हो तो फिर ऐसे मन्दिर और ऐसे रहनेवाले के होते हुए इसकी शोभा का बखान कहाँ तक किया जा सकता है।

(५) उस सौन्दर्य की प्रतिमा के विरह में मैं हृदय और कलेजे को आँसुओं के निछावर कर दूँगा। जैसा मैं अपने आँसुओं की धारा के किनारे दान करनेवाला हूँ वैसा किसी ने गङ्गाजी के किनारे भी दान न किया होगा।

६ जब यास हुई तब आहों ने सीने से निकलना छोड़ दिया।
अब ख़ुश्क मिज़ाज आँखें भी हुईं दिल ने भी मचलना छोड़ दिया॥१॥

बदली वो हवा गुज़रा वो समाँ वह राह नहीं वह लोग नहीं।
तफ़रीह कुजा और सैर कहाँ घर से भी निकलना छोड़ दिया॥२॥

वह सोज़-गुदाज़ इस महफ़िल में बाक़ी न रहा अँधेर हुआ।
परवानों ने जलना छोड़ दिया शमओं ने पिघलना छोड़ दिया॥ ३ ॥

अल्लाह की राह अब तक है खुली आसारो-निशाँ सब क़ायम हैं।
अल्लाह के बन्दों ने लेकिन उस राह में चलना छोड़ दिया॥ ४ ॥

हर गाम प चन्द आँखें निगराँ हर मोड़ प इक लैसंस तलब।
उस पार्क में आख़िर ऐ अकबर हमने तो टहलना छोड़ दिया ॥५॥

(१) जब से पूर्ण निराशा हो गई तब से आहों ने हृदय से निकलना छोड़ दिया। अब आँखों से भी आँसू नहीं निकलते और हृदय भी किसी बात पर नहीं मचलता। कारण यह है, जब मनुष्य को पूर्ण निराशा हो जाती है तब उसकी घबराहट मिट जाती है। महाकवि ज़ौक़ ने ठीक कहा है—

अगर उमीद न हमसाया हो तो ख़ानये-यास।
बहिश्त है हमें आराम जावेदाँ के लिए॥

भावार्थ—यदि आशा का पड़ोस न हो तो निराशा का घर हमें सर्वदा के लिए स्वर्ग है। दूसरे, तीसरे और चौथे पद में कवि ने लोगों की रहन-सहन में परिवर्तन का चित्र खींचा है। पाँचवें पद में कम्पनी-बाग़ घूमनेवालों की दुर्दशा का वर्णन है। इसी आशय का आपका एक पद और भी है।

मग़रिबी चक्कर में तफ़रीहें भी हैं ईज़ा के साथ।
इमतियाज़ इसका नहीं यह पार्क है या जेल है॥

भावार्थ—पश्चिमी चक्कर में पड़नेवाले को दिल-बहलाव में भी अड़चनें पड़ती हैं। यदि यह पार्क में घूमने जाय तो वहाँ पुलिसवालों की ऐसी तीव्र दृष्टि उस पर पड़ती है कि यह जानना कठिन हो जाता है कि वह पार्क में घूम रहा है कि जेल में बन्द है।

७ यह सुस्त है तो फिर क्या वह तेज़ है तो फिर क्या।
* नेटिव जो है तो फिर क्या अँगरेज़ है तो फिर क्या॥ १॥

---

*नेटिव (Native)=देशी।

हर रङ्ग में हैं पाते बन्दे ख़ुदा के रोज़ी।
है पेन्टर* तो फिर क्या रँगरेज़ है तो फिर क्या ॥ २ ॥
जैसी जिसे ज़रूरत वैसी ही उसकी चीज़ें।
याँ तख़्त है तो फिर क्या वाँ मेज़ है तो फिर क्या ॥ ३ ॥
कैसी ही सल्तनत† हो सब ख़ुश न रह सकेंगे।
गर तुर्क है तो फिर क्या अँगरेज़ है तो फिर क्या ॥ ४ ॥
दोनों ही मर रहे हैं दोनों का हश्र होगा।
नेटिव जो है तो फिर क्या अँगरेज़ है तो फिर क्या ॥ ५ ॥

इन थोड़े से अपने ढङ्ग के निराले पदों में अकबर ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि ऊपर से देखने में चाहे जितना अन्तर जान पड़े परन्तु वास्तव में संसार में सबकी दशा सामान्य है। चौथा पद विशेष ध्यान देने योग्य है।

८ ख़ुदा से मुनकिर नबी से ग़ाफ़िल कहाँ के पीर और इमाम साहब।
उन्हीं के दर पर झुकी है ख़िलक़त सलाम साहब सलाम साहब ॥१॥
कहाँ की पूजा नमाज़ कैसी कहाँ की गङ्गा कहाँ का ज़मज़म।
डटा है होटल के दर प हर इक हमें भी दो एक जाम साहब ॥२॥
हज़ार समझाते हैं वो सबको कि सब नहीं नामदार होते।
करो ख़मोशी व नेकबख़्ती से जाके तुम घर का काम साहब ॥३॥
मगर नहीं मानता है कोई हरेक की यह इलतेजा है उनसे।
मुझे भी तुम छाप दो कहीं पर मेरा भी हो जाय नाम साहब ॥४॥
मेरी तुम्हारी नहीं निभेगी सिधारता हूँ मैं अब यहाँ से।
सलाम साहब सलाम साहब सलाम साहब सलाम साहब ॥५॥

इन पदों में सरकारी नौकरी और पदवियों के उत्सुकों की हँसी उड़ाई है। अर्थ स्पष्ट है।

---

* पेन्टर (Painter) = रँगरेज़। † सल्तनत = राज्य।

६ कम बिज़ाअत को जो इक ज़र्रा भी होता है फ़रोग़ ।
ख़ुदनुमाई को वो उड़ चलता है जुगनू की तरह ॥ १ ॥
नीची नज़रों से मेरे दिल को वो करते हैं शहीद ।
ज़ुल्म पोशीदा किया करते हैं जादू की तरह ॥ २ ॥
टुकड़े मेरे दिले-रोशन के जो देखे तो कहा ।
क्या गले यह मेरे पड़ जायँगे जुगनू की तरह ॥ ३ ॥
जामे-मै ग़ैर को दो मैं न करूँगा शिकवा ।
रंज की बात है पी जाऊँगा आँसू की तरह ॥ ४ ॥
गुलशने-दहेर में अकबर का कलामे-रङ्गीं ।
खिल गया गुल की तरह फैल गया बू की तरह ॥ ५ ॥

(१) कोई छोटा पुरुष यदि एक कण भर भी उन्नति करता है तो वह अपने को दिखाने के लिए जुगनूँ की भाँति उड़ चलता है। सम्राट अकबर के दरबार के कवि रहीमख़ाँ ख़ानख़ाना ने भी अपने एक दोहे में यही भाव दर्शाया है—

जो रहीम ओछो बढ़ै तो अतिही इतराय ।
प्यादा से फ़रज़ी भयो टेढ़ो टेढ़ो जाय ॥

(२) वह मेरे हृदय को नीची निगाहों से घायल करते हैं, मानो जादू की भाँति छिप कर अत्याचार किया करते हैं। क्योंकि—

ठीक से नावके-मिज़गाँ* वो उठाते भी नहीं ।
चोट लगती है मेरे दिल प निशाँ होता है ॥

(३) जब उन्होंने मेरे चमकते हुए हृदय के टुकड़े देखे तो (घबड़ा कर) कहने लगे कि क्या यह जुगनू (एक

---

*नावके-मिज़गाँ—बरौनियों के बाण ।

गहना) की भाँति मेरे गले पड़ जायँगे। एक और स्थान पर कहते हैं—

दिले-पुरदाग़* का अरमाँ कि गले उनको लगायँ।
उनको यह डर कि गले का ये कहीं हार न हो॥

(४) मदिरा का प्याला मेरे प्रतिद्वन्द्वी को दे दो; मैं कुछ न कहूँगा। इस दुःख की बात को मैं आँसू की भाँति पी जाऊँगा।

(५) फुलवाड़ी-रूपी संसार में अकबर का रस-पूर्ण काव्य गुलाब के फूल की भाँति खिल गया और महक की भाँति फैल गया। इसी धुन में एक और कविता भी है। उसके भी कुछ पद देखिए।

१० कूदते फिरते हैं यह बाग़ में मल्हू की तरह।
बाग़बाँ दुबके हुए बैठे हैं उल्लू की तरह॥ १॥
इन नई रोशनीवालों से नहीं है कुछ फ़ैज़।
शबे-तारीक में चमका करें जुगनूँ की तरह॥ २॥
आगईं ज़ुल्फ़े-मिस्राँ ज़ुल्फ़े-बुताँ पर ग़ालिब।
पेच होते हैं बहम अफ़ई व रासू की तरह॥ ३॥
अकबर इस अहेद में लो सब्रो तहम्मुल से जो काम।
इससे बेहतर है कि ग़ुस्सा करो बाबू की तरह॥ ४॥

पहले पद का अर्थ स्पष्ट है। दूसरे पद में कवि ने नई रोशनी की उपमा जुगनूँ से दी है जिसकी चमक से कहीं ऐसा प्रकाश नहीं होता कि किसी को लाभ पहुँचे। एक और स्थान पर कहते हैं—

ये जुगनूँ भी नई ही रोशनी से मिलते-जुलते हैं।
अँधेरा ही रहा जङ्गल में गो यह जा बजा चमके॥

---

*प्रेमी का चोटियल हृदय।

तीसरे पद का अर्थ पहिले दिया जा चुका है। चौथे पद में बाबू का अर्थ निर्बल अथवा डरपोक मनुष्य से हो सकता है।

११ बनोगे ख़ुसरवे इक़लीमे-दिल शीरीं-ज़बाँ होकर।
जहाँगीरी करेगी यह अदा नूरे-जहाँ होकर॥ १॥
मजाले गुफ़्तगू किसको फ़ना का जब पयाम आया।
हुई ख़ामोश आख़िर शम्म भी आतिश-ज़बाँ होकर॥ २॥
क़रीबे ख़त्म थी मजलिस कि आ निकले इधर वह भी।
ग़रज़ वाइज़ की मेहनत रह गई सब रायगाँ होकर॥ ३॥
निगाहें मिल गई थीं मेरी उनकी रात महफ़िल में।
ये दुनिया है बस इतनी बात फैली दास्ताँ होकर॥ ४॥
बहुत मुश्किल हुआ है ख़त्म करना मुझको नामे का।
वफ़ूरे शौक़ से रुकता नहीं ख़ामा रवाँ होकर॥ ५॥

(१) शीरीं[1] ज़बाँ होकर अर्थात् मीठी बातें करने से तुम हृदय-रूपी देश के ख़ुसरो[2] अर्थात् राजा बन जाओगे। तुम्हारा यह गुण नूरजहाँ[3] अर्थात् संसार को प्रकाश करनेवाली ज्योति की भाँति जहाँगीरी[4] अर्थात् विश्व-विजय करेगा।

(२) जब मृत्यु का निमन्त्रण आता है तो किसमें इतनी शक्ति है कि बात कर सके। दीपक को देखो, वह भी लाल पीला होकर चुप हो जाता है।

---

१ शीरीं = मीठा — ख़ुसरू की रानी का नाम।
२ ख़ुसरू = ईरान का एक बादशाह; अर्थात् राजा।
३ नूरजहाँ = जहाँगीर की प्रसिद्ध रानी का नाम।
४ जहाँगीर = भारत का एक मुग़ल-सम्राट्, अकबर का पुत्र।

(३) धर्मशिक्षक की सभा समाप्त होने को थी कि वह अर्थात् माशूक़ भी इधर से आ निकले। परिणाम यह हुआ कि उनको देखकर लोग ऐसे मोहित हो गये कि उपदेशक महाशय का सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया।

(४) कल रात को महफ़िल में केवल इतना हुआ था कि मेरी और प्रियतम की आँखें चार हो गई थीं। संसार को माया को तो देखो कि बस इतनी सी बात का लोगों ने बतङ्गड़ कर दिया।

(५) मुझको प्रेम-पत्र का समाप्त करना बहुत कठिन हो गया है। कारण यह कि उनको पत्र लिखने में लेखनी को ऐसा आनन्द आ रहा है कि रुकती ही नहीं।

१२ तअल्लुक़ आशिक़ो-माशूक़ का तो लुत्फ़ रखता था।
मज़े अब वह कहाँ बाक़ी रहे बीबी-मियाँ होकर ॥ १ ॥

न थी मुतलक़ तवक़्क़ो बिल बना कर पेश कर देंगे।
मेरी जाँ लुट गया मैं तो तुम्हारा मेहमाँ होकर ॥ २ ॥

हक़ीक़त में मैं बुलबुल हूँ मगर चारे की ख़्वाहिश है।
बना हूँ मेम्बरे-कौंसिल यहाँ मिट्ठू मियाँ होकर ॥ ३ ॥

रक़ीबे-सिफ़ला-ख़ूँ ठहरे न मेरी आह के आगे।
भगाया मच्छरों को उनके कमरे से धुआँ होकर ॥ ४ ॥

(१) जब तक पुरुष-स्त्री में प्रेमी और प्रेमिका का सम्बन्ध था तब तक दोनों को मिलन में एक विचित्र आनन्द आता था और दोनों का यह विचार था कि विवाह होने पर जीवन बड़े आनन्द से व्यतीत होगा परन्तु विवाह होने पर मिलन के मज़े न रह गये। इस पद में यूरोपियन

विवाह की प्रथा पर आक्षेप है। तात्पर्य यह है कि यूरोप की विवाह की प्रथा देशी विवाहों की अपेक्षा सुखमयी नहीं होती।

(२) तुम्हारा अतिथि होने पर मुझे यह बिलकुल आशा न थी कि जो कुछ तुम मेरे आदर-सत्कार में व्यय करोगे उसका "बिल" अर्थात् लेखा बना कर मेरे सामने धर दोगे। हे प्रियतम ! मैं तुम्हारा अतिथि होकर लुट गया।

(३) यदि वास्तव में पूछो तो मुझमें बुलबुलों के से गुण भरे हुए हैं परन्तु चारे अथवा पेट पालने की इच्छा से मैं मिट्ठू मियाँ अर्थात् तोता बनकर—जो केवल अपने पालनेवाले के सिखाये हुए शब्द कहता है—कौंसिल का मेम्बर बन गया हूँ।

(४) नीच प्रतिद्वन्द्वी मेरी हाय के सामने न ठहर सके क्योंकि वह मच्छरों की भाँति उनके कमरे में भिनभिना रहे थे। जब उनको देख कर मैंने हाय की तो मेरे मुँह से ऐसा धुवाँ निकला कि वह सब उड़ गये। यह हाथ का धुवाँ न केवल प्रतिद्वन्द्वियों वरन् कभी-कभी प्रियतम के भी नाक में दम कर देता है। यह पद देखिए—

कूचये-यार में जाता हूँ जो आहें भरता।
कहते हैं—हट, तेरे आने से धुआँ होता है॥

१२ मज़हब का हो क्योंकर इल्मो-अमल दिल ही नहीं भाई एक तरफ़।
किरकिट की खिलाई एक तरफ़, कालिज की पढ़ाई एक तरफ़ ॥१॥
क्या ज़ौके-इबादत हो उनको, जो मिस के लबों के शैदा हैं।
हलुआये बिहिश्ती एक तरफ़, होटल की मिठाई एक तरफ़ ॥ २ ॥

ताऊनो तप और खटमल मच्छर सब कुछ हैं पैदा कीचड़ से।
बम्बे की रवानी एक तरफ़, और सारी सफ़ाई एक तरफ़ ॥ ३ ॥

क्या काम चले क्या रङ्ग जमे क्या बात बने कौन इसकी सुने।
है अकबर बेकस एक तरफ़, और सारी ख़ुदाई एक तरफ़ ॥ ४ ॥

(१) हे भाई, आजकल के नवयुवकों का ध्यान मज़हब की ओर क्योंकर आकर्षित हो जब उनका चित्त ही एकाग्र नहीं है। एक ओर किरकिट की खिलाई और एक ओर कालिज की पढ़ाई। इन दोनों के कारण उन्हें और कुछ सोचने का अवकाश ही कब मिलता है।

(२) जो लोग मिस के ओंठों के प्रेमी हैं उनको ईश्वर का ध्यान करने की इच्छा कहाँ रह जाती है। कारण यह है कि ईश्वर का ध्यान करने से स्वर्ग में हलुआ खाने को मिलता परन्तु उस हलुए में वह स्वाद कहाँ जो होटल में मिस के साथ बैठके मिठाई खाने में आता है।

(३) म्युनिसिपेलिटी ने घर-घर बम्बे लगा दिये हैं और बीमारियों को रोकने के लिए सड़कों की सफ़ाई करती है। यह व्यर्थ है। केवल सफ़ाई से बीमारियाँ नहीं रुक सकतीं क्योंकि बीमारियाँ जैसे ताऊन, जूड़ी और उनकी जड़ खटमल, मच्छर इत्यादि कीचड़ से पैदा होते हैं और कीचड़ का कारण पानी का बम्बा है।

(४) अर्थ स्पष्ट है।

१४ ख़ुशी बहुत है जहाँ में हमारे घर न सही।
मलूल क्यों रहें दुनिया के इन्तिज़ाम से हम ॥ १ ॥

ख़ुशामदी को मुबारक हो रात दिन चक्कर ।
यहाँ तो रखते हैं बस काम अपने काम से हम ॥ २ ॥

अब और चाहिए नेटिव के वास्ते क्या बात ।
यही बहुत है मुशर्रफ़ हुए सलाम से हम ॥ ३ ॥

फ़लक के दौर में हारे हैं बाज़िये इक़बाल ।
अगरचे शाह थे बदतर हैं अब ग़ुलाम से हम ॥ ४ ॥

लिये हैं हाथ में नामा खड़ा है चुप क़ासिद ।
पता है घर का न वाक़िफ़ हैं उनके नाम से हम ॥ ५ ॥

छड़ी उठाई ख़मोशी से चल दिये अकबर ।
सफ़र में रखते नहीं काम टीमटाम से हम ॥ ६ ॥

(१) संसार में बहुत लोग सुखी हैं। यदि एक हम सुखी नहीं हैं तो हमको संसार के कारबार से शोक-ग्रस्त न होना चाहिए।

(२) चापलूसों को रात-दिन अधिकारियों के घरों की ओर फेरी लगाना मुबारक हो। हम तो केवल अपने काम से काम रखते हैं।

(३) हम सरीखे नेटिव अर्थात् काले आदमी के लिए अब और इससे बढ़कर सम्मान क्या चाहिए। यही बहुत है कि हमको उन्हें सलाम करने का गौरव प्राप्त हो गया।

(४) काल-चक्र में पड़ कर हमने स्वयं अपनी प्रतिष्ठा खो दी। एक समय वह था कि हम राजा थे परन्तु अब हमारी दशा दासों से भी बुरी है।

(५) हम अपने हाथ में प्रेमपत्र लिये हैं और सामने दूत चुप-

चाप खड़ा है। कुछ समझ में नहीं आता क्या किया जाय। न तो उनके घर का पता मालूम है और न उनका नाम ही।

१५ मुँह देखते हैं हजरत अहबाब पी रहे हैं।
क्या शेख़ इसलिए अब दुनिया में जी रहे हैं॥ १॥
मैंने कहा जो उससे ठुकरा के चल न ज़ालिम!
हैरत में आके बोला—क्या आप जी रहे हैं॥ २॥
अहबाब उठ गये सब अब कौन हमनशीं हो।
वाक़िफ़ नहीं हैं जिनसे बाक़ी वही रहे हैं॥ ३॥
परियों के आशिकों को सौदा हुआ मिसों का।
जो फाड़ते थे जामा अब कोट सी रहे हैं॥ ४॥

(१) मित्रवर्ग मद्यपान कर रहे हैं और शेख़ महाशय उनका मुँह ताक रहे हैं। क्या शेख़जी अब इसी लिए संसार में जी रहे हैं कि दूसरों का सुख देख-देख कर तरसा करें?

(२) जब मैंने अपने प्रियतम से कहा कि हे अत्याचारी! ठोकर मारता हुआ न चल, तो उसको बड़ा विस्मय हुआ और कहने लगा कि हैं! क्या आप अभी जीते हैं?

(३) मित्रवर्ग इस संसार से उठ गये, अब कौन हमारे साथ बैठे; अब वही बचे हैं जिनसे हम परिचित नहीं हैं।

(४) जो पहले परियों के प्रेमी थे अब उनको मिसों का उन्माद हो गया है। जो लोग पहले उन्माद में अपने देशी कपड़े फाड़ा करते थे परन्तु अब मिसों को लुभाने के लिए कोट सी रहे हैं। समय के साथ-साथ अब प्रेम करने के ढङ्ग में भी परिवर्तन हो गया।

१६ साँस लेते हुए भी डरता हूँ ।
यह न समझें कि आह करता हूँ ॥ १ ॥
बहरे-हस्ती में हूँ मिसाले-हुबाब ।
मिट ही जाता हूँ जब उभरता हूँ ॥ २ ॥
इतना आज़ादी भी ग़नीमत है ।
साँस लेता हूँ, बात करता हूँ ॥ ३ ॥
शेख़ साहब ख़ुदा से डरते हैं ।
मैं तो अँग्रेज़ों ही से डरता हूँ ॥ ४ ॥
आप क्या पूछते हैं मेरा मिज़ाज ।
शुक्र अल्लाह का है मरता हूँ ॥ ५ ॥
यह बड़ा ऐब मुझमें है अकबर !
दिल में जो आये कह गुज़रता हूँ ॥ ६ ॥

और पदों का अर्थ स्पष्ट है. दूसरे पद में कवि कहता है कि भवसागर में मेरा अस्तित्व केवल एक बुलबुले के समान है क्योंकि जहाँ कुछ उठने का प्रयत्न किया कि बुलबुले के समान फूट कर मिट जाता हूँ। आतिश का यह पद देखिए—

हुबाब आसा में दम भरता हूँ तेरी आशनाई का ।
निहायत ग़म है इस क़तरे को दरिया की जुदाई का ॥

१७ हिस ख़राबी का नहीं बाक़ी रहा ग़म क्या करें ।
मर्गे-दिल से हो गई तसकीन, मातम क्या करें ॥ १ ॥
शेख़ के आगे न मै पीना, नहीं अज़राहे-ख़ौफ़ ।
गरदने-मीना को उसके सामने ख़म क्या करें ॥ २ ॥
मेरी यह बेचैनियाँ और उनका कहना नाज़ से ।
हँस के तुमसे बोलते हैं और अब हम क्या करें ॥ ३ ॥
कुछ मज़ा गेहूँ का कुछ हौवा के कहने का ख़याल ।
आप ही कहिए कि इस मौक़े पर आदम क्या करें ॥ ४ ॥

(१) जब अपनी दुर्दशा के अनुभव करने की शक्ति ही जाती रही तो हमको उस पर शोक करने से क्या लाभ! दिल के इस प्रकार ठंढे हो जाने से शान्ति मिल गई। अब शोक करने से क्या लाभ?

(२) शेख़ के आगे मद्य पान न करना, इसलिए नहीं कि उससे कोई डर है। बात यह है कि शेख़ सरीखे तुच्छ मनुष्य के आगे सुराही की गरदन झुकाने से क्या लाभ!

(३) मेरी यह घबराहट और उस पर उनका यह नाज़ से कहना कि तुमसे हँस के तो बोलते हैं और भला अब इससे अधिक हम क्या करें जिससे तेरा चित्त शान्त हो।

(४) कुछ गेहूँ का स्वाद और कुछ अपनी स्त्री होवा के कहने का प्रभाव। इस दशा में आदम यदि गेहूँ न खा लेते तो क्या करते।

१८ ये फ़क़त नहीं है काफ़ी कि मेरा मिज़ाज पूछें।
मेरे दर्द-दिल को देखें मेरी एहतियाज पूछें॥ १॥

था ज़माना कल मोवाफ़िक़ मुझे पूछता था हर इक।
मैं तो उनको दोस्त समझूँ कि जो मुझको आज पूछें॥ २॥

तु ख़ुद उनको लिख अरीज़ा न कर इन्तेज़ार अकबर।
उन्हें क्या ग़रज़ है ऐसी कि तेरा मिज़ाज पूछें॥ ३॥

(१) केवल इतना काफ़ी नहीं है कि जब मैं उनसे मिलने जाऊँ तो वे मेरी कुशल-क्षेम पूछ के रह जायँ। यदि उनको वास्तव में मेरे साथ सहानुभूति करनी है तो उन्हें चाहिए कि मेरे दुःखों को देखें और मेरी आवश्यकताओं को पूछें।

(२) कल जब समय मेरे अनुकूल था तो हर एक मुझको पूछता था परन्तु मैं तो केवल उन्हीं को अपना मित्र समझूँगा जो मुझको आज विपत्ति के समय में पूछेंगे। क्योंकि सच्चा मित्र वही है जो विपत्ति के समय काम आवे।

(३) हे अकबर! अब और आसरा न देख, उनको चिट्ठी लिख। भला उन्हें क्या पड़ी है जो तेरा हाल पूछें!

११ हस्ती के शजर में जो ये चाहो कि चमक जाव।
कच्चे न रहो बल्कि हरेक रङ्ग में पक जाव ॥ १ ॥
मैंने कहा—क़ायल मैं तसव्वुफ़ का नहीं हूँ।
कहने लगे—इस बज़्म में आओ तो थिरक जाव ॥ २ ॥
मैंने कहा—कुछ ख़ौफ़ कलक्टर का नहीं है।
कहने लगे—आजायँ अभी वह तो दबक जाव ॥ ३ ॥
मैंने कहा—वरज़िश की कोई हद भी है आख़िर।
कहने लगे—बस इसकी यही हद है कि थक जाव ॥ ४ ॥
मैंने कहा—अफ़कार से पीछा नहीं छुटता।
कहने लगे—तुम जानिबे-मैख़ाना लपक जाव ॥ ५ ॥
मैंने कहा—अकबर में कोई रङ्ग नहीं है।
कहने लगे—शेर उसके जो सुन लो तो फड़क जाव ॥ ६ ॥

(१) यदि तुम चाहते हो कि जीवन-रूपी वृक्ष में चमक जाव तो तुम्हें चाहिए कि हर एक रंग में पक्के हो जाव; किसी रंग में कच्चे न रहो।

(२) जब मैंने कहा कि मैं सूफ़ियों के मत को नहीं मानता

तो वह कहने लगे कि यदि तुम इस सभा में कभी आओ तो हर्षोन्माद के कारण थिरकने लगो ।

(३) ख़ौफ़ = भय ।

(४) वरज़िश = व्यायाम ।

(५) अफ़कार = चिन्तायें । इस पद का तात्पर्य यह है कि गुरु के मदिरा के समान मस्त करनेवाले उपदेशों को सुनने ही से सांसारिक यातनायें दूर हो सकती हैं ॥

२० जब मैं कहता हूँ कि या अल्लाह मेरा हाल देख ।
हुक्म होता है कि अपना नामए-आमाल देख ॥ १ ॥

सोच तुझको है अगर आइन्दा पालीटिक्स की ।
ले नतायज से मदद और हिस्टरी में फ़ाल देख ॥ २ ॥

शौक़े तूलोपेच इस ज़ुल्मत-कदे में है अगर ।
बात बंगाली की सुन बंगालिनों के बाल देख ॥ ३ ॥

हुस्ने-मिस पर कर नज़र मज़हब अगर जाता है-जाय ।
क़द्रदाँ को निर्ख़ की क्या बहस, अकबर माल देख ॥ ४ ॥

(१) जब मैं कहता हूँ कि हे ईश्वर ! मेरी (बिगड़ी हुई) दशा को देख, तो ईश्वर की ओर से यह आज्ञा होती है कि तू अपने कर्मों की ओर दृष्टि कर । यह तेरे ही कर्मों का फल है ।

(२) यदि तुझको भविष्य की पालीटिक्स अर्थात् राजनैतिक स्थिति का कुछ सोच है तो इतिहासों को पढ़ और भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक घटनाओं के परिणामों की ओर ध्यान दे ।

(३) यदि तुझको इस अँधेरे घर अर्थात् संसार में लम्बी और

लच्छेदार वस्तुओं से रुचि है तो तुझको चाहिए कि बंगालियों की बातें सुन और बंगालिनियों के बाल देख; क्योंकि इन दोनों से अधिक लम्बी और लच्छेदार वस्तुएँ संसार में नहीं मिल सकतीं।

(४) यूरोपियन नवयौवनाओं के सौन्दर्य्य को देख, यदि ऐसा करने से धर्म जाता है तो उसकी चिन्ता न कर। क्योंकि हे अकबर! गुण-ग्राहकों को मूल्य (धर्म) की कुछ चिन्ता न करनी चाहिए, केवल माल ही की ओर दृष्टि रखनी चाहिए।

२१ मुरीदे दहेर हुए वज़ा मग़रबी कर ली।
नये जनम की तमन्ना में ख़ुदकुशी कर ली॥ १॥

निगाहे नाज़े-बुताँ पर निसार दिल को किया।
ज़माना देख के दुश्मन से दोस्ती कर ली॥ २॥

जो हुस्ने-बुत की जगह हुक्मे-मिस हुआ क़ायम।
तो इश्क़ छोड़ के हमने भी नौकरी कर ली॥ ३॥

ज़वाले क़ौम की तो इब्तिदा वही थी कि जब।
तिजारत आपने की तर्क; नौकरी कर ली॥ ४॥

(१) सांसारिक सुखों की आशा में पश्चिमी रहन-सहन ग्रहण कर लेना ऐसा ही है जैसे नये जन्म की अभिलाषा में आत्मघात कर लेना।

(२) सौन्दर्य्य की प्रतिमाओं के कटाक्ष पर अपने दिल को अर्पण कर दिया; हमने समयानुसार (दिल के) वैरी से मित्रता कर ली।

(३) जब हमारे हृदय पर देशी सौन्दर्य्य की प्रतिमाओं के प्रेम के स्थान पर विलायती नवयौवनाओं का हुक्म चलने

लगा, तो हम भी पुरानी इश्क़बाज़ी छोड़ कर (मिसों के) सेवक बन गये।

(४) जाति की अवनति का आरम्भ उसी समय से हुआ जब से आप व्यापार आदि छोड़ कर नौकरी के फेर में पड़ गये।

२२ तेरे सहरे नज़र से हुआ य जुनूँ मेरे दिल की तो इसमें ख़ता ही न थी।
तेरे कूचे में आके मैं बैठ गया बजुज़ इसके कुछ और दवा ही न थी ॥१॥
हुई तब्अ जो मायले-दामे-बला मैं तुम्हारी ही ज़ुल्फ़े सियह में फँसा।
मेरे दामने-दिल को जो खींच सके कोई और तो ऐसी बला ही न थी ॥२॥
किया सोहबते-ग़ैर ने क़हर ग़ज़ब कोई मुझको उमीद रही नहीं अब।
दमे-चन्द को मुझसे मिले भी जो कल व नज़र ही न थी व अदा ही न थी ॥३॥
न निभी तो फिर इसमें थी किसकी ख़ता-ये गिला है मेरी ही तरफ़ से बजा।
मेरे इश्क़ का रंग तो ख़ूब रहा मगर आपमें बूये-वफ़ा ही न थी ॥४॥
ग़मे हिज्र में जी से गुज़र जो गया तो ये अकबरे-ज़ार ने ख़ूब किया।
कि इलाजे-फ़िराक़ तो था ही यही बजुज़ इसके कुछ और दवा ही न थी ॥५॥

(१) तेरे कटाक्ष के जादू से मुझको यह उन्माद हो गया है, मेरे दिल का इसमें कुछ अपराध न था। मैं तेरी गली में आकर बैठ गया क्योंकि इसके अतिरिक्त इस उन्माद को दूर करने का और कोई उपाय ही न था।

(२) जब हृदय आपत्तिरूपी जाल की ओर आकर्षित हुआ तो मैं तुम्हारे ही काले केशों के जाल में फँस गया, क्योंकि तुम्हारे केशों के अतिरिक्त और किसी में इतनी शक्ति न थी कि मेरे दिल को अपनी ओर आकर्षित कर सके।

(३) प्रतिद्वन्द्वी की संगति ने ऐसा अनर्थ कर दिया कि अब मुझे उनके पाने की कोई आशा न रही। कल मुझे जब वह थोड़ी देर के लिए मिले भी तो ऐसे बदले हुए जान पड़े कि उनमें कोई पहले की-सी बात ही न देखने में आई।

(४) यदि मेरी और उनकी न निभी तो इसमें किसका अपराध था? उन्हीं का, क्योंकि मेरे प्रेम के रङ्ग में तो कोई कमी आने नहीं पाई; केवल आप ही ने प्रतिज्ञाओं का पालन नहीं किया।

(५) विरह के दुख में दुखी अकबर ने प्राण दे दिये सो ठीक ही किया क्योंकि विरह के रोग को दूर करने की मृत्यु के अतिरिक्त और कोई ओषधि ही न थी।

२३/ कुछ तर्ज़े-सितम भी है कुछ अन्दाज़े-वफ़ा भी।
खुलता नहीं हाल उनकी तबीयत का ज़रा भी॥ १॥
दाढ़ी प भी वाइज़ की है, तलुओं प भी उनके।
चालाक मेरे हाथों की सूरत है हिना भी॥ २॥
बाक़ी न रहा ख़ून भी अब मेरे जिगर में।
अफ़सोस हुआ चाहती है तर्क ग़िज़ा भी॥ ३॥
चुप रहता हूँ तो कहते हैं उल्फ़त नहीं तुझको।
करता हूँ ख़ुशामद तो य फ़रमाते हैं जा भी॥ ४॥
सुनते हैं कि अकबर ने किया इश्क़े-बुताँ तर्क।
इस बात से तो ख़ुश न हुआ होगा ख़ुदा भी॥ ५॥

(१) उनमें कुछ अत्याचार के भी ढंग दिखाई देते हैं और कुछ कृपा के भी। उनकी तबीयत की दशा तनिक भी समझ में नहीं आती।

(२) मेंहदी भी मेरे हाथों की तरह चालाक है क्योंकि यह बूढ़े उपदेशक की दाढ़ी पर भी दिखलाई देती है और माशूक़ के तलुए पर भी। मेरे हाथों की तरह चालाक है—इसका यह आशय है कि जिस प्रकार मेरा हाथ कभी चापलूसी में माशूक़ के तलुओं को छूता है और कभी बूढ़े उपदेशक से चिढ़ कर उसकी दाढ़ी पकड़ लेता है उसी प्रकार मेंहदी भी कभी माशूक़ के तलुओं की और कभी उपदेशक की दाढ़ी की शोभा बढ़ाती है।

(३) मेरे कलेजे में अब रोते-रोते रक्त भी नहीं रह गया। शोक! अब खाना-पीना छूटनेवाला है। किसी कवि ने ठीक कहा है—

ख़ूने-दिल पीने को और लख़्ते-जिगर खाने को।
यह ग़िज़ा मिलती है जानां तेरे दीवाने को॥

(४) यदि मैं चुप रहता हूँ तो कहते हैं कि तुझको मेरे साथ प्रेम नहीं है; और यदि चापलूसी की बातें करता हूँ तो झिड़क देते हैं।

(५) सुनते हैं कि अकबर ने सौन्दर्य्य की प्रतिमाओं से प्रेम करना छोड़ दिया। प्रतिमा-पूजन मुसल्मानों में वर्जित है; परन्तु मेरी इस करतूत से तो मुसल्मानों का ईश्वर भी न प्रसन्न हुआ होगा। (देखो काव्य-संबन्धी प्रतिभाषा--बुत)

२४ मानी को भुला देती है सूरत है तो यह है।
नेचर भी सबक़ सीख ले ज़ीनत है तो यह है॥ १॥
कमरे में जो हँसती हुई आई मिसे-राना।
टीचर ने कहा इल्म की आफ़त है तो यह है॥ २॥

यह बात तो अच्छी है कि उल्फ़त हो मिसों से ।
हूर उनको समझते हैं क़यामत है तो यह है ॥ ३ ॥
पेचीदा मसायल के लिए जाते हैं इँगलैण्ड ।
ज़ुल्फ़ों में उलझ आते हैं शामत है तो यह है ॥ ४ ॥
पबलिक में ज़रा हाथ मिला लीजिए मुझसे ।
साहब मेरे ईमान की क़ीमत है तो यह है ॥ ५ ॥

(१) हमारे माशूक़ की सूरत ऐसी सुन्दर है कि जो देख लेता है वह उसी को सब कुछ समझने लगता है और ईश्वर को भूल जाता है। उसका सौन्दर्य्य ऐसा है कि उसको देख कर प्रकृति का भी ज्ञान हो जाता है।

(२) मिसे-राना = सुन्दर मिस। टीचर = अध्यापक।

(३) मिसों से प्रेम करना तो अच्छा है परन्तु इसमें सबसे बड़ा दोष यह है कि लोग उनको हूर अर्थात् स्वर्गीय अप्सरा समझने लगते हैं। मुसल्मान-धर्म्म के अनुसार जो लोग स्वर्ग जाते हैं उनको हूरें मिलती हैं और स्वर्ग लोगों को बड़े परिश्रम से मिलता है। अकबर के कहने का तात्पर्य्य यह है कि मिसों के पाने के उद्देश्य से भारत के नवयुवकों का कालेजों में परिश्रम करना उनके धर्म्म के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इसी भाव को दर्शाते हुए अगले पद में कहते हैं,

(४) कि भारतीय छात्र इँगलिस्तान में विज्ञान और दर्शन के पेचदार मर्मों को सीखने के लिए जाते हैं; परन्तु हानि यह होती है कि वहाँ जाकर मिसों की पेचदार लटों के प्रेम में फँस जाते हैं।

(५) हे साहब ! मैं अपना धर्म आप पर केवल इतने पर निछावर करने के लिए तैयार हूँ कि आप तनिक जनता के सामने मुझसे हाथ मिला कर मेरा मान बढ़ाइए।

२५ मेरे हवास इश्क़ में क्या कम हैं मुन्तशिर।
मजनूँ का नाम हो गया क़िसमत की बात है ॥ १ ॥
परवाना रंगता रहे और शमा जल बुझे।
इससे ज़ियादा कौन सी ज़िल्लत की बात है ॥ २ ॥
मुतलक़ नहीं म'ल्ले-अजब मौत दहर में।
मुझको तो यह हयात ही हैरत की बात है ॥ ३ ॥
तिरछी नज़र से आप मुझे देखते हैं क्यों ?
दिल को य छेड़ना ही शरारत की बात है ॥ ४ ॥
राज़ी तो हो गये हैं वो तासीरे-इश्क़ से।
मौक़ा निकालना सो य हिकमत की बात है ॥ ५ ॥

(१) मेरा उन्माद मजनूँ के उन्माद से किसी भाँति कम नहीं है। अब रहा यह कि मजनूँ प्रसिद्ध हो गया, मैं प्रसिद्ध नहीं हुआ। यह तो केवल अपने-अपने भाग्य की बात है।

(२) दीपक का प्रेमी पतिङ्गा रंगता रहे और दीपक बुझ जाय, पतिङ्गे के लिए इससे अधिक कौन लज्जा की बात है।

(३) ससार में मृत्यु कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मैं तो इस जीवन ही को आश्चर्य की बात समझता हूँ।

(४) आप मुझको तिरछी चितवन से क्यों देखते हैं ? इससे मेरे दिल पर चोट लगती है। ऐसा करना आपको अच्छा नहीं क्योंकि दिल को छेड़ना ही नटखटपन है।

(५) प्रेम के प्रभाव से उन्होंने अपने प्रेमी की प्रार्थना स्वीकार

कर ली। प्रेम तो अपना काम कर चुका, अब रहा मिलने का अवसर निकालना सो यह प्रयत्न पर निर्भर है। इसी ध्वनि में अकबर की एक हास्यरस की ग़ज़ल देखिए—

२६ हासिल हो कुछ मआश यह मेहनत की बात है।
लेकिन सुरूरे-कल्ब यह क़िस्मत की बात है॥ १॥
आपस की वाह वाह लियाक़त की बात है।
सरकार की क़ुबूल य हिकमत की बात है॥ २॥
बी० ए० भी पास हों मिले बीबी भी दिलपसन्द।
मेहनत की बात वह है य क़िस्मत की बात है॥ ३॥
तहज़ीबे-मग़रबी में है बोसा तलक मुआफ़।
इससे अगर बढ़ो तो शरारत की बात है॥ ४॥

(१) पेट पालने की सामग्री प्राप्त करना मेहनत की बात है, परन्तु चित्त को प्रसन्न करना और शान्ति देना भाग्य पर निर्भर है।

(२) आपस के लोगों की प्रशंसा का पात्र होना योग्यता पर निर्भर है। परन्तु सरकार की प्रशंसा का भागी होना युक्ति पर निर्भर है।

(३) बी० ए० भी पास हों और बीबी भी अपनी रुचि के अनुसार मिले, इसमें पहिली बात मिहनत पर निर्भर है दूसरी बात भाग्य पर।

(४) पाश्चात्य सभ्यता के अनुगामियों में चुम्बन तक कोई दोष नहीं समझा जाता। इससे कुछ बढ़कर हो जाय तो वह शरारत की बात समझी जाती है।

२७ अपना रंग उनसे मिलाना चाहिये।
आजकल पीना-पिलाना चाहिये ॥ १ ॥
ख़ूब वह दिखला रहे हैं सब्ज़बाग़।
हमको भी कुछ गुल खिलाना चाहिये ॥ २ ॥
चाल में तलवार है दिल की घड़ी।
तोप से इसको मिलाना चाहिये ॥ ३ ॥
क़ौल बाबू का है जब बिल पेश हो।
पेशे-हाकिम बिलबिलाना चाहिये ॥ ४ ॥
कुछ न हाथ आये मगर इज़्ज़त तो है।
हाथ उस मिस से मिलाना चाहिये ॥ ५ ॥

(२) सब्ज़-बाग़ दिखाना = धोखा देकर फुसलाना।

२८ मज़हब कभी सायन्स को सिजदा न करेगा।
इन्सान उड़ें भी तो ख़ुदा हो नहीं सकते ॥ १ ॥
अज़ राहे-तअल्लुक़ कोई जोड़ा करे रिश्ता।
अँगरेज़ तो नेटिव के चचा हो नहीं सकते ॥ २ ॥
नेटिव नहीं हो सकते जो गोरे तो है क्या ग़म!
गोरे भी तो बन्दे से ख़ुदा हो नहीं सकते ॥ ३ ॥
हम हों जो कलक्टर तो वो हो जायँ कमिश्नर।
हम उनसे कभी ओहदा-बरा हो नहीं सकते ॥ ४ ॥

(१) धर्म कभी सायन्स अर्थात् विज्ञान के आगे सिर नहीं झुका सकता। क्योंकि यदि विज्ञान के बल से मनुष्य उड़ने भी लगे तो भी वह ईश्वर नहीं कहा जा सकता।

(२) आपस में व्यवहार होने के कारण कोई नाता जोड़ा करे परन्तु यदि वास्तव में देखा जाय तो अँगरेज़ लोग काले आदमी के चचा नहीं हो सकते। इस पद में उन

इतिहास लिखनेवालों पर कटाक्ष है जो यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया करते हैं कि यूरोप और भारत-वासी दोनों एक ही आर्य्य पुरुषों की सन्तान हैं।

(३) यदि काले आदमी गोरे नहीं हो सकते तो सोच किस बात का! कोई जाति जो है उससे बढ़ नहीं सकती; गोरों को भी देखिए। ये भी कितनी ही उन्नति करें, कभी ईश्वर नहीं हो सकते।

(४) हमारी यह दशा है कि यदि हम पढ़-लिख कर किसी तरह कलक्टर हो जायँ तो वह लोग उतना ही परिश्रम करने से कमिश्नर हो जाते हैं। हम कभी उनसे ऊँचा पद नहीं प्राप्त कर सकते।

२६ जज़्बये-दिल ने मेरे तासीर दिखलाई तो है।
घुँघरुओं की जानिबे-दर से सदा आई तो है ॥ १ ॥
आपके सर की क़सम मेरे सिवा कोई नहीं।
बे-तकल्लुफ़ आइए कमरे में तनहाई तो है ॥ २ ॥
जब कहा मैंने—तड़पता है बहुत अब दिल मेरा।
हँसके फ़रमाया तड़पता होगा सौदाई तो है ॥ ३ ॥
यों मुरव्वत से तुम्हारे सामने चुप हो रहें।
कल के जलसों की ख़बर हमने मगर पाई तो है ॥ ४ ॥
बादए-गुलरङ्ग का सागिर इनायत कर मुझे।
साक़िया ताख़ीर क्या है अब घटा छाई तो है ॥ ५ ॥
जिसकी उल्फ़त का बड़ा दावा था अकबर कल तुम्हें।
आज हम जाकर उसे देख आये हरजाई तो है ॥ ६ ॥

(१) मेरे हृदय की आकर्षण-शक्ति ने अन्त में अपना प्रभाव

दिखलाया है क्योंकि द्वार की ओर से आज घुँघुरुओं का शब्द आ रहा है।

(२) आपके सर की सौगन्ध खाकर मैं कहता हूँ कि कमरे में मेरे अतिरिक्त कोई नहीं है, आप बे-खटके चले आइए।

(३) जब मैंने उनसे कहा कि मेरा दिल बहुत तड़पता है तो हँसकर कहने लगे कि (मैं क्या करूँ) तड़पता होगा; यह तो पागल का काम ही है।

(४) ऐसे कहो तो संकोच के कारण मैं तुम्हारे सामने चुप हो रहूँ और कुछ न बोलूँ। परन्तु कल के जल्सों का पता मुझे लग गया है।

आंखें बता रही हैं कि जागे हो रात भर।
इन साग़िरों में रंगे-शराबे-विसाल है॥

(आँखें कह रही हैं कि तुम रात भर जागे हो क्योंकि इन कटोरियों—आँखों—में मिलन की शराब का रङ्ग अब तक लगा हुआ है।)

(५) गुलाबी रङ्ग की शराब का प्याला कृपा करके मुझे प्रदान कर दे! हे मद्यपान करानेवाले! तू विलम्ब क्यों कर रहा है? घटा छाई तो हुई है। मद्यपान के लिए यही सबसे अच्छा समय है।

(६) हे अकबर! जिसके प्रेम पर कल तुम्हें बड़ा घमण्ड था उसको हम आज जाकर देख आये। वह तो कुछ भी नहीं, केवल हरजाई है।

३० नौकरों पर जो गुज़रती है मुझे मालूम है।
बस कर ; कीजै मुझे बेकार रहने दीजिए ॥ १ ॥
राह में लैसन्स ही काफ़ी है इज़्ज़त के लिए।
बस यही ले लीजिए, तलवार रहने दीजिए ॥ २ ॥
ाक्टर साहब से मिलना आपका अच्छा नहीं।
बैठिए घर में, मुझे बीमार रहने दीजिए ॥ ३ ॥

(१) जो कुछ नौकरों पर बीतती है वह मुझे सब मालूम है। मैं नौकरी करना नहीं चाहता। मुझसे नौकरी करने का अनुरोध न कीजिए, कृपा करके मुझे बेकार रहने दीजिए।

(२) आपको तलवार रखने की कोई इच्छा नहीं; आप लैसन्स केवल अपना मान बढ़ाने के लिए चाहते हैं; केवल लैसन्स मिलने से आपकी अभिलाषा पूरी हो जायगी। तलवार रहने दीजिए।

(३) (पुरानी चाल के महाशय बीमारी की दशा में अपनी नई चाल की स्त्री से कहते हैं) डाक्टर साहब से बार बार आपका मिलना अच्छा नहीं, आप घर पर बैठिए, मेरी बीमारी की चिन्ता न कीजिए।

३१ तुझे उनसे है सरे-दोस्ती तेरी आरज़ू भी अजीब है।
वो हैं तख़्त पर तू है ख़ाक पर वो अमीर हैं तू ग़रीब है ॥ १ ॥
पये हिफ़्ज़े-जाँ हैं जो कोशिशें वो अजल के साथ हैं साज़िशें।
और इसी रविश प हैं ख़्वाहिशें ये मुआमिला भी अजीब है ॥ २ ॥
उसे इंजिनों का ख़याल क्या जो हो मह्व तारों की चाल का।
वो नज़र ज़मीन प क्यों झुके कि जो आसमाँ से क़रीब है ॥ ३ ॥
जो ख़ुदा का हुक्म है ख़ूब है मुझे तौबा करने में उज़्र क्या।
मगर एक बात है वाइज़ा कि बहार अब तो क़रीब है ॥ ४ ॥

(१) तू उनसे मित्रता करना चाहता है। तेरी इच्छा भी विचित्र है। कहाँ तू और कहाँ वह! वह सिंहासन पर बैठे हैं और तू धरती पर लोटनेवाला फ़क़ीर है। वह धनी हैं तू निर्धन है।

(२) जीव की रक्षा के लिए जितने उद्योग किये जा रहे हैं वह सब, यदि वास्तव में देखा जाय तो, यमराज की सहायता करते हैं। और न केवल यह उद्योग वरन् सारी मानसिक अभिलाषायें, जिनके पूर्ण होने पर चित्त को प्रसन्नता होती है वह, भी अन्त में यमराज ही की सहायता करती हैं। यह बड़ो विचित्र बात है। एक और स्थान पर कहते हैं—

> जान ही लेने की हिकमत में तरक्क़ी देखी।
> मौत का रोकनेवाला कोई पैदा न हुआ॥

(३) जो तारों की चाल अर्थात् ज्योतिष में लीन रहता है उसका ध्यान इंजिनों की चाल की ओर कब जा सकता है। यही दशा ज्ञानियों की है; जब उनकी दृष्टि सदा आसमान अर्थात् परलोक ही की ओर रहती है तो उनका ध्यान संसार की सुख-सामग्री की ओर कब जा सकता है?

(४) हे धर्मशिक्षक! तेरा यह कहना, कि मद्यपान करना ख़ुदा की आज्ञा के विरुद्ध है, ठीक है; मैं पश्चात्ताप करने को तैयार हूँ। परन्तु एक बात से मुझे ऐसा करने से कुछ सङ्कोच होता है कि मद्यपान का ऋतु (बहार) आनेवाला है और मैं अपने संकल्प पर तब दृढ़ न रह सकूँगा।

३२ हंगामा है क्या बरपा थोड़ी सी जो पी ली है।
डाका तो नहीं डाला चोरी तो नहीं की है ॥ १ ॥
ना-तजुर्बाकारी से वाइज़ की हैं यह बातें।
इस रंग को क्या जाने पूछो तो कभी पी है ॥ २ ॥
उस मै से नहीं मतलब दिल जिससे है बेगाना।
मक़सूद है उस मै से दिल ही में जो खिंचती है ॥ ३ ॥
तालीम का शोर ऐसा तहज़ीब का ग़ुल इतना।
बरकत जो नहीं होती नीयत की ख़राबी है ॥ ४ ॥

(१) मैंने थोड़ी सी जो मदिरा पी ली है इससे इतना गड़-बड़ क्यों मचा हुआ है! मैंने ऐसा बड़ा अपराध तो कोई किया नहीं। यदि डाका डालता या चोरी करता तो एक बात भी थी।

(२) धर्मशिक्षक को ये सब बातें उसका अज्ञान प्रकट करती हैं। यदि उसने कभी थोड़ी सी (मदिरा) पी होती तो ऐसी बातें न करता। क्योंकि (नज़ीर का यह पद देखिए)—

वो बज्म अपनी थी मैकशी की फ़रिश्ते हो जाते मस्त बे ख़ुद।
जो शेख़जी वाँ से बच के आते तो झुक के उनको सलाम करता ॥

(३) शराब शब्द का प्रयोग करने से मेरा मतलब उस मदिरा से नहीं है जिससे हृदय अपरिचित है वरन् उस मदिरा से है जो भट्ठीरूपी हृदय में खिंचती है।

(४) आजकल शिक्षा-प्रचार और सभ्यता की इतनी धूम मची हुई है; परन्तु कोई उन्नति करता नहीं दिखाई देता। जान पड़ता है कि लोगों की नीयत ही में कोई बुराई है।

३२ दम लबों पर था दिले-ज़ार के घबराने से ।
आ गई जान में जान आपके आ जाने से ॥ १ ॥
बचता हूँ कूये-हसीनाँ की हवा खाने से ।
फ़ायदा क्या है दबी आग के भड़काने से ॥ २ ॥
रक्स करती है सबा गर्म-नवा है बुलबुल ।
कुश्ता इस नाच का हूँ मस्त हूँ इस गाने से ॥ ३ ॥
ख़ैर, चुप रहिए मज़ा ही न मिला बोसे का ।
मैं भी बे-लुत्फ़ हुआ आपके झुँझलाने से ॥ ४ ॥
मैं जो कहता हूँ कि मरता हूँ तो फ़र्माते हैं ।
कारे-दुनियां न रुकेगा तेरे मर जाने से ॥ ५ ॥
शेख़ मरहूम का क़ौल अब मुझे याद आता है ।
दिल बदल जायँगे तालीम बदल जाने से ॥ ६ ॥
हुक्म अकबर को हुआ है कि करो तर्क सखुन ।
ख़्वाजा हाफ़िज़ भी निकाले गये मैख़ाने से ॥ ७ ॥

(१) दुखी हृदय की घबराहट के कारण आपके प्रेमी की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गई थी परन्तु आपके आ जाने से फिर उसकी जान में जान आ गई इसलिए आप यह न समझिए कि मेरी शोचनीय दशा का समाचार, जो आपको पहुँचा था, झूठा था। ग़ालिब का यह पद देखिए—

उनके देखे से जो आ जाती है मुँह पर रौनक़ ।
वह समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है ॥

एक और कवि ने इस भाव को इस प्रकार दर्शाया है—

कहाँ है दर्द, कहकर हाथ रखना उनका सीने पर ।
मेरा झूठा ठहरना, दर्द का काफ़ूर हो जाना ॥

परन्तु प्रेम की दशा अधिक शोचनीय हो जाने पर यह बात नहीं रह जाती—

न आने की शिकायत क्यों, वो आते भी तो क्या होता ?
"वतन" मुमकिन न था इस दर्द का काफ़ूर हो जाना ॥

(२) मैं सौन्दर्य की प्रतिमाओं की गली की हवा खाने से बचता हूँ क्योंकि दबी आग के भड़काने से कोई लाभ नहीं। प्रतिमायें पत्थर की होती हैं और मेरा हृदय भी विरह के दुख उठाते-उठाते पत्थर का हो गया। इस कारण सौन्दर्य की प्रतिमाओं की गली में जाने से यह डर है कि कहीं पत्थर-पत्थर लड़ कर आग न पैदा कर दें। नासिख़ का यह पद देखिए—

दिल में पोशीदा तपे-इश्के-बुतां रखते हैं।
आग हम संग के मानिन्द निहां रखते हैं॥

(३) मैं उस नाच पर मरता हूँ और उस गाने पर मस्त हू जिसको देख कर शीतल वायु नाचने और बुलबुल गाने लगती है।

(४) चुम्बन में दोनों को आनन्द आता है। यदि एक को न आवे तो दूसरे को नहीं आ सकता। किसी ने ठीक कहा है—

मुँह पर मुँह रख के लिपट जाव तुम्हारे सिदक़े।
बोसा वह शै है जो दोनों को मज़ा देता है॥

चुम्बन पर आपके बिगड़ने से चुम्बन का आनन्द न आपको आया और न मुझे। यही आपके प्रेमी के लिए

काफ़ी ताड़ना हो गई। अब चुप हो रहिए अधिक झूँझलाने से कोई लाभ नहीं।

(५) मैं जो उनसे कहता हूँ कि मैं आपके लिए मरता हूँ, यदि आप मुझ पर कृपा न करेंगे तो मर जाऊँगा; तो वह कहते हैं कि तेरे मर जाने से संसार का काम न रुक जायगा अथवा किसी की कोई हानि न होगी। ग़ालिब का यह पद देखिये—

> ग़ालिबे-ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बंद हैं।
> रोइए ज़ार ज़ार क्या, कीजिए हाय हाय क्यों॥

(६) स्वर्गीय शेख़ अथवा धर्मशिक्षक जिनका प्रभाव अब संसार से उठ गया है उनका यह कथन संसार को यह बदली हुई दशा देख कर याद आता है कि शिक्षा-प्रणाली के बदलने से लोगों के दिल भी बदल जायँगे।

(७) अकबर को यह हुक्म हुआ है कि कविता करनी छोड़ दो; यह बात ऐसी हो समझनो चाहिए जैसे ईरान के विख्यात कवि हाफ़िज़ को, जो सदा ईश-प्रेम में लीन रहा करते थे, उनकी समाधि से उठा देना। क्योंकि हाफ़िज़ के समान अकबर भी सदा ईश-प्रेम में रत रहा करते थे।

> अकबरे-मरहूम कैसा सर ख़ुशो सरशार था।
> होश उसको अपनी सारी ज़िन्दगी पर बार था॥

सामयिक और सामाजिक पद

(१) तमाशा देख अकबर दीदये इबरत से दुनिया का ।
अजल की नींद जब आये लहद में जाके सो रहना ।।

हे अकबर ! संसार का तमाशा केवल संसार की घटनाओं से शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से देख । यह कोई विश्राम करने का स्थान नहीं है । जब मृत्युरूपी निद्रा अर्थात् विश्राम करने का समय आवे तब क़बर में जाकर सो रहना; विश्राम मिल जायगा ।

(२) अपनी मिनक़ारों से हल्क़ा कस रहे हैं जाल का ।
तायरों पर सहर है सय्याद के एक़बाल का ।।

जिस जाल में फँसे हुए हैं उसके फन्दे स्वयं अपनी चोंचों से कस रहे हैं । पक्षियों पर चिड़ीमार के प्रताप का जादू फिरा हुआ है ।

(३) कौंसिल में सवाल होने लगे ।
क़ौमी ताक़त ने जब जवाब दिया ।।

(४) रिज़ोल्यूशन की शोरिश है मगर उसका असर ग़ायब ।
पलेटों की सदा सुनता हूँ और खाना नहीं आता ।।

रिज़ोल्यूशन = प्रस्ताव । शोरिश = धूम । पलेट = रकाबी ।

(५) तेरी तिरछी नज़र से हमको डर क्या ?
मुहब्बत की तो फिर दिल क्या जिगर क्या ।।

तेरी तिरछी चितवन से हमें किस बात का डर जब तुझसे प्रेम ही किया तो दिल और कलेजे पर चोट खाने से क्यों डरें ।

यह तो प्रेम में सभी को भोगना पड़ता है। जान साहब का यह पद देखिए।

> जब ओखली में सर दिया धमकों से क्या है डर ?
> सबको ख़ुदा दे जैसा दिया है जिगर मुझे ॥
> (६) तहम्मुल बरकते-तालीम से ऐसा हुआ पैदा।
> कि हिस तहक़ीर का होता है और ग़ुस्सा नहीं आता ॥

शिक्षा की कृपा से ऐसी सहन-शक्ति हममें पैदा हो गई है कि हमको अपनी हीन दशा का अनुभव होता है परन्तु क्रोध नहीं आता।

> (७) इनक़लाबे-दहर ने उस बुत को आया कर दिया।
> ख़ुद परी थी उस प अब परियों का साया कर दिया ॥

समय के परिवर्तन से वह सौन्दर्य की प्रतिमा "आया" बन गई। वह स्वयं सुन्दरता में परियों के समान थी। परन्तु अब उस पर पश्चिमी परियों की छाया पड़ गई है जिससे उसकी सारी अगली महिमा कम हो गई है।

> (८) ख़ुदा के फ़ज़्ल से बीबी, मियाँ दोनों मुहज़्ज़ब हैं।
> हिजाब उनको नहीं आता उन्हें ग़ुस्सा नहीं आता ॥

ईश्वर की कृपा से स्त्री-पुरुष दोनों सभ्य हैं अर्थात् दोनों पर नई सभ्यता का रंग चढ़ा हुआ है, क्योंकि न स्त्री को अब बाहर निकलने में लज्जा आती है और न पुरुष को स्त्री की इस बेहयाई पर क्रोध आता है। एक और स्थान पर कहते हैं—

> कुल स्टेशन को उसने मेरे घर से कर दिया वाक़िफ़।
> य देखो बरकते-तालीम बीबी इसको कहते हैं ॥

स्त्री इसको कहते हैं कि जब वह मुँह खोल कर बाहर

निकली तो कुल स्टेशन अर्थात् सारा शहर उसके पीछे लग के मेरा मकान देख गया। यह नई शिक्षा की कृपा है।

(९) बाहम शबे-विसाल ग़लतफ़हमियाँ हुईं।
मुझको परी का शुबह हुआ उनको भूत का॥

मिलन की रात्रि को हम दोनों धोखा खाते रहे। मैं यह समझता रहा कि मेरे पास परी बैठी हुई है; और उनको यह धोखा हुआ कि उनके पास भूत बैठा हुआ है।

(१०) छोड़ लिटरेचर को अपनी हिसटरी को भूल जा।
शेख़ मसजिद से तअल्लुक़ तर्क कर इसकूल जा॥
चार दिन की ज़िन्दगी है कोफ़्त से क्या फ़ायदा।
खा डबल रोटी किलर्की कर ख़ुशी से फूल जा॥

फिर कहते हैं—

(११) मज़हब छोड़ो मिल्लत छोड़ो सूरत बदलो उम्र गँवाओ।
सिर्फ़ किलर्की की उम्मीद और इतनी मुसीबत, तोबा तोबा॥

लिटरेचर = साहित्य। हिस्ट्री = इतिहास। तअल्लुक़ = सम्बन्ध। कोफ़्त = यातना। मिल्लत = जाति। मुसीबत = ताड़ना।

(१२) ज़माना कह रहा है सबसे फिर जा।
न मन्दिर जा न मसजिद जा न गिरजा॥
(१३) पानी पीना पड़ा है पाइप का।
हर्फ़ पढ़ना पड़ा है टाइप का॥
पेट चलता है आंख आई है।
शाह एडवर्ड की दोहाई है॥
(१४) कर्ज़नो किचनर की हालत पर जो कल।
वह सनम तशरीह का तालिब हुआ॥

कह दिया मैंने कि यह है साफ़ बात।
देख लो तुम ज़न प नर ग़ालिब हुआ॥

एक समय भारत के भूतपूर्व वाइसराय लार्ड कर्ज़न और यहाँ के भूतपूर्व प्रधान सेनापति लार्ड किचनर में फ़ौजी पहरावे के ऊपर कुछ वादविवाद हुआ। इसमें अन्त में लार्ड किचनर की जीत हुई। उसी घटना के विषय में कहते हैं कि किचनर का जीतना स्वाभाविक था क्योंकि किचनर का अन्तिम खण्ड नर है और कर्ज़न का अन्तिम खण्ड ज़न है जिसका अर्थ स्त्री है और स्त्री को पुरुष ने नीचा दिखाया।

(१५) जो ख़िरदमन्द हैं वह ख़ूब समझते हैं य बात।
ख़ैरख़्वाही वो नहीं है जो हो डर से पैदा॥

जो बुद्धिमान् हैं वह यह बात भली भाँति जानते हैं कि ख़ैरख़्वाही प्रेम से पैदा होती है। यदि डर से पैदा हो तो वह वास्तव में ख़ैरख़्वाही नहीं कही जा सकती।

(१६) तह करो साहब नसबनामे वो वक़्त आया है अब।
बे-असर होगी शराफ़त माल देखा जायगा॥

मित्रो, अब अपनी वंशावली बंद करके रख दो। अब वह समय आया है कि जातीय गौरव की ओर कोई ध्यान न देगा; केवल धन ही पर बड़ाई-छोटाई निर्भर होगी।

(१७) हर एक को ख़ुश करूँ मैं क्योंकर साहब।
अपने ही तरफ़ बुलाते हैं हर साहब॥
आसाइशे-उम्र के लिए काफ़ी है।
बीबी राज़ी हों और कलक्टर साहब॥

आसाइशे-उम्र = जीवन का सुख।

(१८) मुहताजे-दरे-वकीलोमुख़्तार हैं आप।
सारे अमलों के नाज़बरदार हैं आप॥
आवारा व मुन्तशिर हैं मानिन्द ग़ुबार।
मालूम हुआ कि ज़िमींदार हैं आप॥

आप वकील और मुख़्तार के द्वार पर भिक्षा माँगनेवाले हैं। आप कचहरी के सारे अमलों की ख़ुशामद किया करते हैं। आप धूल के समान हैरान और भटके भटके फिरा करते हैं। इन सब बातों से यह मालूम हुआ कि आप कोई ज़िमींदार हैं।

(१९) अजीज़ों की अयानत गुम बुज़ुर्गों का अदब रुख़सत।
जो दिल बदला तो सब बदला ख़ुदा रुख़सत तो सब रुख़सत।

अयानत = सहानुभूति। बुज़ुर्ग = बड़े लोग। अदब = सन्मान।

(२०) छोड़ देहली लखनऊ से भी न कुछ उम्मीद कर।
नज़्म में भी बाज़ आज़ादी की अब ताईद कर॥
साफ़ है रोशन है और है साहबे सोज़ो गुदाज़।
शायरी में बस ज़बाने-शम्मा की तक़लीद कर॥

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि महाकवि अकबर आरम्भ में लखनऊ के रंग की कविता किया करते थे, परन्तु धीरे धीरे उन्होंने अपना एक नवीन रंग निकाला। उसी पर कहते हैं कि लखनऊ के रंग में कविता करनी छोड़ दे। दिल्ली के रंग से भी कुछ आशा न कर, कविता में दीपक की भाँति केवल स्वतन्त्रता के उपदेशों का वर्णन कर। दीपक उज्ज्वल होता है, प्रकाश फैलाता है और सभासदों की दुर्दशा पर अपना दिल जलाता है। इस कारण कविता में केवल दीपक की लौ-रूपी जिह्वा का अनुकरण कर।

(२१) वलवले उठते हैं दिल में देख कर उनका जमाल ।
हौसले होते हैं पस्त उनकी नज़र को देखकर ॥

उनका रूप देख कर दिल में बड़ी बड़ी उमङ्गें उठती हैं परन्तु उनकी फिरी निगाह देख कर सारी आशाओं पर पानी पड़ जाता है ।

(२२) बे-पास के तो सास की भी अब नहीं है आस ।
मौक़ूफ़ शादियाँ भी हैं अब इम्तेहान पर ॥

(२३) कहा मजनूँ से यह लैला की माँ ने ।
कि बेटा तू अगर कर ले एम० ए० पास ॥
तो फ़ौरन, ब्याह दूँ लैला को तुझसे ।
बिला दिक्क़त मैं बन जाऊँ तेरी सास ॥
कहा मजनूँ ने यह अच्छी सुनाई ।
कुजा आशिक़ कुजा कालिज की बकवास ॥
बड़ी-बी ! आपको क्या हो गया है ।
हिरन पर लादी जाती है कहीं घास ॥
यह अच्छी क़द्रदानी आपने की ।
मुझे समझा है कोई हरचरनदास ॥
दिल अपना ख़ून करने को हूँ मौजूद ।
नहीं मंजूर मग़ज़े-सर का आमास ॥
यही ठहरी जो शर्ते-वस्ले-लैला ।
तो इस्तीफ़ा मेरा बा-हसरतो यास ॥

कुजा = कहाँ । मग़ज़े-सर = भेजा । आमास = सूजना । हसरत = शोक । यास = निरास ।

(२४) शराबे-दौलत से मस्त हैं वह,
मये क़नाअत से हम हैं सर ख़ुश ॥

नहीं है कुछ बाहमी तअल्लुक़,
वो अपने घर ख़ुश हम अपने घर ख़ुश ॥

वह धन की मदिरा से मस्त हैं, हम संतोष की मदिरा के नशे में चूर हैं। आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है। वह अपने घर ख़ुश हैं हम अपने घर।

(२५) कहा जो उसने कि अब मैं फिरूँगा बे-परदा,
मुँह उसका देखके बस रह गये नक़ाबफ़रोश ॥

नक़ाबफ़रोश = नक़ाब बेचनेवाले।

(२६) कुछ सनअतो हिरफ़त प भी लाज़िम है तवज्जह,
आख़िर य गवर्मेंट से तनख़्वाह कहाँ तक ॥

सनअतो हिरफ़त = शिल्पकला इत्यादि। लाज़िम = आवश्यक। तवज्जह = ध्यान।

(२७) क़दम अँगरेज़ कलकत्ते से देहली में जो धरते हैं,
तिजारत ख़ूब की अब देखें शाही कैसी करते हैं ॥

यह पद राजधानी बदलने के समय लिखा गया था। कलकत्ता व्यौपार का घर है और दिल्ली पुराने बादशाहों का घर है। इसी पर कहते हैं कि अँगरेज़ों ने कलकत्ते में, जो व्यौपार का केन्द्र है, व्यौपार करने में निपुणता दिखलाई; अब देखना चाहिए कि शाही ठाट कैसा दिखाते हैं।

(२८) न लैसन्स हथियार का है न ज़ोर,
कि टर्की के दुश्मन से जाकर लड़ें।
तहे-दिल से हम कोसते हैं मगर,
कि इटली की तोपों में कीड़े पड़ें ॥

यह पद इटली और तुर्कों की लड़ाई के समय लिखे गये थे।

(२९) गोलियों के ज़ोर से करते हैं वह दुनिया को हज़्म।
इससे बेहतर इस ग़िज़ा के वास्ते चूरन नहीं॥

ग़िज़ा = खाद्य पदार्थ।

(३०) नौकर को सिखाते हैं मियाँ अपनी ज़बाँ।
मतलब यह है कि समझे उनके फ़र्मान॥
मक़सूद नहीं मियाँ की सी अक़्ल तमीज़।
इस नुक्ते को क्या समझें वो जो हैं नादान॥

मियाँ अपनी भाषा अपने नौकर को सिखाते हैं। उनका उद्देश्य यह है कि नौकर उनकी आज्ञाओं को समझ सके। उनका यह उद्देश्य नहीं है कि नौकर उन्हीं की भाँति बुद्धिमान् हो जाय। इस गूढ़ मर्म का अर्थ मूर्ख नहीं समझ सकते।

(३१) दाख़िल मेरी दानिस्त में यह काम है पुन में।
पहुँचायेगा क़ुव्वत शजरे-मुल्क की बुन में॥
तहरीक स्वदेशी प मुझे वज्द है अकबर।
क्या ख़ूब य नग़मा है छिड़ा देश की धुन में॥

यह पद स्वदेशी-आन्दोलन के आरम्भ में लिखे गये थे। अकबर का विचार था कि स्वदेशी-आन्दोलन पुण्य का काम है जिससे देश के वृत्त का जड़ बलिष्ठ होगी। स्वदेशी-आन्दोलन को देखकर हे अकबर! मैं हर्ष से मस्त हो जाता हूँ। यह कैसा अच्छा राग है जो देश की धुन में गाया जा रहा है। परन्तु एक और स्थान पर कहते हैं—

कामयाबी का स्वदेशी पर हरेक दर बस्ता है।
चोंच तोताराम ने खोली मगर पर बस्ता है॥

(३२) बने बन्दर से हम इन्साँ तरक्क़ी इसको कहते हैं।
तरक्क़ी पर भी नेटिव बदनसीबी इसको कहते हैं॥

इन्सान = मनुष्य। तरक्क़ी = उन्नति। नेटिव = किसी देश का असली रहनेवाला। बदनसीबी = अभाग्य।

(३३) हम ऐसी सब किताबें क़ाबिले ज़ब्ती समझते हैं।
जिन्हें पढ़ पढ़ के लड़के बाप को ख़ब्ती समझते हैं॥

(३४) बहारे-उम्र गुज़री सालहाये-इम्तिहानी में।
हमें तो पास ही की फ़िक्र ने पीसा जवानी में॥

जीवन की बहार अर्थात् जीवन का सबसे अच्छा समय परीक्षा देते-देते बीता, इस कारण हमको केवल परीक्षा में सफलता प्राप्त करने की अभिलाषा ने जवानी में दिन-रात परिश्रम करा के पीस डाला।

(३५) हैं अमल अच्छे मगर दर्वाज़ये-जन्नत हैं बंद।
कर चुके हैं पास लेकिन नौकरी मिलती नहीं॥

कर्म अच्छे हैं परन्तु वैकुण्ठ का द्वार बन्द है, यह बात वैसी ही है जैसे नौकरी प्राप्त करने के उद्देश्य से परीक्षा पास की जाय परन्तु नौकरी न मिले।

(३६) मिटाते हैं जो वह हमको तो अपना काम करते हैं।
मुझे हैरत तो उन पर है जो इस मिटने प मरते हैं॥

हैरत = आश्चर्य।

(३७) मुँह हमको लगाता ही नहीं वह बुते-काफ़िर।
कहता है ये अल्लाह से इनकार तो कर लें॥

वह नास्तिक बुत (सौन्दर्य्य की प्रतिमा) हमको मुँह नहीं लगाने देता। कारण यह कि वह चाहता है कि हम पहले ईश्वर से पूर्ण रूप से विमुख हो जायँ।

(३८) मेरे ख़त बे-असर हैं उस निगाहे-तेज़ के आगे।
वहाँ है तार बिजली का यहाँ काग़ज़ के घोड़े हैं॥

(३९) दीन से दूर हैं मसजिद से फिरे जाते हैं।
फिर भी उस बुत की निगाहों से गिरे जाते हैं॥

(४०) उनके हुस्न अपनी ज़रूरत पै नज़र करते हैं।
गो ख़ुशामद है बुरी चीज़ मगर करते हैं॥

यद्यपि हम जानते हैं कि चापलूसी बुरी बात है परन्तु उनका रूप देख कर और अपनी आवश्यकता से विवश होकर चापलूसी करनी ही पड़ती है।

आरज़ू मर्ग की तुम करते हो अकबर लेकिन।
सोच लो क़ब्र में आराम मिलेगा कि नहीं॥

हे अकबर! तुमको मरने की अभिलाषा है परन्तु पहले तुमको यह सोच लेना चाहिए कि तुम क़ब्र में सुख से सो सकोगे कि नहीं। दाग़ का यह पद देखिए—

राहत के वास्ते है तुझे आरज़ूये-मर्ग।
ऐ दाग़ और जो चैन न आया क़ज़ा के बाद॥

(४१) होटल से भला परहेज़ तुम्हें,
अब पंडितजी महराज कहां।
सच बात कही जिसने य कहा,
जब लाग लगी तब लाज कहां।

(४२) हमें घेरे हुए हैं हर तरफ़ इसलाह की मौज।
मगर यह हिस नहीं है डूबते हैं या उभरते हैं॥

मेरा यह शेर अकबर एक दफ़्तर है मआनी का।
कोई समझे न समझे हम तो सब कुछ कह गुज़रते हैं॥

हमें हर ओर से सुधार की लहरें घेरे हुए हैं परन्तु हमारी समझ में यह नहीं आता कि हम डूब रहे हैं या उभर रहे हैं। हे अकबर! मेरा यह पद गूढ़ मर्मों की एक पुस्तक है। कोई समझे अथवा न समझे, हम तो सब कुछ कह डालते हैं।

(४३) बुद्धू मियां भी हज़रते गांधी के साथ हैं।
गो गर्द-राह हैं मगर आंधी के साथ हैं॥

इस पद में मुसलमान नेताओं के ऊपर कटाक्ष है।

(४४) बहुत रोये वो इस्पीचां में हिकमत इसको कहते हैं।
मैं समझा ख़ैरख़्वाह उनको हिमाक़त इसको कहते हैं॥

स्पीच = व्याख्यान। हिकमत = युक्ति। हिमाक़त = मूर्खता।

(४५) मद् ख़ूलये-गवर्मेन्ट अकबर अगर न होता।
इसको भी आप पाते गांधी की गोपियों में॥

मद् ख़ूला = स्त्री अथवा वैतनिक।

(४६) कहता हूँ मैं हिन्दू व मुसलमां से यही।
अपनी अपनी रविश प तुम नेक रहो॥
लाठी है हवाये-दहर पानी बन जाव।
मौजों की तरह लड़ो मगर एक रहो॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों से मेरा कहना यह है कि अपने-अपने धर्म का सच्चाई से पालन करो। संसार की हवा लाठी के समान कड़ी है। तुम उसकी चोटों को सहने के लिए पानी के समान नर्म बन जाओ। यदि तुम्हें आपस में लड़ना ही है तो

लहरों की तरह लड़ो और फिर एक के एक बने रहो। एक और स्थान पर कहते हैं—

(४७) चुग़लियाँ इक दूसरे की वक़्त पर जड़ते भी हैं।
नागहाँ .ग़ुस्सा जो आ जाता है लड़ पड़ते भी हैं॥
हिन्दू और मुसलिम हैं फिर भी एक और कहते हैं सच।
हैं नज़र आपस की हम मिलते भी हैं लड़ते भी हैं॥

समय पर एक दूसरे की चुग़ली भी करते हैं और एकाएक जब क्रोध आ जाता है तो लड़ भी पड़ते हैं। फिर भी हिन्दू-मुसलिम एक हैं और लोग ठीक कहते हैं कि यह आपस में प्रेमभाव रखनेवालों की आँखों के समान हैं क्योंकि प्रेमियों की आँखें कभी मिलती हैं और कभी लड़ती हैं।

(४८) लड़ें क्यों हिन्दुओं से हम यहीं के उनसे पनपे हैं।
हमारी भी दुआ यह है कि गङ्गाजी की बढ़ती हो॥
मगर हाँ, शेख़जी की पालिसी से हम नहीं वाक़िफ़।
इसी पर ख़त्म करते हैं कि जो साहब की मर्ज़ी हो॥

हम हिन्दुओं से क्यों लड़ें? हम भी यहीं के हैं और हमारी उत्पत्ति भी उन्हीं से हुई है। परन्तु शेख़जी के मानसिक भाव हमारी समझ में नहीं आते। क्योंकि वह हर एक बात में जी हुजूर के सिवा कुछ कहना नहीं जानते।

(४९) भूलता जाता है यूरुप आसमानी बाप को।
बस .ख़ुदा समझा है इसने बर्क़ को और भाप को॥
बर्क़ गिर जायेगी इक दिन और उड़ जायेगी भाप।
देखना अकबर बचाये रखना अपने आपको॥

यूरुप दिन पर दिन अपने आसमानी बाप अर्थात् ईसा मसीह को भूलता जाता है। उसने केवल बिजली और भाप को ईश्वर

समझ रक्खा है। एक दिन बिजली गिर जायगी और भाप उड़ जायगी। हे अकबर! तुम अपने को इसके प्रवाह से बचाये रखना।

(५०) जो पूछा मैंने हूँ किस तरह हैपी।
कहा उस मिस ने मेरे साथ मै पी॥

हैपी (happy) = **सुखी। मै = मदिरा।**

(५१) मोटर से न गर्दन कभी ऐ यार निकाली।
तूने न मेरी हसरते-दीदार निकाली॥

हसरते-दीदार = दर्शन की अभिलाषा।

(५२) अभी इंजन गया है इस तरफ़ से।
कहे देती है तारीकी हवा की॥
रही रात एशिया ग़फ़लत में सोई।
नज़र यूरुप की काम अपना किया की॥

(५३) पाँव कांपा ही किये ख़ौफ़ से उनके दर पर।
चुस्त पतलून पहनने से भी पिँडली न तनी॥

इस पद में अँगरेज़ी वस्त्र पहन कर अधिकारियों से मिलने-वालों पर कटाक्ष है।

(५४) पहनने को तो कपड़े थे न क्या दरबार में जाते।
ख़ुशी घर बैठ कर ली हमने जश्ने-ताजपोशी की॥

(५५) आख़िर को हुई वो बात जो थी होनी।
मज़हब मिट्टी है या है मिट्टी धोनी॥

(५६) मज़हब को शायरों के न पूछें जनाब शेख़।
जिस वक़्त जो ख़याल है मज़हब भी है वही॥

(५७) तालीम है लड़कों की कि इक दामे-बला है।
ऐ काश कि इस अहद में हम बाप न होते॥

आधुनिक शिक्षा-प्रणाली पर कटाक्ष करते हुए अकबर कहते हैं कि आज-कल लड़कों को पढ़ाने-लिखाने में इतनी कठिनाइयाँ होती हैं कि घबड़ा कर कभी-कभी लोगों का यह जी चाहने लगता है कि उनके लड़का न होता।

(५८) मछली ने ढील पाई है लुक़मे प शाद है।
सय्याद मुतमइन है कि काँटा निगल गई ॥ १ ॥
हसरत बहुत तरक़्क़िये दुख़्तर की थी उन्हें।
परदा जो उठ गया तो वो आख़िर निकल गई ॥ २ ॥

(१) मछली वंशी का चारा खाकर प्रसन्न है कि अच्छा भोजन मिल रहा है। और मछली मारनेवाला (मछुवा) निश्चिन्त है कि अब मछली के फँसने में विलम्ब नहीं है, क्योंकि अब उसने काँटा निगल लिया है।

(२) उनको अपनी पुत्री की उन्नति की बड़ी अभिलाषा थी। परदे की प्रथा उठ जाने के कारण उनकी यह अभिलाषा निगल गई अर्थात् पूर्ण हो गई।

(५९) कोई साहब न हों लिल्लाह नाख़ुश सुन के यह मिसरा।
ख़याले-हुब्बे-क़ौमी पीछे और फ़िक्रे-शिकम पहले ॥

कोई महाशय यह अपने ऊपर चोट न समझें कि आजकल के बहुत से नेताओं का यह हाल है कि वह देश-सेवा केवल पेट पालने के उद्देश्य से करते हैं।

(६०) अज़ीज़ाने-वतन को देता हूँ पहिले ही से नोटिस।
चुरट और चाय की आमद है हुक़्क़ा पान जाता है ॥ १ ॥
य इतनी गोशमाली तिफ़्ले-मकतब की नहीं अच्छी।
ज़बाँ आती है उसको सच है लेकिन कान जाता है ॥ २ ॥

मेरी दाढ़ी से रहता है वो बुत इनकार पर क़ायम ।
मगर जब दिल दिखाता हूँ तो फ़ौरन मान जाता है ॥ ३ ॥
ज़वाले-जाहो-दौलत में बस इतनी बात अच्छी है ।
कि दुनिया को ब ख़ूबी आदमी पहचान जाता है ॥ ४ ॥

(१) मैं अपने देशभाइयों को पहले ही से बताये देता हूँ कि समय बदल गया है। अब हुक़्क़ा और पान के स्थान पर चुरट और चाय से अतिथि-सत्कार किया जायगा।

(२) स्कूल के बच्चों का इतना कान पैंठना ठीक नहीं। ऐसा करने से ज़बान अर्थात् भाषा तो अवश्य आती है परन्तु कान उखड़ जाता है।

(३) मेरी दाढ़ी देख कर वह मेरी प्रार्थना को स्वीकार नहीं करता। परन्तु जब मैं अपना हृदय दिखाता हूँ तो तुरन्त मान जाता है।

(४) सांसारिक यातनाओं में एक बात अच्छा है कि मनुष्य इस असार संसार को भली भाँति पहचान जाता है।

(६१) गये शरबत के दिन यारों के आगे अब तो ऐ अकबर ।
कभी सोडा कभी लेमनेड कभी ह्विस्की कभी टी है ॥

ह्विस्की = एक अँगरेज़ी शराब। टी = चाय। फिर कहते हैं—

शमशेरज़न को अब नये साँचे में ढालिये ।
शमशेर को छिपाइये ज़न को निकालिये ॥

शमशेरज़न अर्थात् तलवार चलानेवाले को अब नये साँचे में ढालिए। इस शब्द में से शमशेर अर्थात् तलवार को छिपा दीजिये और ज़न अर्थात् स्त्री को बाहर निकालिये, जिसमें वह अपने तलवार-रूपी भ्रू-निक्षेप से आपकी रक्षा करे।

(६२) कुली एक इस तबीयत का मिला जो कल ये कहता था।
मेरे दिल में ख़यालाते-बलन्द आने नहीं पाते॥
सड़क पर काम में तकलीफ़ है बँगले में बे-लुत्फ़ी।
यहाँ साया नहीं है और वहाँ गाने नहीं पाते॥

एक ऐसे विचार रखनेवाला कुली कल मुझको मिला था, जो कहता था कि मेरे हृदय में उच्च भाव नहीं आने पाते। कारण यह है कि सड़क पर काम करता हूँ तो मुझे छाँह न होने के कारण कष्ट मिलता है और बँगले में काम करने जाता हूँ तो साया मिल जाता है परन्तु वहाँ गाकर अपना मनोरंजन नहीं करने पाता।

(६३) वो मिस बोली कि करती आपका ज़िक्र अपने फ़ादर से।
मगर आप अल्ला अल्ला करता है पागल का माफ़िक है॥
न माना शेख़जी ने चख गये दस पाँच यह कह कर।
अगर-क़ाबिज़ हैं यह बिस्कुट तो हाँ, अल्लाह मालिक है॥

फ़ादर (Father) = पिता।

(६४) ये जुगनू भी नई ही रोशनी से मिलते-जुलते हैं।
अँधेरा ही रहा जङ्गल में गो यह जा-बजा चमके॥

ये जुगुधू भी नई सभ्यता से मिलते-जुलते हैं, क्योंकि यद्यपि ये जंगल में स्थान-स्थान पर चमके तब भी जंगल का अन्धकार दूर न हुआ।

(६५) ख़ुशी है सबको कि आपरेशन में ख़ूब नश्तर य चल रहा है।
मगर किसी को ख़बर नहीं है मरीज़ का दम निकल रहा है॥

सबको चीड़-फाड़ के समय डाक्टर के हाथ की सफ़ाई देख कर हर्ष हो रहा है परन्तु यह कोई नहीं जानता कि रोगी का दम निकल रहा है। एक और स्थान पर कहते हैं—

हो ख़ैर या-रब अकबरे-आशुफ़्ता-हाल की।
सरजन रक़ीब और दवा अस्पताल की॥

हे ईश्वर! रोगी अकबर की रक्षा कर। डाक्टर उसका प्रतिद्वन्द्वी है और दवा अस्पताल की करनी पड़ती है।

(६६) टामी के आगे टेम्स का दिलचस्प पाट है।
गंगू के जाँ-फ़िज़ाई को गंगा का घाट है॥

अँगरेज़ों के दिल-बहलाव के लिए टेम्स नदी का सुहावना पाट है और गंगू अर्थात् देशी भाई के लिए गंगाजी का घाट है।

(६७) वज़्अ बदली घर को छोड़ा काग़ज़ों में छप गये।
चन्द रोज़ा खेल था आख़िर को सब मर खप गये॥
मिट गये नक़्शो-निगारे दहर-फ़ानी के मुरीद।
नाम उन्हीं का रह गया रोशन जो हर को जप गये॥
दिल का टुकड़ा तो रहा बाक़ी पये-राहे-ख़ुदा।
रेल में क्या ग़म जो अकबर खेत तेरे नप गये॥

चाल-ढाल बदली, घर को छोड़ा, समाचार-पत्रों में नाम छप गया। यह सब चार दिन की चाँदनी थी। अन्त में सब मर-खप गये।

क्योंकि इस असार संसार के रंग-रूप पर मरनेवालों का अंत में कहीं पता न चला। नाम केवल उन्हीं का रह गया जिन्होंने अपना जीवन भगवद्भजन में व्यतीत किया।

हे अकबर! तुझको इस बात की कुछ चिन्ता न करनी चाहिए कि तेरे खेत रेल निकलने में नप गये। तेरे हृदय के खेत का टुकड़ा तो ईश्वर की सेवा करने के लिए अभी तक तेरे पास है।

(६८) बाग़े-उमीद के फल होते हैं रोज़ ज़ाया।
हमको ख़ुदा बचाये औलादे-डारविन् से ॥

हमारी आशा के बाग़ के फल रोज़ नष्ट होते हैं। ईश्वर डारविन की सन्तान से हमारी रक्षा करे।

(६९) यही फ़र्माते रहे तेग़ से फैला इस्लाम।
यह न इर्शाद हुआ तोप से फैला क्या है ॥

यही कहते रहे कि मुसलमान-धर्म का प्रचार तलवार के बल से किया गया। यह कभी न कहा कि तोप के बल से किस धर्म का प्रचार किया गया।

(७०) मेम ने शेख़ को डाँटा तो पुकारे वो ग़रीब।
देखिये तोप ने लाठी को दबा रक्खा है ॥

(७१) तअज्जुब से कहने लगे बाबू साहब।
गवर्मेन्ट सैयद प क्यों मेहरबाँ है ॥

उसे क्यों हुई इस क़दर कामयाबी।
कि हर बज़्म में बस यही दास्ताँ है ॥

कभी लाट साहब हैं मेहमान उसके।
कभी लाट साहब का वह मेहमाँ है ॥

नहीं है हमारे बराबर वो हरगिज़।
दिया हमने हर सीग़े का इम्तिहाँ है ॥

वह अँगरेज़ी से कुछ भी वाक़िफ़ नहीं है।
यहाँ जितनी इँगलिश है सब बरज़बाँ है ॥

कहा हँस के अकबर ने ऐ बाबू साहब।
सुनो मुझसे जो रम्ज़ इसमें निहाँ है।'

"नहीं है तुम्हें कुछ भी सैयद से निसबत।
तुम अँगरेज़ीदाँ हो वो अँगरेज़दाँ है॥

एक बाबू साहब, जिन्हें अपनी अँगरेज़ी की योग्यता पर बड़ा घमण्ड था, सर सैयद अहमद की उन्नति देख कर आश्चर्य्य से कहने लगे, कि क्या कारण है कि गवर्नमेण्ट सर सैयद अहमद के ऊपर इतनी कृपा रखती है। और उसको इतनी सफलता हुई कि हर सभा में यही चर्चा है कि कभी लाट साहब उसके मेहमान होते हैं और कभी वह लाट साहब का मेहमान होता है। सर सैयद तो हमारी तनिक भी बराबरी नहीं कर सकता। हमने प्रत्येक विभाग की परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। सर सैयद तनिक भी अँगरेज़ी नहीं जानता और हमने जो कुछ अँगरेज़ी भाषा में है सब कुछ कण्ठ कर लिया है। यह सुनकर अकबर ने हँस कर कहा कि इसका भेद मैं तुमको बतलाता हूँ। तुम्हारी सैयद के साथ कोई तुलना नहीं की जा सकती। तुम अँगरेज़ी जानते हो और वह अँगरेज़ों को जानता है।

(७२) बुरा हुआ कि रक़ीबों में बढ़ गये बाबू।
ज़रा सी बात हुई और सूये-थाना चले॥

बुरा हुआ कि (बंगाली) बाबू भी मेरे एक प्रतिद्वन्दी हो गये। औरों से तो केवल हाथा-पाई में निपटारा हो जाता था। परन्तु इनमें तो यह बुरी लत है कि तनिक भी झगड़ा हुआ और यह घबड़ा के थाने की ओर रपट लिखवाने चले।

(७३) आदत जो पड़ी हो हमेशा से वह दूर भला कब होती है।
रक्खी है चुनौटी पाकिट में पतलून के नीचे धोती है॥

(७४) इनको क्या काम है मुरव्वत से,
अपने रुख़ से प मुँह न मोड़ेंगे।
जान शायद फ़रिश्ते छोड़ भी दें,
डाकृर फ़ीस को न छोड़ेंगे।

इनको मुरव्वत से क्या काम ! यह अपना स्वभाव कभी छोड़नेवाले नहीं। यमदूत चाहे जान छोड़ भी दें परन्तु डाकृर अपनी फ़ीस कभी न छोड़ेंगे।

(७५) जब इलाहाबाद में सामाँ नहीं बहबूद के।
क्या धरा है याँ बजुज़ अकबर के और अमरूद के॥

जब इलाहाबाद में भलाई के कोई सामान ही नहीं दिखाई देते तो यहाँ सिवाय अकबर और अमरूद के क्या धरा है।

(७६) मोवक्किल छुटे उनके पंजे से जब।
तो बस क़ौमे-मरहूम के सर हुए॥
पपीहे पुकारा किये पी (P) कहाँ।
मगर वह पिलीडर से लीडर हुए॥

वकील साहब के जब मोवक्किल छूट गये तो वह नेता बनकर इस मुरदा जाति के सिर हुए। पपीहे पुकारते ही रह गये कि पी कहाँ गया [क्योंकि उनके नाम के आगे से (P) पी अक्षर निकल गया], परन्तु वह प्लीडर (Pleader) अर्थात् वकील से लीडर (Leader) अर्थात् नेता हो गये।

(७७) बहुत ही उम्दा है ऐ हमनशीन बिरटिश राज।
कि हर तरह के ज़वाबित भी हैं उसूल भी है॥
जो चाहे खोल ले दरवाज़ये-अदालत को।
कि तेल पेच में है ढीली इसकी चूल भी है॥

जगह भी मिलती है कौंसिल में आनरेब्ली की।
जो इल्तेमास हो उम्दा तो वह क़ुबूल भी है॥
चमक दमक की व चीज़ें हैं हर तरफ़ फैली।
कि आँख मह्व है ख़ातिर अगर मलूल भी है॥
तरह-तरह के बना लो लिबास रंगारंग।
अलावा रुई के रेशम भी और ऊल भी है॥
अँधेरी रात में जंगल में है रवाँ इंजन।
कि जिसको देख के हैरान चश्मे-ग़ूल भी है॥
जब इतनी नेमतें मौजूद हैं यहाँ अकबर।
तो हर्ज क्या है जो साथ उसके डैम-फ़ूल भी है॥

हे मित्र! अँगरेज़ी राज्य बहुत ही अच्छा है क्योंकि इसमें हर बात नियमानुसार की जाती है और किसी न किसी अच्छे सिद्धान्त पर निर्भर होती है।

अदालत का द्वार सबके लिए बराबर खुला रहता है; जो चाहे उसमें प्रवेश कर सकता है। उसके पेचों में तेल भी रहता है और उसकी चूल भी सदा ढीली रहती है।

कौंसिलों में निर्वाचित हो जाने से माननीय की पदवी भी मिल जाती है और यदि प्रस्ताव अच्छा हुआ तो स्वीकार भी कर लिया जाता है।

इस राज्य में चारों ओर चमकीली-भड़कीली वस्तुएँ भी दिखाई देती हैं जिनको देखने से आँखें मुग्ध हो जाती हैं चाहे हृदय शोक-ग्रस्त ही क्यों न हो।

इस राज्य में तरह-तरह के रङ्ग-बिरङ्गे कपड़े बना सकते हो क्योंकि रुई के अतिरिक्त रेशम और ऊन भी मिल सकता है।

अँधेरी रात में रेल का इंजन वन में सनसनाता हुआ चलता है जिसको देखकर भूत-प्रेत की आँखें भी आश्चर्य्य से भर जाती हैं।

हे अकबर ! जब यहाँ इतनी सुख-सामग्रियाँ मौजूद हैं तो इसमें क्या हानि है जो साथ-साथ डैम-फ़ूल भी सुनना पड़ता है। क्योंकि दुधार गाय की दो लात भी भली। एक और स्थान पर कहते हैं—

कैसी ही सल्तनत हो सब ख़ुश न रह सकेंगे।
गर तुर्क हैं तो फिर क्या अँगरेज़ हैं तो फिर क्या॥

विविध विषय

(१)

दिल्ली-दरबार (१९०३)

सर में शौक़ का सौदा देखा,
देहली को हमने भी जा देखा।
जो कुछ देखा अच्छा देखा,
क्या बतलायें क्या-क्या देखा ॥ १ ॥
जमुनाजी के पाट को देखा,
अच्छे सुथरे घाट को देखा।
सबसे ऊँचे लाट को देखा,
हज़रत ड्यूक कनाट को देखा ॥ २ ॥
पलटन और रिसाले देखे,
गोरे देखे काले देखे।
संगीनें और भाले देखे,
बैन्ड बजानेवाले देखे ॥ ३ ॥
ख़ेमों का एक जंगल देखा,
उस जंगल में मंगल देखा।
ब्रह्मा और वरंगल देखा।
इज्ज़तख्वाहों क दंगल देखा ॥ ४ ॥
कुछ चेहरों पर मर्दी देखी,
कुछ चेहरों पर ज़र्दी देखी।

अच्छी ख़ासी सर्दी देखी,
दिल ने जो हालत कर दी देखी ॥ ५ ॥
अच्छे अच्छों को भटका देखा,
भीड़ में खाते झटका देखा।
मुँह को अगरचे लटका देखा,
दिल दरबार से अटका देखा ॥ ६ ॥

हाथी देखे भारी भरकम,
उनका चलना कम कम थम थम।
ज़र्री-झूलें नूर का आलम,
मीलों तक वह चम-चम चम-चम ॥ ७ ॥

सुर्ख़ी सड़क प कुटती देखी,
साँस भीड़ में घुटती देखी।
आतिशबाज़ी छुटती देखी,
लुत्फ़ की दौलत लुटती देखी ॥ ८ ॥
औज बिरीटिश राज क देखा,
परतौ तख़्तो-ताज क देखा।
रंग ज़माना आज क देखा,
रुख़ कर्ज़न महराज क देखा ॥ ९ ॥
पहुँचे फाँद के सात समुन्दर,
तहत में इनके बीसियों बन्दर।
हिकमतो-दानिश उनके अन्दर,
अपनी जगह हर एक सिकन्दर ॥ १० ॥
औजे-बख़्त मुलाक़ी उनका,
चर्ख़ हफ़्त तबाक़ी उनका।
महफ़िल उनकी साक़ी उनका,
आँखें मेरी बाक़ी उनका ॥ ११ ॥

हम तो उनके ख़ैर-तलब हैं,
हम क्या ऐसे सबके सब हैं।
उनके राज के उम्दा ढब हैं,
सब सामाने-ऐशो-तरब हैं ॥ १२ ॥

(३) सिर में उत्सुकता का उन्माद होने के कारण हमने भी दिल्ली को जाकर देखा। क्या बतलावें वहाँ क्या-क्या देखा। जो कुछ देखा सब अच्छा देखा।

(४) डेरों का एक जङ्गल दिखाई दिया और उस जंगल में मङ्गल ही मङ्गल दिखाई दिया। ब्रह्मा और वरंगल देशों के लोगों को देखा। सम्मान के अभिलाषियों का दंगल देखा।

(५) इस साल दिल्ली में सर्दी इतनी अधिक पड़ी थी कि यूरोप और अमरीकावाले जो दरबार देखने आये थे वह भी घबड़ा उठे। एक मौलवी साहब जो दरबार देखने गये थे उनका हाल यों वर्णन करते हैं—

फिरे एक मौलवी साहब जो कल दरबार-देहली से।
ये पूछा मैंने कुछ लाये भी तुम सरकार देहली से॥
वो बोले हँस के ऐ अकबर कहूँ क्या तुझसे हाल अपना।
इसी मतले प बस करता हूँ इज़हारे-ख़याल अपना॥
उधर सुर्ख़ी मये-गुल-गूँ की थी अंडे की ज़र्दी थी।
इधर रीशे-सफ़ेद अपनी थी और शिद्दत की सर्दी थी॥

एक मौलवी साहब जो कल दिल्ली-दरबार से फिरे तो मैंने उनसे पूछा कि दिल्ली सरकार से कुछ लाये भी? इस पर वह हँस कर कहने लगे—

हे अकबर ! मैं अपनी दुर्दशा का क्या हाल तुझसे बताऊँ। बस, इसी पद से मेरे हृदय का भाव समझ लो। उधर तो गुलाबी रङ्ग की मदिरा की ललाई और अण्डे की ज़र्दी दिखाई देती थी और इधर अपनी उज्ज्वल दाढ़ी थी और अत्यन्त कड़ी सर्दी थी।

(९) औज = ऊँचाई। परतौ = झलक।

(१०) ये लोग सात समुन्दर लाँघ कर यहाँ आये। इनके अधीन बहुत से बन्दरगाह हैं। ये लोग बुद्धिमान् हैं। अपने-अपने स्थान पर यह सब यूनान के प्रसिद्ध बादशाह सिकन्दर के समान बुद्धिमान् हैं।

(११) सौभाग्य उनका मित्र है। सातवाँ आकाश उनका सेवक है। यह महफ़िल भी उन्हीं की है और इसका शराब पिलानेवाला भी उन्हीं का है। केवल आंखें मेरी हैं और सब उन्हीं का है।

(१२) हम तो उनके शुभचिन्तक हैं। हम क्या, सभी उनके शुभचिन्तक हैं। उनके राज के ढब अच्छे हैं। उनके राज्य में सुख-सम्भोग की सारी सामग्रियाँ मौजूद हैं।

(२)

कर्ज़न-सभा

सभा में दोस्तो कर्ज़न की आमद आमद है।
गुलों में ग़ैरते-गुलशन की आमद आमद है॥ १॥
रईस राजा व नव्वाब मुन्तज़िर हैं बशौक़।
कि नायबे-शहे-लन्दन की आमद आमद है॥ २॥

कमर बँधी नज़र आती है आबो-आतिश की ।
इधर से नल उधर इंजन की आमद आमद है ॥ ३ ॥

वरूदे-फ़ौज से है ज़र्क बर्क़ का आलम ।
जिधर को देखिए पलटन की आमद आमद है ॥ ४ ॥

चमक है किरचों की हरसू गुमक है तोपों की ।
चमाचम और दनादन की आमद आमद है ॥ ५ ॥

चहल-पहल है उमङ्गें हैं जोशे-मस्ती है ।
बहारे-ऐश प जोबन की आमद आमद है ॥ ६ ॥

जो पीर हैं उन्हें हैं वलवले जवानी के ।
जवान हैं तो लड़कपन की आमद आमद है ॥ ७ ॥

गिरह में ज़र नहीं और टीमटाम लाज़िमो फ़र्ज़ ।
इसी सबब से महाजन की आमद आमद है ॥ ८ ॥

उभाड़े रहता है अकबर के दिल को फ़ैज़े-सख़ुन ।
अगरचे पीरी व पेन्शन की आमद आमद है ॥ ९ ॥

(१) हे मित्रो, सभा में (लार्ड) कर्ज़न का शुभागमन है। ऐसा जान पड़ता है कि फूलों में फुलवाड़ी की सबसे अधिक शोभा बढ़ानेवाले फूल का शुभागमन है।

(२) रईस राजा व नव्वाब सब लोग उत्सुकता के साथ रास्ता देख रहे हैं कि लन्दन के बादशाह के नायब का शुभागमन है।

(३) ऐसा जान पड़ता है कि पानी और आग दोनों कमर बाँधे हुए उनका रास्ता देख रहे हैं। क्योंकि एक ओर से नल और दूसरी ओर से इंजन का शुभागमन है।

(४) सेनाओं के आने से चारों ओर चमक-भड़क दिखाई देती है। जिधर को देखिए उधर ही से पलटनें चली आ रही हैं।

(५) चारों ओर किर्चों की चमक और तोपों की गुमक फैली हुई है। इस कारण चमाचम और दनादन का शुभागमन है।

(६) दिलों से हर्षोन्माद के कारण उमंगें उठ रही हैं। ऐसा जान पड़ता है कि ऐश की बहार पर यौवन आ रहा है।

(७) जो बुड्ढे हैं उनके दिलों में जवान होने की तरंगें उठ रही हैं। और जवानों पर ऐसा जान पड़ता है कि लड़कपन आ गया है।

(८) गाँठ में रुपया नहीं है परन्तु टीमटाम आवश्यक है। इसी कारण महाजन का शुभागमन है।

(९) कविता की कृपा से अकबर का दिल सदा उभरा हुआ रहता है। यद्यपि बुढ़ापे और पेन्शन के समय का शुभागमन है।

आना एक़बाल परी का

एक़बाल परी आई जो अंदाज़ बदल कर।
दुनिया की हवा साथ हुई साज़ बदल कर॥

एक़बाल (प्रताप) परी जब अपने ढङ्ग बदल कर आई तो संसार की हवा नये बाजे लेकर साथ हो गई।

ग़ज़ल ज़बानी एक़बाल परी

हूँ नाज़ से मामूर हुकूमत से भरी हूँ।
ज़र्री मेरा दामन है मैं एक़बाल परी हूँ॥ १॥

हर शोला मुकाबिल मेरे चेहरे के है बेनूर ।
कहता है कि हूँ भी तो चिराग़े-सहरी हूँ ॥ २ ॥
हर ढंग से दिखलाती हूँ शान अपनी जहाँ को ।
हर रंग में मैं मस्त मये-जलवगरी हूँ ॥ ३ ॥
इँगलैंड प हूँ सायाफ़िगन हुक्म-ख़ुदा से ।
शाहन्शहे एडवर्ड की सूरत प मरी हूँ ॥ ४ ॥

(१) मैं रूप-लावण्य और ऐश्वर्य से भरी हूँ। मेरा आँचल सुनहरा है और मेरा नाम एक़बाल परी है ॥

(२) मेरे सौन्दर्य्य के प्रकाश के सामने किसी लपट में प्रकाश नहीं दिखाई देता। और ऐसा जान पड़ता है कि उसकी दशा सूर्य्योदय के समय के दीपक के समान ज्योतिहीन हो गई है।

(३) मैं संसार को अपना ऐश्वर्य हर ढंग से दिखाती हूँ। मैं हर रंग में शोभारूपी मदिरा से मस्त रहती हूँ।

(४) ईश्वर की आज्ञा से मैंने इँगलिस्तान पर अपनी छाया कर रक्खी है। मैं सम्राट् एडवर्ड के रूप पर मोहित हूँ।

मुबारकबाद पञ्च की तरफ़ से

क़ौमे-इँगलिश को य दरबार मुबारक होवे ।
लार्ड कर्ज़न सा य सरदार मुबारक होवे ॥ १ ॥
हो मुबारक शहे-इँगलैंड को तख़्तो-दैहीम ।
मुझको यह तब्अ-गुहर-बार मुबारक होवे ॥ २ ॥

अँगरेज़ जाति को यह दरबार मुबारक हो। लार्ड कर्ज़न-सा सरदार मुबारक हो। इँगलिस्तान के बादशाह को राजमुकुट और राजगद्दी मुबारक हो। और मुझको यह मोती बरसाने-वाले भावों का उद्गार मुबारक हो।

नोट—यह कविता लखनऊ के अन्तिम नव्वाब वाजिद्अली शाह के उस्ताद अमानत के प्रसिद्ध काव्य इन्द्रसभा के आधार पर लिखी गई है। इन्द्रसभा के आरम्भ में राजा इन्द्र का आगमन दिखाया गया है।

सभा में दोस्तो इन्दर की आमद आमद है।
परी जमालों के अफ़सर की आमद आमद है॥

(३)

लुडोर का जलप्रपात

वो सौदी सखुन गोये-शीरीं-मेक़ाल।
जो अँगरेज़ी शायर था यक बेमिसाल॥
लिखी उसने है नज़्म एक लाजवाब।
दिखाई है शक्ले-रवानीय-आब॥
जो बहता है पानी मियाने-लुडोर।
उसी का दिखाया है शायर ने ज़ोर॥
ये इसमें करते हैं भाई हसन।
कि मैं भी हूं इस बहर में ग़ोतज़न॥
अजब है नहीं उनकी इस पर नज़र।
कुजा मैं कुजा सौदिये-नामवर॥
सिवा इसके हैं और भी मुश्किलें।
नहीं सहल इस राह की मंज़िलें॥
जो थीं दिक़्क़तें कह चुका बरमला।
ग़रज़ देखिए अब ये पानी चला॥
उछलता हुआ और उबलता हुआ।
अकड़ता हुआ और मचलता हुआ॥
रवानी में एक शोर करता हुआ।
रुकावट में एक ज़ोर करता हुआ॥

पहाड़ों प सर को पटकता हुआ।
चटानों प दामन झटकता हुआ॥
वो पहलूये-साहिल दबाता हुआ।
ये सब्ज़े प चादर बिछाता हुआ॥
झटकता हुआ .गुल मचाता हुआ।
वो जल थल का आलम रचाता हुआ॥

वो गाता हुआ और बजाता हुआ।
ये लहरों को पैहम नचाता हुआ॥
बफरता हुआ जोश खाता हुआ।
बिगड़ कर वो कफ़ मुँह प लाता हुआ॥
इधर गूँजता गुनगुनाता हुआ।
उधर .खुद ब.खुद भिनभिनाता हुआ॥
वो रूए-ज़मी को छिपाता हुआ।
वह ख़ाकी को सीमीं बनाता हुआ॥

गुलो ख़ार यकसाँ समझता हुआ।
हरेक से बराबर उझलता हुआ॥
बहाता हुआ और बहता हुआ।
हवा के तमाचों को सहता हुआ॥
लरजता हुआ तिलमिलाता हुआ।
बिलकता हुआ बिलबिलाता हुआ॥

बलन्दी से गिरता गिराता हुआ।
नशेबों में फिरता फिराता हुआ॥
वो खेतों में राहें कतरता हुआ।
ज़मीनों को शादाब करता हुआ॥

ये थालों की गोदों को भरता हुआ।
वो धरती प एहसान धरता हुआ॥

ये फूलों के गजरे बहाता हुआ।
वो चक्कर में बजरे फँसाता हुआ॥
लपकता हुआ दनदनाता हुआ।
उमड़ता हुआ सनसनाता हुआ॥
चमकता हुआ और झलकता हुआ।
सम्हलता हुआ और छलकता हुआ॥
हवाओं से मौजें लड़ाता हुआ॥
हुबाबों की फ़ौजें बढ़ाता हुआ॥
योंही अलग़रज़ है ये पानी रवाँ।
बस अब देख लें शायरे-नुकतादाँ॥
वो सोदी का सैलान-आबे-लुडोर।
ये बहरे-ख़यालात-अकबर का ज़ोर॥

सख़ुनगो = कवि। गोये-शीरीं = मधुरभाषी। बेमिसाल = अद्वितीय। रवानीये-आब = पानी का बहाव। इसरार = हठ। वहर = समुद्र, ध्वनि। ग़ोताज़न = डुब्बी मारनेवाला। अजब = आश्चर्य्य। बरमला = प्रत्यक्ष। सब्ज़ा = हरियाली। साहिल = तट। पैहम = आपस में। सीमों = रुपहला। लरज़ता = काँपता। शादाब = हरा भरा। हुबाब = बुलबुले। नुकतादाँ = गूढ़ बातें जाननेवाले। सैलान = प्रपात।

(४)

सर सैयद से मुठभेड़

सैयद से आज हज़रते वाइज़ ने यह कहा।
चरचा है जा बजा तेरे हाले-तबाह का॥
समझा है तूने नेचरो तदबीर को ख़ुदा।
दिल में ज़रा असर न रहा लाइलाह का॥

शैतान ने दिखा के जमाले-उरूसे-दहेर।
बन्दा बना दिया है तुझे हुब्बे-जाह का॥
उसने दिया जवाब कि मज़हब हो या रवाज।
राहत में जो मुख़िल हो वो कांटा है राह का॥

अफ़सोस है कि आप हैं दुनिया से बेख़बर।
क्या जानिए जो रङ्ग है शामो पगाह का॥
यूरुप का पेश आये अगर आपको सफ़र।
गुज़रे नज़र से हाल रियाया व शाह का॥

दावत किसी अमीर के घर में हो आपकी।
कमसिन मिसों से ज़िक्र हो उल्फ़त का चाह का॥
रुकिए अगर तो हंस के कहे इक बुते हसीं।
वेल मौलवी ये बात नहीं है गुनाह का॥

उस वक़्त क़िबला झुक के करूँ आपको सलाम।
फिर नाम भी हुज़ूर जो लें ख़ानक़ाह का॥
पतलूनो कोट बँगला व बिसकुट की धुन बँधे।
सौदा जनाब को भी हो टर्की-कुलाह का॥

मेम्बर प यों तो बैठके गोशे में ऐ जनाब।
सब जानते हैं राज़ सवाबो गुनाह का॥

एक धर्मशिक्षक महाशय ने आज सर सैयद अहमद से यह कहा कि "तेरी बिगड़ी हुई दशा की चर्चा स्थान-स्थान पर हो रही है। तूने प्रकृति और उपाय को ईश्वर समझ रक्खा है। तेरे हृदय पर ईश्वर की एकता का कोई प्रभाव न रहा। शैतान ने नववधू-रूपी संसार का सौन्दर्य्य दिखा कर तुझे उच्च पदों की लालच का दासानुदास बना दिया है।" सर सैयद ने उत्तर दिया कि "चाहे धर्म हो चाहे आचार-विचार हो, जो भी आनन्द में

बाधा डाले उसे मैं राह का काँटा समझ कर फेंक देता हूँ। बड़े शोक का अवसर है कि आपको अभी संसार का ज्ञान नहीं हुआ। आप नहीं जानते कि सन्ध्या से लेकर प्रातःकाल तक समय कैसे-कैसे रङ्ग बदलता रहता है। यदि आपको कभी यूरुप की यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हो और आप वहाँ के राजा और प्रजा का हाल देखिए और यदि किसी धनी के घर में आपका निमंत्रण हो और नवयुवती मिसों से प्रेम रस से पगी बातें हों और उसमें यदि आप कहीं हिचकिए तो एक सुन्दर मिस हँसके कहेगी कि 'वेल मौलवी, यह बाट नहीं है गुनाह का।' यह देख कर फिर आपका ध्यान यदि कभी अपनी मठ की ओर जाय तो मैं आपको झुक कर सलाम करूँ। फिर आपको भी कोट पतलून पहनने, बँगले में रहने और बिसकुट खाने की धुन लगे। आप भी अपनी पगड़ी उतार कर मेरी भाँति तुर्की टोपी लगाने लगिए। ऐसे तो मैं आपकी बात नहीं मान सकता क्योंकि जिस बात का आपको अनुभव नहीं उसके विषय में आपके विचारों का क्या महत्त्व !

नातजुरबकारी से वाइज़ की हैं यह बातें।
इस रंग को क्या जाने पूछो तो कभी पी है॥"

(५)

गिरजाघर की बिजली

रात उस मिस से कलीसाँ में हुआ मैं दो चार।
हाय वह हुस्न वो शोख़ी वो नज़ाकत वो उभार॥

ज़ुल्फ़-पेचाँ में वो सजधज की बलायें भी मुरीद।
क़दे-राना में वो चमख़म कि क़यामत भी शहीद॥

दिलकशी चाल में ऐसी कि सितारे रुक जायँ ।
सरकशी नाज़ में ऐसी कि गवर्नर झुक जायँ ॥
आतिशे-हुस्न से तक़वा को जलानेवाली ।
बिजलियाँ लुत्फ़े-तबस्सुम से गिरानेवाली ॥
पिस गया लोट गया दिल में सकत ही न रही ।
सुर थे तमकीन के जिस गत में वो गत ही न रही ॥

अर्ज़ की मैंने कि ऐ गुलशने-फ़ितरत की बहार ।
दौलतो इज़्ज़तो ईमाँ तेरे क़दमों प निसार ॥
तू अगर अहदे वफ़ा बाँध के मेरी हो जाय ।
सारी दुनिया से मेरे क़ल्ब को सेरी हो जाय ॥
शौक़ के जोश में मैंने जो ज़बाँ यूँ खोली ।
नाज़ अन्दाज़ से त्योरी को चढ़ा कर बोली ॥

"ग़ैरमुमकिन है मुझे उन्स मुसलमानों से ।
बूये-ख़ूँ आती है इस क़ौम के अफ़सानों से ॥
लन्तरानी की ये लेते हैं नमाज़ी बन कर ।
हमले सरहद प किया करते हैं ग़ाज़ी बन कर ॥
कोई बनता है जो मेहदी तो बिगड़ जाते हैं ।
आग में कूदते हैं तोप से लड़ जाते हैं ॥"

दुश्मने सब्र की नज़रों में लगावट पाई ।
कामयाबी की दिलेज़ार ने आहट पाई ॥
अर्ज़ की मैंने कि ऐ लज़्ज़ते-जाँ राहते-रूह ।
अब ज़माने में नहीं है असरे-आदमो नूह ॥

अब कहाँ ज़हेन में बाक़ी है बुराको रफ़रफ़ ।
टकटकी बँध गई है क़ौम की इंजन की तरफ़ ॥

याँ न वह नारये-तकबीर न वह जोशे-सिपाह ।
सबके सब आप ही पर पढ़ते हैं सुबहान-अल्लाह ।

जौहरे-तेग़-मजाहिद तेरे अबरू प निसार ।
नूर ईमां का तेरे आईनये रू प निसार ॥

मुझ प कुछ वजह-इताब आपको ऐ जान नहीं ।
नाम ही नाम है वरना मैं मुसलमान नहीं ॥

मेरे इसलाम को इक क़िस्सये माज़ी समझो ।
हँसके बोली कि तो फिर मुझको भी राज़ी समझो ॥

रात को उस मिस से कलीसा अर्थात् गिरजाघर में मुझसे मुठभेड़ हो गई । हाय ! उसके रूप-लावण्य, उसकी चञ्चलता, उसकी जवानी के उभार का किस प्रकार वर्णन करूँ । उसकी पेचदार लटों में वह बला की सज-धज थी कि जिसको देख कर स्वयं बलायें उसका लोहा मान लें; उसके सुकुमार शरीर में वह चमक-दमक कि जिसको देख कर प्रलय भी उस पर मरने लगे; उसकी चाल में ऐसा आकर्षण कि जिसको देख कर सितारों की गति भी मन्द पड़ जाय; उसके हाव-भाव में ऐसी ऐंठ कि जिसको देखकर गवर्नर लोग भी उसके सामने सिर झुका दें; उसके सौन्दर्य्य में ऐसी लपट कि जिससे सदाचार के भाव भस्म हो जायँ और उसकी मन्द मुसकान में ऐसी चकाचौंध कि जिससे प्रेमी के हृदय पर बिजली गिर पड़े । उसको देखते ही मेरा दिल पिस गया और मेरे शरीर की सारी शक्ति निकल गई; मैं धरती पर अचेत होकर लोटने लगा । धीरज के स्वर जिस गत में बज रहे थे वह गत ही हृदय में न रह गई । मैंने कहा कि ऐ प्रकृति की फुलवाड़ी की बहार, मेरा धन-धर्म और मान-मर्यादा सब तेरे चरणों में अर्पण है । यदि सच्चे प्रेम की प्रतिज्ञा करके तू मेरी हो जाय तो मेरा जी सारे संसार से भर जाय । प्रेम की तरंग में जब

मैंने यह कहा तो वह एक विचित्र हाव-भाव के साथ त्योरी चढ़ा कर यों बोली कि मेरे लिए यह कभी सम्भव नहीं है कि मैं मुसलमानों से प्रेम करूँ। इस जाति की ऐतिहासिक कहानियों से रक्त की गन्ध आती है। ये अपने नमाज़ी होने की बड़ी डींग मारते हैं और अपने को ग़ाज़ी अर्थात् काफ़िरों को मारनेवाला कह कर सरहदी प्रान्तों पर आक्रमण किया करते हैं। यदि इनमें से कोई अपने को मेहदी अर्थात् मुसलमानों का अन्तिम पैग़म्बर कहता है तो सबके सब बजवा कर बैठते हैं, और आग में कूदने और तोप से लड़ने लगते हैं। किसी को इनकी भलमनसाहत का विश्वास कैसे हो सकता है। इनकी नसों में अब तक जेहाद (अर्थात् मुसलमानों के शत्रुओं से युद्ध करने की आज्ञा) का प्रभाव है। उस धीरज के वैरी अर्थात् मिस के इस उत्तर में कुछ लगावट के चिह्न दिखाई दिये जिससे इस दुखी हृदय को सफलता की कुछ आहट मिलने लगी। मैंने कहा कि हे जीव को आनन्द का स्वाद देनेवाली! अब (मुसलिम-) संसार से हज़रत आदम और नूह का प्रभाव उठ गया है। अब मुसलमानों का ध्यान बुराक़ और रफ़रफ़ (जो स्वर्ग में लोगों को सवारी के लिए मिलते हैं,) की ओर नहीं जाता। अब जाति की टकटकी केवल इंजन की ओर बँधी हुई है। अब यहाँ तकबीर अर्थात् अल्लाहोअकबर (ईश्वर सर्वशक्तिमान् है) का शब्द कोई नहीं करता और न सेनाओं में वह उत्साह ही रह गया है; अब तो सबके सब आप ही को देख कर कहा करते हैं कि ईश्वर धन्य है। जेहाद करनेवालों की तलवार की धार अब तुम्हारी चितवन पर अर्पण है। अब धर्म का प्रकाश तुम्हारे दर्पण-रूपी मुखड़े पर अर्पण है। हे प्यारी, आपको मेरे ऊपर क्रोध करने का कोई कारण नहीं। मैं तो नाम-मात्र का मुसलमान हूँ। यदि वास्तव में पूछा जाय तो

मैं मुसलमान नहीं। जब मैंने कहा कि मेरे मुसलमान धर्म को एक प्राचीन काल की कहानी समझो तो वह हँस कर कहने लगी कि अच्छा फिर मुझको भी राज़ी समझो।

(६)

विवाह-रहस्य

इक मिसे-सीमी-बदन से कर लिया लन्दन में अक्द।
इस ख़ता पर सुन रहा हूँ तानहाये-दिलख़राश॥
कोई कहता है कि बस इसने बिगड़ी नस्ले-क़ौम।
कोई कहता है कि यह है बदख़िसालो बदमआश॥
दिल में कुछ इंसाफ़ करता ही नहीं कोई बुज़ुर्ग।
होके अब मजबूर ख़ुद इस राज़ को करता हूँ फ़ाश॥

होती थी ताकीद लन्दन जाओ अँगरेज़ी पढ़ो।
कौम-इँगलिश से मिलो सीखो वही वज़्ओ तराश॥

जगमगाते होटलों का जाके नज्ज़ारा करो।
सूपो-क़ारी के मज़े लो छोड़ दो यख़नी व आश॥

लेडियों से मिलके सीखो उनके अन्दाज़ो-तरीक़।
बाल में नाचो, कलब में जाके खेलो उनसे ताश॥

बादये-तहज़ीबे-यूरुप के चढ़ाओ ख़ुम के ख़ुम।
एशिया के शीशये-नक़्वा को कर दो पाश पाश॥

जब अमल इस पर किया परियों का साया हो गया।
जिससे था दिल की हरारत को सरासर इन्तेआश॥

सामने थीं लेडियाने-ज़ोहरवश जादू-नज़र ।
थीं जवानी की उमँग और उनको आशिक़ की तलाश ॥
उसकी चितवन सह्हेर-आगों उसकी बातें दिलरुबा ।
चाल उसकी फ़ितने-खेज़ उसकी निगाहें बर्क-पाश ॥
वह फ़रोग़े-आतिशे-रुख़ जिसके आगे आफ़ताब ।
इस तरह जैसे कि पेशे शम्अ परवाने की लाश ॥

जब य सूरत थी तो मुमकिन था कि इक बरक़े बला ।
दस्ते-सीमीं को बढ़ाती और मैं कहता दूर बाश ॥
दोनों जानिब थार गों में जोशे-खूने-फ़ितनज़ा ।
दिल ही था आख़िर नहीं थी बर्फ़ की कोई य क़ाश ॥

बार बार आता है अकबर मेरे दिल में यह ख़याल ।
हज़रते सय्यद से जाकर अर्ज़ करता कोई काश ॥
दर्मियाने-क़ारे-दरिया तख़्त बन्दुम करदई ।
बाज़ मीगोई कि दामन तर मकुन हुशियारबाश ॥

एक चाँदी के समान उज्ज्वल शरीरवाली मिस से मैंने लन्दन में विवाह कर लिया। इस अपराध पर मुझे बहुत से हृदय-विदारक व्यङ्ग शब्द सुन पड़ रहे हैं। कोई कहता है कि इसने जाति की सन्तान बिगाड़ दी, कोई कहता है कि यह दुराचारी अथवा बदमाश है। मेरी दशा पर कोई न्याय नहीं करता, इस कारण मैं मजबूर होकर 'यह रहस्य स्वयम् खोलता हूँ। आरम्भ ही से मुझसे यह कहा जाता था कि लन्दन जाओ और अँगरेज़ी पढ़ो; अँगरेज़ो जाति से मिलो और उनकी चाल-ढाल सीखो। जगमगाते होटलों को जाकर देखो और सूप और करी इत्यादि का स्वाद लो और देशी यख़नी और आश का सेवन करना छोड़ दो। अँगरेज़ी महिलाओं से मिलो और उनकी चाल-ढाल देखो; उनके साथ

'बाल' में नाचो और क्लब में बैठ कर ताश खेलो। यूरुपीय सभ्यता की मदिरा के पीपे के पीपे चढ़ा जाओ और एशिया के सदाचार-रूपी शीशे के प्याले को चूरचूर कर डालो।

जब इन बातों पर चलना आरम्भ किया तो ऐसा जान पड़ा कि मेरे ऊपर परियों का साया हो गया अर्थात् किसी ने जादू कर दिया; जिससे हृदय की गरमी और भी भड़क उठी। लन्दन में यह दशा थी कि सामने एक से एक रूपवती मन को मोहित करनेवाली महिलायें दिखाई देती थीं। इधर अर्थात् मेरे हृदय में जवानी की उमङ्गें उठ रही थीं और उन लोगों को प्रेमी की खोज थी। किसी की चितवन में जादू था; किसी की बातों में हृदय को आकर्षित करने की शक्ति थी; किसी की चाल हृदय में हलचल मचा देती थी और किसी की चितवन दिलों पर बिजली गिरा देती थी। वह गालों की आग के समान दमक जिसके प्रकाश के सामने सूर्य ऐसा लगता था जैसे कि दीपक के सामने पतङ्ग का मृतक शरीर। जब यह दशा थी तो क्या यह सम्भव था कि एक बला की बिजली अपना रुपहला हाथ बढ़ाती और मैं कहता कि दूर हो। दोनों ओर शरीर में हलचल मचानेवाला रक्त उमड़ रहा था। मेरा हृदय एक साधारण मनुष्य ही का तो हृदय था, कोई बर्फ़ का टुकड़ा नहीं था। हे अकबर, बार-बार मेरे हृदय में यह बात आती है कि सैयद महाशय से कोई जाकर कहता कि समुद्र में भँवर के बीच में तुमने तख़्ताबन्दी की है। और फिर उस पर से यह कहते हो कि देखो सावधान रहो, तुम्हारा वस्त्र भीगने न पाये। (अन्तिम पद फ़ारस के प्रसिद्ध कवि शेख़ सादी का है)

(७)

चिट्ठी सैयद इशरतहुसेन के नाम

लन्दन को छोड़ लड़के अब हिन्द की ख़बर ले ।
बनती रहेंगी बातें आबाद घर तो कर ले ॥
राह अपनी अब बदल दे बस पास करके चल दे ।
अपने वतन का रुख़ कर और रुख़सते-सफ़र ले ॥
इँगलिश की करके कापी दुनिया की राह नापी ।
दीनी तरीक़ में भी अपने क़दम को धर ले ॥
वापस नहीं जो आता क्या मुंतज़िर है इसका ।
माँ ख़स्ता हाल हो ले बेचारा बाप मर ले ॥
मग़रिब के मुरशिदों से तू पढ़ चुका बहुत कुछ ।
पीराने-मशरिकी से अब फ़ैज़ की नज़र ले ॥
मैं भी हूँ इक सख़ुनवर आ सुन कलामे-अकबर ।
इन मोतियों से आकर दामन को अपन भर ले ॥

सफ़र = यात्रा । कापी = अनुकरण । दीनी तरीक़ = धर्म का पथ । मग़रिब = पश्चिम । मुरशिद = गुरु । मशरिक़ = पूरब । फ़ैज़ की नज़र = कृपादृष्टि । सख़ुनवर = कवि । कलाम = कविता । दामन = आँचल ।

(८)

चिट्ठी पयामे-यार के संपादक के नाम

नामा कोई न यार का पैग़ाम भेजिए ।
इस फ़स्ल में जो भेजिए बस आम भेजिए ॥
ऐसे ज़रूर हों कि उन्हें रख के खा सकूँ ।
पुख़्ता अगर हों बीस तो दस ख़ाम भेजिए ॥

मालूम ही है आपको बन्दे का ऐड्रस।
सीधे इलाहाबाद मेरे नाम भेजिए॥
ऐसा न हो कि आप यह लिक्खें जवाब में।
तामील होगी पहले मगर दाम भेजिए॥

नामा = चिट्ठो। यार का पैग़ाम = यार का संदेश, नाम है एक समाचार-पत्र का। पुख़्ता = पके हुए। ख़ाम = कच्चे। ऐडरस = पता। तामील = आज्ञा-पालन।

(६)

आधुनिक जीवन और उसका उद्देश

पैदा हुए हैं हिन्द में इस अहद में जो आप।
ख़ालिक़ का शुक्र कीजिए आराम कीजिए॥
बेइन्तिहा मुफ़ीद हैं यह मग़रिबी उलूम।
तहसील इनकी भी सहेरो-शाम कीजिए॥
यूरुप में फिरिये पेरिसो-लन्दन को देखिए।
तहक़ीक़-मुल्के-काशग़रो-शाम कीजिए॥
रखिये नमूदो-शोहरतो-एज़ाज़ पर नज़र।
दौलत को सर्फ़ कीजिए और नाम कीजिए॥
सामान जमअ कीजिए कोठी बनाइए।
बासद-ख़ुलूस दावते-हुक्काम कीजिए॥
यराने-हम-मज़ाक़ से हमबज़्म हूजिए।
मौक़ा मिले तो शग़ले-मयो जाम कीजिए॥
नज़्ज़ारये-मिसाँ से तरो-ताज़ा रखिए आँख।
तफ़रीह पार्क में सहरो-शाम कीजिए॥
मज़हब का नाम लीजिए आमिल न हूजिए।
जो मुत्तफ़िक़ न हो उसे बदनाम कीजिए॥

तर्ज़े-क़दीम पर जो नज़र आयें मौलवी।
पबलिक में उनको मूरिदे-इलज़ाम कीजिए॥

ज़ंजीरे-फ़ुक़्क़ा तोड़िए कहकर ख़िलाफ़े-शरअ।
मज़मून लिखिए दावये-इलहाम कीजिए॥

क़ौमी तरक्क़ियों के मशाग़िल भी हैं ज़रूर।
इस मद में भी ज़रूर कोई काम कीजिए॥

लड़के न हों तो हो नहीं सकती चहल-पहल।
फ़िकरें पये-वज़ीफ़ओ इनआम कीजिए॥

तहसील चन्दा कीजिए लड़कों को भेजकर।
सारा इलाक़ा हिन्द का अब ख़ाम कीजिए॥

लेकिन न बन पड़ें जो ये बातें हुज़ूर से।
मुर्दों के साथ क़ब्र में आराम कीजिए॥

इस युग में जो आपने भारत में जन्म लिया है इसलिए आपको ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और सुख से अपना समय बिताना चाहिए। यह पश्चिमी विद्याएँ अत्यन्त लाभ-दायक हैं। इनको भी प्रतिदिन आपको सीखना चाहिए। आपको चाहिए कि यूरुप की यात्रा कीजिए और वहाँ के बड़े-बड़े नगर जैसे पेरिस और लन्दन को देखिए और मध्य और पश्चिमी एशिया के देश जैसे काशग़र और शाम इत्यादि के विषय में जाँच-पड़ताल कीजिए। अपनी उन्नति और नाम और सम्मान प्राप्त करने पर ध्यान रखिए। इस उद्देश्य से धन को व्यय कीजिए जिसमें आपका नाम हो। सामान जमा कीजिए और कोठी बनाइए। बड़े प्रेम के साथ अधिकारी-वर्ग को निमन्त्रण कीजिए। अपने ऐसे विचारवाले मित्रों की संगति कीजिए। यदि अवसर मिले तो शराब-कबाब का भी

सेवन कीजिए। मिसों के दर्शन से आँखें हरी रखिए। पार्क में सवेरे और संध्या को हवा खाने जाइए। धर्म का नाम लीजिए परन्तु कभी धर्म पर न चलिए। जो आपके विचारों से सहमत न हों उनको बदनाम कीजिए। पुरानी चाल के जो मौलवी दिखाई दें उनको जनता के सामने कलङ्कित कीजिए। सदाचार की ज़ंजीर को धर्म के विरुद्ध बताकर तोड़ डालिए। समाचारपत्रों में लेख लिखिए और स्वयं ईश्वर से ज्ञान प्राप्त करने का दावा कीजिए। जातीय उन्नति के विषय में भी कुछ करना आवश्यक है, इस विभाग में भी कुछ अवश्य करना चाहिए। बिना लड़कों के चहल-पहल नहीं हो सकती इसलिए वज़ीफ़ा (छात्रवृत्ति) और पुरस्कार का भी कुछ ध्यान रखिए। लड़कों को भेज कर चन्दा जमा कीजिए और भारत का सारा देश चौपट कर डालिए। यदि ये सब बातें आपसे न हो सकें तो मुर्दों के साथ क़ब्र में आराम कीजिए अर्थात् फिर आपका जीवन व्यर्थ है।

उर्दू-काव्य-सम्बन्धी परिभाषा

अज़ल—सृष्टि का पहला दिन।

अबद—सृष्टि का अन्तिम दिन।

अहबाब—मित्रवर्ग। ईरान के सूफ़ियों की परिभाषा में उस पक्ष के लोगों को कहते हैं जो ईश्वर के साथ सखा-भाव से प्रेम करते हैं। इनके आचार-विचार बहुत कुछ वेदान्तिक होते हैं और वास्तव में इनकी उत्पत्ति भी फ़ारस में भारतीय वेदान्त के प्रभाव से हुई है। ये लोग आवागमन में विश्वास करते हैं और शेख़, वाइज़, नासेह इत्यादि को—जिनसे इनका आशय कट्टर मुसलमान मौलवियों से होता है—हँसी उड़ाते हैं। इन लोगों की परिभाषा में गुरु को साक़ी (मद्यपान करानेवाला), मैफ़रोश (मदिरा बेचनेवाला), उसके उपदेशों को मदिरा और सत्संग को मद्यपान की महफ़िल कहते हैं। इनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "मसनवी मौलाना रूम" है जिसको फ़ारसी भाषा का क़ुरान कहते हैं। फ़ारसी के प्रायः सभी बड़े कवियों ने सूफ़ी मत का प्रचार किया है इस कारण फ़ारसी और उर्दू के प्रायः सभी कवि उनका अनुकरण करने में अपना गौरव समझते हैं और अपनी कविता में सूफ़ियाना भावों का वर्णन करके कट्टर मुसलमानों की हँसी उड़ाते हैं। अकबर का यह पद देखिए।

नातजुर्बाकारी से वाइज़ की हैं यह बातें।
इस रङ्ग को क्या जाने पूछो तो कभी पी है॥

आदम—आदि पुरुष। .कुरान में लिखा है कि .खुदा ने आदम को मिट्टी से बनाया और सब फ़रिश्तों (स्वर्गीय दूतों) को आज्ञा दी कि उसको प्रणाम करें। शैतान के अतिरिक्त सबने आज्ञा का पालन किया। इस पर .खुदा ने क्रुद्ध होकर शैतान को स्वर्ग से निकाल दिया; और आदम के रहने के लिए एक रमणीक उपवन दिया जिसका नाम "बाग़ेअदन" था। ज्ञान (गेहूँ) के पेड़ की उपज के अतिरिक्त आदम को इस उपवन के सब फल-फूल खाने का अधिकार था। शैतान ने अवसर पाकर आदम की स्त्री हौवा को बहकाया कि इस वर्जित वृक्ष का फल स्वयं खाओ और अपने पति को खिलाओ। हौवा ने ऐसा ही किया। इस पर शैतान की जीत हुई और .खुदा आदम पर इतना अप्रसन्न हुआ कि उसने आदम और हौवा को बाग़ेअदन से निकाल कर दुनिया में फेंक दिया। अकबर के निम्नलिखित पद में इसी घटना का वर्णन है।

कुछ मज़ा गेहूँ का कुछ हौवा के कहने का खयाल।
आप ही बतलाएँ इस मौक़े प आदम क्या करें॥

आरिफ़—सफ़ी। सिद्ध—ज्ञानी।

आशिक़—प्रेमी। जो ईश्वर के साथ सखाभाव से प्रेम करे। उर्दू और फ़ारसी कवि अपने को आशिक़ और ईश्वर और कभी-कभी गुरु को माशूक़ यार इत्यादि कह कर सम्बोधन करते हैं।

आसमान—आकाश; दैव। उर्दू और फ़ारसी कवियों का भाग्य-विधाता। उर्दू और फ़ारसी कवियों का अधिकांश

अपने भाग्य पर झींकते ही बीतता है इस कारण वे आकाश को सदा निर्दयी अत्याचारी इत्यादि अनेक शब्दों से सम्बोधन करते हैं। और कभी-कभी उसकी हँसी भी उड़ाते हैं।

शायराना दाद अच्छी दी मुझे यह चर्ख़ ने।
तेग़े-अबरू का था आशिक़ ख़ाँबहादुर हो गया॥

इश्क़—प्रेम। यह दो तरह का होता है (१) इश्क़ हक़ीक़ी (वास्तविक तथा ईश-प्रेम) और (२) इश्क़ मज़ाज़ी (देखाऊ अथवा सांसारिक वस्तुओं से प्रेम, जिसको वेदान्त में मोह और मायाजाल कहते हैं)। उर्दू और फ़ारसी-कवि इन दोनों प्रकार के प्रेमों का वर्णन करते हैं।

ईसा—ईसाई-धर्म के प्रधान सञ्चालक; मुसलमानों के एक पैग़म्बर। बाइबिल में लिखा है कि ईसा लोगों को बड़े-बड़े कठिन रोगों से चंगा कर देते—यहाँ तक कि मुर्दों को भी जिला देते—थे। उर्दू और फ़ारसी कवि अपने को प्रेम का रोगी और इस कारण अपने मा.शूक़ को—जिसकी कृपा से उनका रोग दूर हो जाता है—ईसा, मसीहा इत्यादि कह कर पुकारते हैं। मीर का यह पद देखिए—

बाद मरने के मेरी क़ब्र पर आया वह मीर।
याद आई मेरे ईसा को दवा मेरे बाद॥

क़फ़स—पिंजरा (देखो जिन्दाँ)।

क़यामत—प्रलय। मुसलमानों का विश्वास है कि प्रलय का दिन सबसे बड़ा होगा। उस दिन क़बरों में से सब मुर्दे जी उठेंगे और ईश्वर सबका न्याय करेगा। उर्दू-कविता में कभी-कभी यह पद हृदयविदारक और अद्भुत दृश्य के लिए भी आता है।

काबा—ईश्वर का घर; मुसलमानों का मुख्य तीर्थ जो पहले अरब में मूर्तिपूजन का केन्द्र था। हज़रत ख़लील ने इसमें से मूर्तियों को निकाल कर इसका नाम ख़ुदा का घर रक्खा। सूफ़ी लोग अपने को सौन्दर्य की प्रतिमा का पूजक कहते हैं इस कारण उर्दू और फ़ारसी कवि काबे की हँसी उड़ाते हैं। कभी-कभी अपने माशूक़ के घर को भी काबा कहते हैं। अकबर का यह पद देखिए—

दिखलाते हैं बुत जलवये-मस्ताना किसी का।
याँ काबये-मक़सूद है बुतख़ाना किसी का॥

काफ़िर—जो ईश्वर को न माने। सूफ़ी लोग ईश्वर के विषय में यह भाव नहीं रखते जो कट्टर मुसलमान रखते हैं। इस कारण उर्दू और फ़ारसी कवि अपने को काफ़िर कहते हैं। अमीर ख़ुसरू का यह प्रसिद्ध फ़ारसी पद देखिए—

काफ़िरे इश्क़म मुसल्मानी मरा दरकार नेस्त।
हर रगे-मन तार गश्ता हाजते ज़ुन्नार नेस्त॥

(भावार्थ—मैं प्रेम का काफ़िर हूँ, मुझे मुसलमान होने की आवश्यकता नहीं। मेरी प्रत्येक नस तार हो गई है। मुझे जनेऊ पहिनने की आवश्यकता नहीं।) कविता में कभी-कभी माशूक़ को भी काफ़िर कहते हैं।

क़ाफ़—परियों के रहने का पहाड़ जो रूस और एशिया-कोचक की सीमा पर है।

क़ैस—नाम है अरब के प्रसिद्ध प्रेमी मजनूँ का, जो लैला के प्रेम में पागल होकर जङ्गलों में मारा-मारा फिरता था और अन्त में इसी दशा में मर गया। उर्दू और फ़ारसी कवि

अपने को मजनूं से बढ़ कर दिखाने का प्रयत्न करते हैं। अकबर का यह पद देखिए—

> क़ैस का जिक्र मेरे शाने-जुनूं के आगे।
> अगले वक़्तों का कोई बादिया-पैमाँ होगा॥

ख़राबात—हौली; सूफ़ियों की परिभाषा में वह स्थान जहाँ पीरे ख़राबात अर्थात् हौली का मालिक (गुरु) उपदेश देता है।

ख़िज्र—पथ-प्रदर्शक; गुरु; मुसलमानों के एक दीर्घजीवी पैग़म्बर जिनका काम संसार में भूले-भटकों को रास्ता बतलाना है। अकबर का यह पद देखिए—

> कहते हैं राहे-तरक्क़ी में हमारे नौजवाँ।
> ख़िज्र की हाजत नहीं हमको जहाँ तक रेल है॥

गुल—गुलाब का फूल। उर्दू और फ़ारसी कवि अपने माशूक़ को गुल और अपने को बुलबुल कहते हैं। (देखो बुलबुल)

ग़ैर—प्रतिद्वन्द्वी।

चर्ख़—आकाश (देखो आसमान)।

जफ़ा—ज़ुल्म—अत्याचार—और विशेष कर आशिक़ के प्रति माशूक़ का निर्दय व्यवहार। अकबर का यह पद देखिए—

> ऐसे सितम किये कि मेरा क़ल्ब हिल गया।
> और इस तरह कि सीने का हरदाग़ छिल गया॥

जन्नत—स्वर्ग। मुसलमानों का मत है कि जन्नत में लोगों की सेवा के लिए हूरें और अनेक सुख-सम्भोग की सामग्रियाँ मिलती हैं। सूफ़ी लोग अपने माशूक़ के मिलन को स्वर्ग और कभी-कभी स्वर्ग से बढ़ कर आनन्ददायक

समझते हैं और शेख़ इत्यादि के इन विचारों की हँसी उड़ाते हैं। अमीर का यह पद देखिए—

यहाँ हसीनों से है इजतेनाब ज़ाहिद को।
मिली न हूर वहां भी तो दिल्लगी होगी॥

ग़ालिब कहते हैं—

हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन।
दिल के बहलाने को ग़ालिब य ख़्याल अच्छा है॥

ज़ालिम—अत्याचारी। कविता में निर्दयी माशूक़ को कहते हैं। अकबर का यह पद देखिए—

मैंने कहा जो हँस कर ठुकरा के चल न ज़ालिम।
हैरत में आके बोला क्या आप जी रहे हैं॥

ज़िन्दाँ—बन्दीगृह; क़फ़स। उर्दू-कवि कभी-कभी अपने को बन्दी-गृह-रूपी संसार का और कभी विरह की यातनाओं का बन्दी कहता है। आतिश का यह पद देखिए—

निकल ऐ जान तन से ता विसाले-यार हासिल हो।
चमन की सैर है अंजाम बुलबुल की रिहाई का॥

जुनूँ—जुनून। उन्माद।

ज़ुल्फ़—काले और घूँघुरवाले बाल; जिनके लच्छों में सैकड़ों दिल फँसे होते हैं। इनकी लम्बाई बहुधा आशिक़ की विचारशक्ति के बाहर हुआ करती है।

ज़ुल्म—अत्याचार (देखो जफ़ा)।

ज़ुलैख़ा—मिस्र की एक रानी, जो यूसुफ़ पर मोहित हो गई थी (देखो यूसुफ़)।

तसव्वुफ़—सूफ़ियों का मत।

दहन—मुँह। इसकी सुन्दरता इसके तङ्ग अथवा छोटे होने में है, जितना ही छोटा हो उतना ही अधिक सुन्दर होता है। इस कारण उर्दू और फ़ारसी कवियों के माशूक़ का मुँह इतना छोटा हो गया है कि कभी कभी प्रेमी के लिए उसका देखना भी असम्भव हो जाता है। अकबर का यह पद देखिए—

समझ में कुछ नहीं आता तिलिस्मे-हुस्ने-बुताँ।
दहन को समझे थे मालूम वाँ कमर भी न थी॥

(भावार्थ—बुतों के सौन्दर्य का जादू कुछ समझ में नहीं आता। पहले हम यह समझते थे कि उनके मुँह नहीं होता परन्तु बाद को मालूम हुआ कि उनके कमर भी नहीं।) एक और स्थान पर कहते हैं—

इर्शाद जो होता है कि लिख वस्फ़े-दहन तू।
मालूम हुआ आप मुझे तङ्ग करेंगे॥

दुश्मन—प्रतिद्वन्द्वी।

दैर—मन्दिर। सूफ़ियों की परिभाषा में माशूक़ अथवा ईश्वर का निवासस्थान।

दोज़ख़—नरक। शेख़ के नरक में शराबी अर्थात् सूफ़ी को कष्ट नहीं होता। ज़ौक़ का यह पद देखिए—

आग दोज़ख़ की भी हो जायगी पानी पानी।
जब ये आसी अरक़े शर्म से तर जायेंगे॥

(भावार्थ—जब यह पापी शर्म के पानी से भीगे हुए नरक में आयँगे तो नरक की आग भी इनको देखकर पानी पानी अर्थात् लज्जित हो जायगी।)

दोस्त—माशूक; सूफ़ियों की परिभाषा में ईश्वर और कभी कभी गुरु को भी दोस्त कहते हैं।

नासेह—धर्मोपदेशक (देखो वाइज़)।

नेचर—प्रकृति; स्वभाव।

नेटिव—किसी देश का असली रहनेवाला और विशेषकर काला आदमी।

डारविन—नाम है एक अँगरेज़ वैज्ञानिक का जिसने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि मनुष्य जाति की उत्पत्ति बन्दरों से हुई है। अँगरेज़ी में कभी-कभी यह शब्द बन्दर के अर्थ में भी लाया जाता है। उर्दू-कविता में पहले-पहल अकबर ने ही इस शब्द का प्रयोग किया है।

परवाना—पतङ्ग; दीपक का प्रेमी। उर्दू और फ़ारसी में भी हिन्दी की भाँति कवि अपने को पतंग और अपने माशूक को दीपक कहता है।

पीर—बूढ़ा; गुरु।

पीर-ख़राबात—हौली का स्वामी अर्थात् गुरु।

फ़रहाद—एक चीनी चित्रकार जो फ़ारस के बादशाह ख़ुसरू की रानी शीरीं पर मोहित हो गया था। ख़ुसरू ने इससे प्रतिज्ञा की थी कि यदि तुम पहाड़ पर से दूध की नहर खोद कर शीरीं के महल के नीचे लाओगे तो मैं शीरीं को तुम्हें दे दूँगा। जब फ़रहाद नहर खोद कर लाया तो ख़ुसरू ने कहला भेजा कि शीरीं मर गई। यह सुनकर फ़रहाद ने आत्म-हत्या कर ली। जब शीरीं ने यह सुना तो उसने भी आत्महत्या कर ली।

फ़लक—आकाश (देखो आसमान)।

बज़्म—नाच-रङ्ग की सभा।

बरहमन—प्रतिमापूजक; शेख़ का प्रतिद्वन्द्वी और सूफ़ियों का मित्र।

बहिश्त—स्वर्ग (देखो जन्नत)।

बुत—प्रतिमा। उर्दू और फ़ारसी काव्य में सौन्दर्य की प्रतिमा अर्थात् माशूक़ को कहते हैं। यह संस्कृत शब्द बुद्ध का अपभ्रंश है। एक समय में बौद्ध-धर्म फ़ारस, और मध्य और पश्चिमी एशिया के अनेक देशों में इतना प्रचलित था कि उन देशों में स्थान-स्थान पर पूजन के लिए महात्मा बुद्ध की प्रतिमाएँ स्थापित कर दी गई थीं। तुर्किस्तान के प्रधान नगर का नाम बोख़ारा भी बिहार शब्द का अपभ्रंश है। यहाँ बौद्धों का एक बहुत बड़ा बिहार था जिसके खण्डहर अब तक पाये जाते हैं। इसलाम-धर्म की उन्नति के साथ इन मूर्तियों का खण्डन होने लगा। मूर्तियाँ तो टूट गईं परन्तु "उस प्रेम-पथ-प्रदर्शक" का नाम दिलों से न निकला। उर्दू और फ़ारसी काव्य में बुत का अर्थ सौन्दर्य्य की प्रतिमा अथवा माशूक़ लगाया जाता है। और उसके पूजनेवाले को बरहमन, काफ़िर अथवा इसलाम का विरोधी कहते हैं।

बुतख़ाना—मंदिर (देखो दैर)।

बुलबुल—मध्य और पश्चिमी एशिया का एक पक्षी जो बहार के मौसिम में फुलवाड़ियों में और विशेषकर गुलाब के फूल के चारों ओर उड़-उड़ कर गाता है। इस कारण इसको गुलाब का प्रेमी कहते हैं। यह अपने भारतीय नामधारी से भिन्न होता है। क्योंकि जिस पक्षी को भारत में बुलबुल कहते

हैं उसको कभी किसी ने इस प्रकार गाते नहीं देखा। फ़ारसी कवियों के अनुचर उर्दू कवि भी अपने को बुलबुल और अपने माशूक़ को गुल कहते हैं।

मजनूँ—अरब-साहित्य का प्रसिद्ध प्रेमी (देखो क़ैस)।

मर्ग—मृत्यु। माशूक़ के दर्शन से आशिक़ की मृत्यु का लग्गा लगना आरम्भ होता है और कभी उसके मिलने की आशा में हर्षोन्माद के कारण और कभी विरह की पीड़ा में अन्त हो जाता है।

मसीह—देखो ईसा।

महफ़िल—नाच-रंग की सभा (देखो बज़्म)।

महशर—प्रलय (देखो क़यामत)।

माशूक़—प्रियतम। यह दो तरह का होता है। (१) माशूक़ हक़ीक़ी अर्थात् ईश्वर। (२) माशूक़ मजाज़ी अर्थात् सांसारिक प्रियतम। उर्दू और फ़ारसी कवियों का माशूक़ ऊपर से जितना सुकुमार और सुन्दर होता है उतना ही भीतर से कठोर, निर्दयी और अत्याचारी होता है। और आशिक़ के प्रेम का प्रभाव बड़ी कठिनता से पड़ता है।

मेरी तक़रीर का उस बुत प कुछ क़ाबू नहीं चलता।
जहाँ बंदूक़ चलती है वहाँ जादू नहीं चलता॥

मूसा—यहूदियों के पैग़म्बर। पुराने अहदनामे में लिखा है कि ख़ुदा ने तूर पहाड़ पर एक झाड़ी में इनको अग्नि के रूप में दर्शन दिया। इन्होंने मिस्र देश के अहंकारी राजा फरऊन को नष्ट-भ्रष्ट करके अपनी जाति बनी इसराइल को उसके अत्याचारों से मुक्त किया।

मै—मदिरा। सूफ़ियों की भाषा में गुरु के उपदेश और ईश-प्रेम को भी मदिरा कहते हैं। अधिकांश उर्दू और फ़ारसी कवि इसको इसी आशय में लाते हैं। अकबर का यह पद देखिए—

उस मै से नहीं वाकिफ़ दिल जिससे है बेगाना।
मकसूद है उस मै से जो दिल ही में खिंचती है॥

मैख़ाना—हौली (देखो ख़राबात)।

मंसूर—ईरान देश का एक ज्ञानी जिसको अनलहक़ अर्थात् अहं ब्रह्म का ज्ञान हो गया था। उसके अनलहक़ कहने पर मौलवियों ने उसको काफ़िर समझ कर फाँसी दे दी। मंसूर अन्त तक अपने विश्वास पर अटल रहा। यह वास्तव में फ़ारस देश में सूफ़ी मत के प्रधान सञ्चालकों में हुआ है। यह पद देखिए—

चढ़ा मंसूर सूली पर पुकारा इश्कबाज़ों को।
ये उसके दर का ज़ीना है चढ़ आये जिसका जी चाहे॥

अकबर उसकी मृत्यु का यह कारण समझते हैं—

ख़ुदा बनता था मंसूर इसलिए मुश्किल य पेश आई।
न चढ़ता दार पर साबित अगर करता ख़ुदा होना॥

यास—पूर्ण निराशा; जिससे सारी चिन्तायें दूर हो जाती हैं। ग़ालिब का यह पद देखिए—

अगर उमीद न हमसाया हो तो ख़ानये-यास।
बहिश्त है हमें आरामे-जाविदां के लिए॥

(भावार्थ—यदि आशा अपनी पड़ोसिन न हो तो निराशा-रूपी घर हमको सर्वदा के लिए वैकुण्ठ के समान है।)

यार—मित्र; प्रियतम (देखो दोस्त)।

यारान, याराँ, यारों—मित्रवर्ग। यह दो तरह के होते हैं (१) याराने तरीक़—जो प्रेम के मार्ग पर चलते हैं। (देखो अहबाब)। (२) याराने-शरीयत—जो क़ुरान के नियमों का पालन करते हैं।

यूसुफ़—नाम है मुसलमानों के एक पैग़म्बर का। यह कनान देश के रहनेवाले थे और इतने सुन्दर थे कि कहा जाता है कि संसार की तीन चौथाई सुन्दरता इनको मिली थी और बाक़ी एक चौथाई सारे संसार में बँट गई थी। इनके भाइयों ने ईर्ष्या के कारण इनको कुएँ में ढकेल दिया। कुछ व्यापारी, जो उधर से जा रहे थे, इनको निकाल कर मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिए ले गये। मिस्र की रानी ज़ुलैख़ा इन पर मोहित हो गई। उसने इनको मोल लेकर वशीभूत करने के अनेक प्रयत्न किये परन्तु जब हर तरह से हारी तो चिढ़ कर इनको बन्दी-गृह में डाल दिया और बहुत कष्ट दिये। अन्त में मिश्र के राजा के मरने पर इन्होंने ज़ुलैख़ा से विवाह कर लिया और मिस्र के राजा हो गये। इनके पिता याक़ूब को जब यह समाचार मालूम हुआ तो हर्ष के कारण उनकी आँखों में फिर से ज्योति आ गई जो इनके विरह में रोते-रोते जाती रही थी। उर्दू और फ़ारसी कवि अपने माशूक़ को यूसुफ़ भी कहते हैं।

रक़ीब—प्रतिद्वन्द्वी। इसका असली अर्थ पहरेदार है।

लैला—मजनूँ की प्रियतमा (देखो मजनूँ)

वफ़ा—स्वामि-भक्ति; संकल्प पर दृढ़ रहना; प्रतिज्ञा पूरी करना।

वाइज़—नासेह; धर्मोपदेशक—जो अज्ञानवश सूफ़ियों

को सुधारने का प्रयत्न करे। उर्दू और फ़ारसी कवि इसको पाखण्डो और मूर्ख समझ कर स्थान-स्थान पर इसकी हँसी उड़ाते हैं। अकबर का यह पद देखिए—

जो ख़ुदा का हुक्म है ठीक है मुझे तोबा करने में उज्र क्या।
मगर एक बात है वाइजा कि बहार अब तो क़रीब है॥

सनम—मूर्ति अथवा सौन्दर्य्य की प्रतिमा। यह अरबी भाषा का शब्द है (देखो बुत)।

साक़ी—शराब पिलानेवाला; गुरु; माशूक़। सूफ़ी लोग कभी-कभी अपने गुरु को भी माशूक़ कहते हैं।

सितम—ज़ुल्म; अत्याचार (देखो जफ़ा)।

शमा—मोमबत्ती; दीपक (देखो परवाना)।

शरा, शरीयत—क़ुरान के नियम।

शीरीं—(शब्दार्थ) मीठा। नाम है ईरान के बादशाह ख़ुसरू की रानी का। (देखो फ़रहाद)।

शेख़—कट्टर मुसलमान। बरहमन और सूफ़ियों का विरोधी। पुरानी चाल का मौलवी। अकबर का यह पद देखिए—

शेख़जी घर से न निकले और मुझसे कह दिया।
आप बी० ए० पास हैं और बन्दा बीबी पास है॥

हौवा—आदम की स्त्री (देखो आदम)।

इति शुभम्।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग की चुनी हुई हिन्दी-पुस्तकें।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण—सचित्र और सजिल्द। पृष्ठ-संख्या प्रत्येक खण्ड में लगभग ६००। दो खण्डों में ग्रन्थ समाप्त। मूल्य प्रत्येक खण्ड ५) पाँच रुपये।

रामचरितमानस—(सटीक)—क्षेपक-रहित। सजिल्द। अनेक प्रामाणिक प्रतियों से मिलान करके इसका पाठ शुद्ध किया गया है। मूल्य ६) छः रुपये।

मानस-सूक्तावली—सजिल्द। इसमें गो० तुलसीदासजी की सूक्तियों का संग्रह रामचरितमानस से बड़ी चतुराई से किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

कविता-कलाप—सचित्र और सजिल्द। इसमें हिन्दी के पाँच लब्धप्रतिष्ठ कवियों की कविता का संग्रह है। मूल्य ३) तीन रुपये।

हिन्दी महाभारत—सजिल्द और सचित्र। महाभारत का पूरा उपाख्यान सीधी-सादी भाषा में है। पृष्ठ-संख्या ५०० से ऊपर। मूल्य ४) चार रुपये।

रघुवंश—सचित्र और सजिल्द। महाकवि कालिदास के 'रघुवंश' का गद्यानुवाद। पृष्ठ-संख्या ३००। मूल्य ३) तीन रुपये।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,
प्रयाग।

मौलाना हाली और उनका काव्य ।

उर्दू-काव्य-जगत् में स्वर्गीय मौलाना अलताफ़हुसेन "हाली" का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। आपने उर्दू-कविता के रङ्ग-ढङ्ग में बहुत कुछ परिवर्तन कर दिया है। आप उच्च कोटि के कवि थे। भारत को—विशेषतः मुसलिम-संसार को—सचेत करने का सुयश आपकी कविता को अधिक अंशों में प्राप्त है। इस पुस्तक में उन्हीं महाकवि हाली का जीवन-चरित और उनकी कविता का संक्षिप्त संग्रह है। महाकवि हाली का जिन्हें थोड़ा भी परिचय है उनसे इसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है। पुस्तक अपने ढँग की अनोखी है। सजिल्द प्रति का मूल्य १) एक रुपया।